हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

अमन की ओर गाजा

गाजा में अमन-चैन की ओर जो सुखद कदम बढ़े हैं, उनका स्वागत होना चाहिए। फलस्तीनी उग्रवादी समूह हमास ने जीवित बचे 20 इजरायली बंधकों को रिहा कर दिया और इसके बाद इजरायल में जो खुशी का माहौल है, उसे महसूस किया जा सकता है। 738 दिन बाद जो बंधक रिहा हुए हैं, वे अमन-चैन के प्रयासों की सफलता के जीवंत उदाहरण हैं। जो बंधक हमास की कैद से लौट न पाए या जिनकी मृत्यु हो गई, उन्हें भूलना मुश्किल है, पर भुलाना पड़ेगा। ठीक ऐसे ही, गाजा में जो निरपराध मारे गए हैं, उनके प्रति भी पूरी सहानुभूति की सार्थकता तब है, जब गाजा में फिर किसी निरपराध की मौत की आशंकाओं को हर मुमकिन कोशिशों से टाला जाए। इजरायल को यहां ज्यादा उदारता का परिचय देना होगा, क्योंकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह बहुत ताकतवर है। हमास को भी हिंसा से बचना चाहिए। द्वि-राष्ट्रीय व्यवस्था को जमीन पर ठीक से साकार करना हमास का लक्ष्य होना चाहिए। हमास को अपनी छवि सुधारने की चिंता करनी चाहिए, अगर उस पर यकीन किया गया है, तो उसे खरा उतरना होगा। गाजा में किसी भी सूरत में हिंसा की वापसी नहीं होनी चाहिए।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इजरायल को एक तरह से पाबंद करने की कोशिश की है कि युद्ध के मैदान में उसे और कुछ हासिल नहीं करना है, उसे अब मध्य-पूर्व में शांति के लिए काम करना होगा। इजरायल वाकई शांति के लिए काम कर सकता है। साथ ही, पूरे पश्चिम एशिया के मानव विकास में सहायक हो सकता है। इजरायली सत्ता प्रतिष्ठान को हिंसा से संतोष करना चाहिए, लेकिन इजरायल से दुश्मनी रखने वाले संगठनों को भी सचेत रहना चाहिए। इजरायल की नीति स्पष्ट है, वह अपनी रक्षा के लिए चरम आक्रामकता का परिचय देता रहा है। हमें यह भी उल्लेख करना चाहिए कि 7 अक्तूबर, 2023 को हमास ने जैसी हिंसा की थी, वह अक्षम्य थी। फिर भी इजरायल करीब 2,000 फलस्तीनियों को रिहा करेगा, तो इसका मतलब है कि वह भविष्य की ओर देख रहा है। गाजा को भी अपना भविष्य देखना चाहिए। वहां कब तक लोग मारे जाते रहेंगे? खैर, संघर्ष-विराम का फायदा यह हो रहा है कि तमाम तरह के अभावों से ग्रस्त गाजा तक अब बड़े पैमाने पर मदद पहुंचने की शुरुआत हो गई है। खासकर मिस्र की ओर से जरूरी सामान की बड़े पैमाने पर आपूर्ति हो रही है। इससे गाजा में युद्धग्रस्त लोग वाकई राहत की सांस लेंगे और अपनी जिंदगी को फिर से खड़ा करेंगे।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने फलस्तीनियों से आतंकवाद और हिंसा की राह हमेशा के लिए छोड़ देने का आग्रह किया है। ऐसे ही आग्रह की जरूरत दुनिया के अनेक देशों में है।

गौर करने की बात है, इजरायली संसद को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ट्रंप ने गाजा के पुनर्निर्माण में पूरी मदद का वादा किया है। साथ ही, फलस्तीनियों से आतंकवाद और हिंसा के रास्ते को हमेशा के लिए छोड़ देने का आग्रह किया है। ऐसे ही आग्रह की जरूरत दुनिया के अनेक देशों में है। अनेक देश हैं, जो आतंकवाद को पालते-पोषते हैं। आतंकवाद के खिलाफ ईमानदारी केवल गाजा में नहीं, बल्कि बाकी दुनिया में भी बहाल होनी चाहिए। जो भी देश आतंकवाद का किसी भी तरह से परोक्ष या प्रत्यक्ष समर्थन करते हैं, उन्हें खुद में सुधार लाना चाहिए। दुनिया में अनेक देश हैं, जिनके पास हमास की निंदा के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं और जो इजरायल को ही आतंकवाद का समर्थक मानते रहे हैं। अब सबसे बेहतर तो यही होगा कि इजरायल व फलस्तीन, दोनों ही एक-दूसरे का आदर करें। एक-दूसरे को मिटा देने के हैवानियत भरे ख्वाब से हमेशा के लिए पीछा छुड़ा लें।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 14 अक्तूबर, 1950

ट्रमन मेकार्थर वार्ता

अमरीका के राष्ट्रपति श्री ट्रमन जनरल मेकार्थर से मिलने के लिए जा रहे हैं। इस मुलाकात के लिए उन्होंने छः सात हजार मील की यात्रा करने का निश्चय किया है। मुलाकात ठीक किस जगह होगी, यह अभी गुप्त रखा गया है। सुरक्षा के ख्याल से ऐसा करना आवश्यक समझा गया होगा। किन्तु अनुमान यह किया जा रहा है कि सम्भवतः यह मुलाकात वेक द्वीप के आस-पास होगी। दोनों मुलाकातियों की पार्टी काफी लम्बी-चौड़ी होगी और चूंकि वेक द्वीप पर उसके लिए आवश्यक सुविधायें सुलभ नहीं हैं, इसलिए सम्भवतः अमरीकी युद्धपोत मिस्सूरी पर यह मुलाकात हो। वह 45,000 टन का युद्धपोत है और इसी पर जनरल मेकार्थर ने टोकियो की खाड़ी में जापान के आत्मसमर्पण पत्रक पर हस्ताक्षर किये थे। ट्रमन-मेकार्थर वार्ता को काफी महत्व दिया गया है। ट्रमन का मेकार्थर से इस प्रकार मिलने के लिए जाना असाधारण घटना है। यह मुलाकात द्वितीय महायुद्ध काल की स्टालिन-चर्चिल-रूजवेल्ट मुलाकातों की याद दिलाती है।

इस समय कोरिया युद्ध के कारण प्रशान्त क्षेत्र की समस्याओं ने असाधारण महत्व धारण कर लिया है। अमरीका अटलांटिक और प्रशान्त दोनों ही क्षेत्रों की समस्याओं में न्यूनाधिक दिलचस्पी रखता है। किन्तु घटनाओं का दबाव जिस ओर अधिक बढ़ जाता है, उसी ओर उसको अधिक ध्यान देना पड़ता है। प्रशांत क्षेत्र में परिस्थिति काफी विस्फोटक बन गई है। कोरिया में जब युद्ध शुरू हुआ और अमरीका ने उसमें हस्तक्षेप करने का निर्णय किया, तो विश्व-युद्ध भड़क उठने का खतरा था। वह खतरा अभी बिल्कुल टल नहीं गया है। संयुक्त राष्ट्रीय सेनायें उत्तरी कोरिया में आगे बढ़ रही हैं, और यह प्रश्न तय करने का समय है कि उन्हें किस हद तक आगे बढ़ते जाना चाहिए। उत्तरी कोरिया में आगे चलकर चीन और रूस की सीमायें मिलती हैं। रूस-कोरिया की सीमा तो करीब 20 ही मील लम्बी है, किन्तु चीन-कोरिया की सीमा करीब पांच सौ मील की लम्बाई में फैली हुई है। चीन कोरिया-युद्ध के दरमियान एक से अधिक बार यह शिकायत कर चुका है कि अमरीकी वायुयानों ने चीन की सीमा पर बम गिराकर उसकी प्रादेशिकता को खण्डित किया है। जब थल-फौजें चीन और रूस की सीमाओं पर पहुंच जायेंगी, तब प्रत्यक्ष संघर्ष की सम्भावना और भी बढ़ जायेगी।

तालिबान सरकार को मान्यता देनी चाहिए

हैप्पीमन जैकब | विजिटिंग प्रोफेसर, शिव नाडर यूनिवर्सिटी

यहां स्कैन करें

यदि नई दिल्ली अन्य देशों द्वारा तालिबान सरकार को मान्यता दिए जाने के बाद मुहर लगाती है, तो इससे उसके कदम का कूटनीतिक महत्व कम हो जाएगा।

अगस्त 2021 में तालिबान द्वारा काबुल में सत्ता संभालने के बाद पहली बार भारत ने उसके विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी की मेजबानी की है। अफगानिस्तान की अधिकृत सरकार के तौर पर तालिबान को मान्यता दिए बगैर उससे बातचीत की नई दिल्ली की नीति थोड़ी धीमी, मगर स्थिरता लिए रही है। वास्तव में, रूस के अलावा अब तक किसी बड़े गैर-इस्लामी देश ने तालिबान सरकार को मान्यता नहीं दी है और रूस ने भी हाल ही में यह कदम उठाया है।

यूं तो चार साल पहले काबुल की सत्ता में आने के पहले से भारत तालिबान से संवाद करता रहा है, मगर मुत्ताकी की भारत यात्रा के दौरान उन्हें आधिकारिक तौर पर 'अफगानिस्तान का विदेश मंत्री' बताकर नई दिल्ली ने संकेत दे दिया है कि वह तालिबान हुकूमत को मान्यता देने के करीब है। अगर नई दिल्ली मुत्ताकी को विदेश मंत्री कहने और उसके अनुरूप प्रोटोकॉल देने को राजी है, तो फिर उनकी हुकूमत को आधिकारिक सरकार की मान्यता क्यों नहीं दी जानी चाहिए? समय आ गया है कि भारत अफगानिस्तान की तालिबान सरकार को मान्यता दे। इसके नुकसान बहुत कम और रणनीतिक लाभ अधिक हैं। मेरा मानना है कि चार वजहों से नई दिल्ली को अविलंब यह मान्यता देने पर विचार करना चाहिए। लेकिन उससे पहले, इस कदम से जुड़ी कुछ आपत्तियों पर संक्षेप में चर्चा जरूरी है।

तालिबान को राजनयिक मान्यता देने के विरुद्ध सबसे तीखी आपत्ति एक नैतिक तर्क से उपजी है। तर्क यह है कि भारत को एक ऐसे शासन को मान्यता नहीं देनी चाहिए, जो अनिष्टकारी मूल्यों का समर्थन करता हो और अपनी आधी आबादी के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार करता हो। यह तर्क अपनी जगह सही है। मगर इसे स्वीकार करते हुए हमें यह ध्यान रखना होगा कि न तो कोई सरकार नैतिक रूप से स्वीकार्य होती है (सिर्फ इसलिए कि वह परिष्कृत रूप में अत्याचार करती है), और न ही अस्वीकार्य, क्योंकि नैतिक मूल्यों वाली किसी व्यवस्था को मान्यता देना उसके मूल्यों या उसकी खामियों का समर्थन करना नहीं है। विश्व राजनीति इससे कहीं ज्यादा जटिल है। हमारा निजी चुनाव तय नहीं कर सकता कि कोई देश कैसे नीतिगत फैसले ले।

दूसरी आपत्ति यह है कि तालिबान को वैध शासक के रूप में मान्यता देने का अर्थ जाने-अनजाने इस क्षेत्र में शुद्धतावाद के उदय और घृणित मूल्यों को मजबूत करना होगा। मुझे लगता है, सच इसके ठीक विपरीत है। तालिबान को मान्यता देकर उन्हें मुख्यधारा में लाना, उन्हें बेहतर व्यवहार के लिए तैयार करने का एक तरीका हो सकता है। गौर कीजिए। साल 2025 के तालिबान वही तालिबान नहीं हैं, जो वे 1996 में थे। वे अब थोड़े दुनियादार, कुछ-कुछ उदार और अपने आस-पास की दुनिया से तालमेल बिठाने के आधुनिक तरीकों के प्रति अधिक खुले बन गए हैं। लैंगिक आधार पर भेदभाव के लिए तीखी आलोचना के बाद तालिबान ने भारतीय महिला पत्रकारों को बाद की प्रेस कॉन्फ्रेंस में बुलाकर अपनी गलती सुधारी। कभी-कभी बदलाव सीधे बहिष्कार के बजाय संपर्क, सामाजीकरण और दबाव से भी आता है। भले ही आप असहमत हों, मगर अपने पड़ोस के किसी शासन को सिर्फ इसलिए त्याग देना कि आप उसकी आस्था और परंपराओं से सहमत नहीं हैं, एक गलत शासन-कला है।

तीसरी आपत्ति यह की जाती है कि तालिबान के साथ गलबहियां करने से भारत-पाकिस्तान संबंध और ज्यादा खराब हो सकते हैं और यह भारत को अफगानिस्तान के अंदरूनी संघर्षों में उलझा सकता है। वास्तविकता यह है कि भारत-पाकिस्तान संबंध पहले ही अपने निम्नतम स्तर पर हैं और काबुल के साथ बातचीत से इसमें कोई महत्वपूर्ण बदलाव आने की संभावना नहीं है।

अब मैं उन चार वजहों को यहां रखना चाहता हूं कि भारत को तालिबान सरकार को मान्यता क्यों देनी चाहिए! सबसे पहली तो यही कि तालिबान ने आम तौर पर भारत के प्रति सकारात्मक रुख बनाए रखा, सिवाय आईसी814 अपहरण के, जो तालिबान से कहीं ज्यादा पाकिस्तानी आईएसआई की कारस्तानी थी। अगस्त 2021 में काबुल में सत्ता संभालने के बाद से तालिबान ने भारत के साथ अपने संबंध सुधारने के प्रयास किए हैं, जिसमें उसका यह रुख भी शामिल है कि कश्मीर भारत और पाकिस्तान के बीच एक द्विपक्षीय मामला है।

दूसरा कारण, भले ही अब तक बड़े देशों में केवल रूस ने तालिबान सरकार को मान्यता दी है, लेकिन तालिबान पर पश्चिमी दबाव के कम होने और स्थानीय प्रतिरोध में कमी को देखते हुए अब यह केवल समय की बात रह गई है कि अन्य देश कब रूस की राह पकड़ें। यदि नई दिल्ली अन्य देशों द्वारा तालिबान सरकार को मान्यता दिए जाने के बाद उस पर मुहर लगाती है, तो इससे उसके इस कदम का कूटनीतिक महत्व कम हो जाएगा। मगर इसके उलट, शीघ्र मान्यता भारत को रणनीतिक रूप से अग्रणी पंक्ति में ला देगी। इससे अफगानिस्तान के भविष्य को आकार देने में वह अहम खिलाड़ी बन सकता है।

तीसरी वजह, तालिबानी नेतृत्व वाले काबुल से घनिष्ठ रणनीतिक साझेदारी, इस क्षेत्र में भारत का महत्व कम करने की चीनी-पाकिस्तानी योजनाओं से निपटने में उपयोगी रणनीति साबित हो सकती है और यह काबुल के साथ बीजिंग की बढ़ती नजदीकियों को भी संतुलित करने में काम आएगी।

मुत्ताकी की यात्रा के दौरान विदेश मंत्री एस जयशंकर द्वारा 'अफगानिस्तान की संप्रभुता, अखंडता और स्वतंत्रता के प्रति भारत की पूर्ण प्रतिबद्धता' का इजहार मुख्यतः पाकिस्तान-लक्षित प्रतीत होता है। मगर इससे पता चलता है कि नई दिल्ली इस इलाके में पाकिस्तान के प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए काबुल में बैठी सरकार के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने के रणनीतिक मूल्य को पहचानती है। इस पर अब गोल-मोल बातें करने का कोई मतलब नहीं है।

और आखिरी वजह, तालिबान हुक्मरां अंतरराष्ट्रीय मान्यता और वैधता के लिए व्यग्र हैं। ऐसे में, भारत से राजनयिक मान्यता उनके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होगी। भारत के लिए यह मान्यता काबुल में राजनीतिक सद्भावना की नींव मजबूत करने और उसके साथ रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा देने में मदद कर सकती है। तेजी से बदलते क्षेत्रीय परिदृश्य में नई दिल्ली अपने इस एक कदम से मूल्यवान सद्भावना, रणनीतिक साझेदारी और मध्य एशिया के द्वार पर अपनी मैत्रीपूर्ण उपस्थिति वाला रुतबा हासिल कर सकता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

कर्नाटक में सिद्धारमैया क्या शिवकुमार के लिए पद छोड़ेंगे

दक्षिण एक्सप्रेस

यहां स्कैन करें

एस. श्रीनिवासन | वरिष्ठ पत्रकार

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया एक माह के बाद अपने कार्यकाल के 30 महीने पूरे कर लेंगे। लिहाजा, एक बार फिर इस बात को लेकर अटकलें तेज हैं कि क्या मुख्यमंत्री अपने उप-मुख्यमंत्री और नापसंदीदा सहयोगी डी के शिवकुमार के लिए पद छोड़ेंगे? दरअसल, मई 2023 में जब सिद्धारमैया ने चुनावों में भाजपा को हराकर मुख्यमंत्री पद हासिल किया था, तब शिवकुमार समर्थकों ने दावा किया था कि कार्यकाल की मध्यावधि में सिद्धारमैया पद से हट जाएंगे, क्योंकि चुनावी जीत हासिल करने में शिवकुमार की भी बराबर की भूमिका थी।

बीते तकरीबन ढाई साल से सिद्धारमैया एक ऐसी सरकार का नेतृत्व कर रहे हैं, जो एक के बाद दूसरे संकटों से जूझ रही है। उनके शुरुआती कुछ महीने चुनावी अभियान के दौरान दी गई 'पांच गारंटियों' को पूरा करने के लिए धन जुटाने में खर्च हुए। हाल ही में, जब कर्नाटक को प्रतिव्यक्ति आय के मामले में नंबर एक राज्य का दर्जा दिया गया, तब मुख्यमंत्री ने इस सफलता का श्रेय 'पांच गारंटियों' को ही दिया। उनका दावा था कि इन योजनाओं की बदौलत एक लाख करोड़ रुपये सीधे लोगों के हाथों में दिए गए, जिससे उनकी क्रय शक्ति बढ़ी और अर्थव्यवस्था को गति मिली, इस तरह प्रतिव्यक्ति आय में इजाफा हुआ।

कांग्रेस आलाकमान पर अब नजरें हैं। उसे पिछड़ा कार्ड खेलने के लिए मुख्यमंत्री की जरूरत है, तो धन जुटाने के लिए उप-मुख्यमंत्री की।

हां, यह अलग बात है कि कोई भी सही सोच वाला अर्थशास्त्री इस सरलीकरण से सहमत नहीं होगा। जरूरतमंदों को सीधे नकद देने से गरीबी कम हो सकती है, पर सिर्फ इसी से अर्थव्यवस्था को गति नहीं मिल सकती। इसके लिए बुनियादी ढांचे और उद्योग में निजी व सार्वजनिक, दोनों तरह के निवेश की दरकार होती है। बहरहाल, राजनेता अपने-अपने हिसाब से तर्क गढ़ने को स्वतंत्र होते हैं, जैसे शिवकुमार के समर्थक बेंगलुरु में तत्काल बदलाव की अटकलों को जबर्दस्त हवा दे रहे हैं। बेशक, बिना आग के धुआं नहीं उठ सकता, पर यह स्वयं शिवकुमार हैं, जो इस आग को हवा देने का काम कर रहे हैं। वह किसी तरह के नेतृत्व परिवर्तन से इनकार करते हैं, पर पत्रकारों के सवालों के जवाब देते हुए रहस्यमय अंदाज में कहते हैं, 'हाईकमान' ही ऐसा कोई फैसला लेगा। जबकि, कांग्रेस हाईकमान ने आधिकारिक रूप से ऐसी खबरों की कभी पुष्टि नहीं की है।

यहां कोई चाहे, तो कर्नाटक को सुर्खियों में बनाए रखने का श्रेय शिवकुमार को दे सकता है, क्योंकि वह एक के बाद दूसरे विवाद में कूदते रहे हैं। नवीनतम मामला कर्नाटक प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के फैसले को नकारने का है, जिसमें *बिग बॉस कन्नड़ सीजन 12* के घर जॉलीवुड स्टूडियो को यह कहते हुए सील कर दिया गया कि इसमें नियमों का उल्लंघन किया गया है। मगर शिवकुमार इसे शुरू करने की लड़ाई में शामिल हो गए। अतीत में भी कई ऐसे मामले रहे हैं, जब उन्होंने दूसरों के फैसलों को दरकिनार करते हुए अलग रुख अपनाया, हालांकि सांविधानिक रूप से किसी उप-मुख्यमंत्री को कोई अतिरिक्त शक्तियां नहीं दी गई हैं। आरसीबी की जीत के जश्न में दखलंदाजी करने, पीडब्ल्यूडी मंत्री सतीश जारकीहोली के साथ छद्म युद्ध, बेंगलुरु में गड्ढों की समस्या जैसे तमाम मसले इसके प्रमाण हैं। हालांकि, वह बेशक मुख्यमंत्री के लिए परेशानी खड़ी करते रहे हैं, पर सिद्धारमैया के समर्थक भी उनको निशाने पर लेते रहे हैं और दो पदों (उप-मुख्यमंत्री के साथ-साथ राज्य पीसीसी प्रमुख) पर रहने के कारण उनकी आलोचना करते रहे हैं।

बहरहाल, दोनों गुटों के एक-दूसरे से उलझे रहने से राज्य की शासन-व्यवस्था चरमरा गई है। बेंगलुरु में भगदड़, यातायात की खराब स्थिति और अन्य कई मुद्दों पर तत्काल ध्यान दिए जाने की जरूरत है, पर ऐसा नहीं हो रहा। जहां तक विशुद्ध राजनीति का सवाल है, मुख्यमंत्री तमाम विवादों से बचने में कामयाब रहे हैं। उन्होंने पिछड़े समुदायों, दलितों, अल्पसंख्यकों व अपनी मंत्रिमंडल पर पकड़ मजबूत बना ली है। दूसरी ओर, शिवकुमार, मुख्यमंत्री के लिए परेशानी का सबब बने रहने के बावजूद, नौकरशाही को अपने पक्ष में रखने में कामयाब रहे हैं। ऐसे में, नजरें अब आलाकमान पर हैं। उसे पिछड़ा कार्ड खेलने के लिए मुख्यमंत्री की जरूरत है, तो धन जुटाने के लिए उप-मुख्यमंत्री की। देखना होगा कि वह इस दुविधा से कैसे बाहर निकलता है?

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

विश्वास से चलने वाला मन

क्या आप सब एक साथ हैं? क्या आप में एकता है? नहीं! आप एक नहीं हैं। आप अनेक छोटे-छोटे दलों, छोटी-छोटी जातियों में बंटे हुए हैं और आप इन असंख्य विभाजनों को जानते हैं। पूर्व हो या पश्चिम, प्रक्रिया इसकी सारे विश्व में एक-सी ही है। ईसाई ईसाई को मारता है, मुस्लिम मुस्लिम को मारता है और हिंदू हिंदू को। छोटी-छोटी बातों के लिए एक-दूसरे की हत्या करता है, लोगों को शिविरों में धकेलता है; आप जानते ही हैं युद्ध की सारी भयावहता को। अतः विश्वास लोगों को एक नहीं करता। यह बात बिल्कुल साफ है। और यदि यह स्पष्ट है, यदि यह सत्य है, और आप इसे देख पाते हैं, तो इस बारे में कुछ करना होगा।

कठिनाई यह है कि हममें से अधिकांश इस बात को देखते ही नहीं, क्योंकि हम उस आंतरिक असुरक्षा, अपने भीतर मौजूद अकेलेपन का सामना ही नहीं कर पाते। हमें कोई न कोई सहारा चाहिए- राज्य का, जाति का, राष्ट्रीयता का, महात्मा का, उद्धारक का या कुछ और। और जब हम इन सबकी भ्रामकता को देख लेते हैं, तो चाहे एक पल के लिए ही सही, हमारा मन इस बात की सच्चाई को देख पाता है; हालांकि जब यह उसकी क्षमता से परे हो जाता है, तब पूर्वावस्था में लौट आता है। पर अस्थायी रूप से देखना भी पर्याप्त है; यदि आप इसे पल भर के लिए भी देख सकें, तो काफी है। क्योंकि तब आप एक असाधारण बात होते हुए देखेंगे। अचेतन क्रियाशील रहेगा, भले ही चेतन मन समझना न चाह रहा हो। यह कोई समय की निरंतरता वाला पल नहीं है, बल्कि यही पल सब कुछ है, और चेतन मन के प्रतिरोध के बावजूद यह अपनी निष्पत्ति, अपने परिणाम पा लेगा।

अतः हमारा प्रश्न है, क्या मन ज्ञान और विश्वास से ही नहीं बना है? क्या मन का लोप हो सकता है? यही समस्या है। जैसा कि हम जानते हैं, मन के पीछे विश्वास है, लालसा है, सुरक्षित होने की कामना है, ज्ञान है, शक्ति का संचय है। इसकी समस्त शक्ति और श्रेष्ठता के बावजूद अगर आप स्वतंत्र रूप से न सोच पाएं, तो विश्व में शांति नहीं हो सकती। आप शांति की केवल बात कर सकते हैं, राजनीतिक दल संगठित कर सकते हैं, परंतु शांति पा नहीं सकते, क्योंकि अंतर्विरोध, पृथकता, अलगाव का आचार तो मन ही है।

विश्वास (आस्था) लोगों को एक नहीं करता। यह बात बिल्कुल साफ है। और यदि यह स्पष्ट है, यदि यह सत्य है, और आप इसे देख पाते हैं, तो फिर इस बारे में कुछ करना होगा।

एक सच्चा जिज्ञासु ऐसा नहीं कर सकता कि अपने को अलग-थलग कर ले और फिर भातृत्व व शांति की दुहाई देता रहे। तब तो यह राजनीतिक या धार्मिक खिलवाड़ भर होगा। यदि कोई व्यक्ति इस बारे में वाकई उत्साह से भरा है, कुछ खोजना चाहता है, तो उसे ज्ञान और विश्वास की समस्या का सामना करना होगा। उसे इसकी तह में जाना होगा। उसे सुरक्षित होने की, निश्चित होने की इच्छा की पूरी प्रक्रिया का अन्वेषण करना पड़ेगा।

जे कृष्णमूर्ति

द्रौपदी मुर्मु | राष्ट्रपति, भारत

आपकी शिक्षा में देश और समाज का भी योगदान है। यह समाज और देश का आप पर ऋण है। समाज की सेवा करके आप यह ऋण चुका सकते हैं। शिक्षा को स्थानीय संदर्भों से जोड़कर आप अपनी शिक्षा का व्यावहारिक उपयोग कर सकते हैं।

ममता बनर्जी ने आखिर गलत क्या कहा

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने देर रात छात्राओं को बाहर न निकलने को कहा, जो बिल्कुल सही है। हर मां अपनी बेटियों को यही सिखाती है कि वे देर रात घर से बाहर न निकलें। हमेशा से यह कहा जाता रहा है कि अच्छे घर की लड़कियां देर रात बाहर नहीं जातीं। *बागबान* फिल्म को याद कीजिए, जिसमें किरदार निभाते हुए हेमा मालिनी कहती हैं कि लड़कियों के लिए जमाना कभी नहीं बदला। हम चाहे लाख विकास की और नई सोच की बातें कर लें, पर वास्तविकता यही है कि लड़कियों के लिए लोगों की सोच को बदल पाना कठिन है और उतना ही मुश्किल है आज के जमाने में इसे स्वीकार करना। निर्भया कांड भी देर रात की ही घटना थी। बच्चे अगर घर में रहते हैं, तो माता-पिता की बातों को मानते हैं और रात में बाहर निकलने से बचते हैं, लेकिन हॉस्टल में रहने वाले बच्चे कहीं-न-कहीं उन्मुक्त हो जाते हैं और उनके मन में 'आजादी' का ख्याल आता ही है, जिसके कारण ऐसी घटनाओं के घटने की आशंका बढ़ जाती है। मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि अगर किसी लड़की को जरूरी काम है, तो उसे बाहर नहीं निकलना चाहिए। वह निश्चय ही बाहर निकले, लेकिन अनावश्यक निकलने से बचे। इससे इस तरह के अपराध कम हो सकते हैं, क्योंकि आपराधिक तत्व अमूमन रात में ही निकलते हैं।

शैलबाला कुमारी, गृहिणी

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आखिर गलत क्या कहा? क्या हॉस्टल में रहने वाली छात्राओं को छात्रावास के नियमों का पालन नहीं करना चाहिए? क्या उनको बेमतलब देर रात बाहर निकलना चाहिए? निस्संदेह, सुरक्षा राज्य का मामला है और हर नागरिक को सुरक्षित रखना उसकी जिम्मेदारी, लेकिन नागरिकों को भी अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। यह नागरिकों का मौलिक अधिकार है कि वे जहां चाहें, वहां जा सकते हैं, लेकिन हमारे देश में इतने पुलिसकर्मी नहीं हैं कि वे हर व्यक्ति की आवाजाही पर नजर रख सकें। ऐसे में, मख्यमंत्री का कहना अनुचित नहीं, क्योंकि सुरक्षा व्यवस्था की भी अपनी सीमा है। आखिर पुलिस अधिकारी हर घर के बाहर पहरा तो नहीं ही दे सकते। इसलिए, इसमें विवाद के बीज खोजने वाले वास्तव में जमीनी हकीकत से अनजान हैं। वे नहीं जानते कि भारत में सभी सद्पुरुष नहीं हैं। यहां ऐसे लोगों की भी कमी नहीं, जो आपराधिक मानसिकता के हैं। जाहिर है, इन लोगों से बचने का एक तरीका यही है कि हम खुद का ख्याल रखें। ममता बनर्जी यही कहना चाह रही थीं।

अंकिता, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

ममता का बयान

रात में क्यों न बाहर निकलें लड़कियां

दुर्गापुर गैंगरेप जैसी अमानवीय घटना ने पूरे देश को हिला दिया, पर उससे भी अधिक निराशाजनक रहा पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का बयान। उन्होंने कहा कि लड़कियों को रात में बाहर नहीं जाना चाहिए। यह बयान न केवल असंवेदनशील प्रतीत होता है, बल्कि समाज में एक गलत संदेश भी देता है- जैसे कि अपराध रोकने की जिम्मेदारी महिलाओं पर ही हो। जब किसी लड़की के साथ अपराध होता है, तब प्रश्न उठना चाहिए अपराधियों की मानसिकता और कानून-व्यवस्था पर, न कि पीड़िता की स्वतंत्रता पर। एक जन-प्रतिनिधि से अपेक्षा होती है कि वह ऐसी घड़ी में पीड़िता और महिलाओं को सुरक्षा और न्याय का भरोसा दिलाए, न कि उन्हें डर या बंदिश का संदेश दे। महिलाओं की सुरक्षा का समाधान 'रात में बाहर न निकलने' में नहीं, बल्कि 'अपराधियों को सख्त सजा देने' और 'कानून व्यवस्था मजबूत करने' में है। इसलिए ममता बनर्जी के बयान को संवेदना और जवाबदेही, दोनों स्तरों पर, बेहद दुर्भाग्यपूर्ण कहा जा सकता है। यह विकृत मानसिकता की निशानी है।

पूनम सिंह भदौरिया, टिप्पणीकार

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा मेडिकल छात्रा के साथ कथित सामूहिक बलात्कार के बाद यह सलाह देना कि छात्राएं रात में घर से बाहर न निकलें, निंदनीय है और राजनीतिक पतन की पराकाष्ठा को दर्शाती है। उनकी टिप्पणी तृणमूल कांग्रेस सरकार के 'विफल प्रशासन' और 'नैतिक रूप से खोखले नेतृत्व' को दर्शाती है। बलात्कार पीड़िता को न्याय दिलाने के बजाय पश्चिम बंगाल सरकार बेशर्मी से महिलाओं की स्वतंत्रता और अधिकारों पर सवाल उठा रही है। एक राज्य के मुख्यमंत्री से अपेक्षा की जाती है कि वह महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान की गारंटी दे, न कि उनकी स्वतंत्रता पर अत्याचारी प्रतिबंध लगाए। आज हालात ये हैं कि बंगाल में सत्ता में बैठे लोगों द्वारा संरक्षित अपराधी खुलेआम घूमते हैं, जबकि न्याय की मांग करने वाले पीड़ितों की आवाज को बेरहमी से दबा दिया जाता है। एक निजी मेडिकल कॉलेज की द्वितीय वर्ष की छात्रा के साथ परिसर के बाहर कथित तौर पर तब सामूहिक बलात्कार किया गया, जब वह एक दोस्त के साथ रात का खाना खाने गई थी। घटना के बाद मुख्यमंत्री ने कहा, 'वह रात के 12.30 बजे बाहर कैसे आई? उनसे हॉस्टल के नियमों का पालन करने की उम्मीद की जाती है। उन्हें देर रात बाहर निकलने से बचना चाहिए।' एक महिला नेत्री होते हुए महिलाओं के प्रति ऐसी बयानबाजी अति अशोभनीय है।

शेखर कुमार, टिप्पणीकार

जीवन यात्रा कैसे हो सुखमय

मनुष्य का पूरा जीवन ही यात्रामय है। हम प्रायः दूसरों के दिखाए रास्तों पर ही चलते हैं, लेकिन जब मनुष्य अंतर्मन की यात्रा करता है, तब यहां किसी प्रकार के कोई पदचिह्न नहीं होते। इस यात्रा पर चलने से हम सब प्रकार की आसक्ति से मुक्त हो जाते हैं।

अध्यात्म

आचार्य महाप्रज्ञ

आज हमने यात्रा प्रारंभ की है। यात्रा के लिए हमने एक मार्ग चुना है। मार्ग पर हर कोई चलता है। हम भी चलते थे और चल रहे हैं। हर मार्ग पर पदचिह्न होते हैं, किंतु आज हमने एक ऐसा मार्ग चुना है, जिसमें कोई पदचिह्न नहीं है। पदचिह्न होने का अर्थ है- अनुसरण होना। जहां अनुसरण नहीं होता, वहां कोई पदचिह्न भी नहीं होता। हमारा मार्ग बिना पदचिह्न का मार्ग है। इसमें कोई किसी का अनुसरण नहीं करता।

जैसे आया, वैसे गया

एक चिंतन आता है और उसका संस्कार बन जाता है। एक प्रवृत्ति होती है और उसका संस्कार बन जाता है। एक शब्द आता है और उसका संस्कार बन जाता है। चिंतन चला जाता है, प्रवृत्ति चली जाती है, शब्द चला जाता है, किंतु वे अपने पीछे चिह्न छोड़ जाते हैं। जो छोड़ा जाता है, उसकी आवृत्तियां होती रहती हैं। संस्कार शेष रह जाते हैं।

किंतु हमने ऐसे मार्ग पर यात्रा शुरू की है, जिसमें कोई अनुसरण नहीं है, पदचिह्न नहीं है। जब चलने वाला अपने मार्ग से आसक्त हो जाता है, तब पदचिह्न शेष रह जाते हैं, किंतु जो विरत होता है, जिसे मार्ग का कोई मोह नहीं रहता, उसके कोई पदचिह्न नहीं होते। मार्ग चलने के लिए होता है, आसक्ति के लिए नहीं होता, मोह करने के लिए नहीं होता। जो चलता है, वह चला जाता है। जो आता है, वह जाता है, पीछे कुछ भी शेष नहीं छोड़ता। ऐसा मार्ग ही उत्तम होता है।

हमने भी ऐसा ही मार्ग चुना है, जहां कोई पदचिह्न नहीं, कोई अनुसरण नहीं, कुछ भी शेष नहीं, कोई संस्कार नहीं। जैसे आया वैसे गया। न स्मृति और न संस्कार।

बड़ा प्रश्न है किसे देखें

हमने इस मार्ग पर चलने के लिए 'दर्शन' का संकल्प लिया है। हम देखें। आत्मा के द्वारा आत्मा को देखें। बहुत विचित्र-सा लगता है। कौन देखे? किसे देखे? बहुत बड़ा प्रश्न है, किंतु जब हमारी देखने वाली चेतना, द्रष्टा चेतना खंडित होती है, तब उसके दो खंड हो जाते हैं- एक देखने वाली चेतना और एक दृश्य। श्वास को देखो। मन को देखो। शरीर को देखो। विचार को देखो। आभामंडल को देखो। प्राण को देखो।

आप जानना चाहेंगे कि क्या श्वास आत्मा है? क्या शरीर आत्मा है? क्या मन आत्मा है? क्या आभामंडल आत्मा है? क्या प्राण आत्मा है? कुछ चिंतन करेंगे, तो पता चलेगा कि श्वास आत्मा है। शरीर आत्मा है। मन आत्मा है। आभामंडल आत्मा है। कोई अंतर नहीं रहेगा।

आत्मा का है सारा खेल

यदि शरीर आत्मा न हो, तो जीवित शरीर और मृत शरीर में कोई अंतर नहीं रहेगा। यदि मन आत्मा न हो तो मन सहित और मन रहित में कोई अंतर नहीं रहेगा। ये सब आत्मा है। आत्मा को देखने का पहला द्वार है- प्रवास। भीतर की यात्रा का पहला द्वार है- श्वास। हम बाहर-ही-बाहर देखते हैं। मन बाहर की ओर दौड़ता है। जब भीतर की यात्रा शुरू करनी होती है, तब प्रथम प्रवेश द्वार श्वास से गुजरना होता है। जब श्वास के साथ मन भीतर जाने लगता है, तब अंतर्यात्रा शुरू होती है। श्वास आत्मा है, शरीर आत्मा है, मन आत्मा है। जहां तक हम पहुंचना चाहते हैं, वहां तक इनके द्वारा ही पहुंचा जा सकता है। इसके लिए साधना बहुत जरूरी है।

स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा

श्वास का स्पर्श किए बिना, श्वास को देखे बिना शरीर को ठीक तरह से समझ नहीं सकते, देख नहीं सकते। शरीर को देखे बिना मन को नहीं देख सकते। मन को देखे बिना आभामंडल को नहीं देख सकते। आभामंडल को देखे बिना प्राण को नहीं देख सकते और प्राण को देखे बिना उस चैतन्य तक नहीं पहुंच सकते, जहां हमें पहुंचना है। यह पूरा-का-पूरा यात्रा पथ है।

श्वास को देखे बिना शरीर को ठीक तरह से समझ नहीं सकते, देख नहीं सकते। शरीर को देखे बिना मन को नहीं देख सकते। मन को देखे बिना आभामंडल को नहीं देख सकते और आभामंडल को देखे बिना प्राण को नहीं देख सकते।

हर मुद्रा एक अलग भाव

यदि आत्मा तक पहुंचना है, सूक्ष्म तत्व तक पहुंचना है, अस्तित्व तक पहुंचना है, तो इसी यात्रा पथ पर चलना होगा। इसी क्रम से चलना होगा।

आप यह मान लें कि उस परम सत्ता को, परम अस्तित्व को, चैतन्य को, जो अमूर्त है, सूक्ष्म है, हमारे चर्म-चक्षुओं का विषय नहीं है, उसे हम देख लें- यह कहना और ऐसा समझना बहुत बड़ी भ्रांति होगी।

इसका पहला अर्थ है- मन के द्वारा श्वास के स्पंदनों को देखें। इसका दूसरा अर्थ है- मन के द्वारा शरीर के प्रकंपनों को, संवेदनों को देखें। इसका तीसरा अर्थ है- विचारों को देखें। इस स्थिति तक पहुंच जाने पर आभामंडल स्पष्ट हो जाता है। अंतर्मन की इस यात्रा से हम सब प्रकार की आसक्ति से मुक्त हो जाते हैं। जब हम आसक्ति से मुक्त होते हैं, तब जीवन सुखमय होता है।

सप्ताह के व्रत-त्योहार

14 अक्तूबर से 20 अक्तूबर 2025

14 अक्तूबर (मंगलवार): कार्तिक कृष्ण अष्टमी प्रातः 11.10 मिनट तक।

15 अक्तूबर (बुधवार): कार्तिक कृष्ण नवमी प्रातः 10.34 मिनट तक पश्चात दशमी तिथि। भद्रा रात्रि 10.35 मिनट से। गंडमूल दोपहर 12 बजे से।

16 अक्तूबर (गुरुवार): कार्तिक कृष्ण दशमी प्रातः 10.36 मिनट तक पश्चात एकादशी तिथि। भद्रा प्रातः 10.36 मिनट तक। गंडमूल विचार।

17 अक्तूबर (शुक्रवार): कार्तिक कृष्ण एकादशी प्रातः 11.13 मिनट तक पश्चात द्वादशी तिथि। रमा एकादशी व्रत। गोवत्स द्वादशी। कार्तिक संक्रांति। गंडमूल दोपहर 01.58 मिनट तक।

18 अक्तूबर (शनिवार): कार्तिक कृष्ण द्वादशी दोपहर 12.20 मिनट तक पश्चात त्रयोदशी तिथि। शनि प्रदोष व्रत। धन त्रयोदशी। धनतेरस। धन्वन्तरि जयंती। यम दीपदान।

19 अक्तूबर (रविवार): कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी दोपहर 01.52 मिनट तक पश्चात चतुर्दशी तिथि। भद्रा दोपहर 01.52 मिनट से रात्रि 02.49 मिनट तक। श्री हनुमान जन्मोत्सव (उत्तर भारत)। मास शिवरात्रि व्रत।

20 अक्तूबर (सोमवार): कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी अपराह्न 03.45 मिनट तक पश्चात अमावस्या तिथि। नरक चतुर्दश। रूप चतुर्दशी। दीपावली। प्रदोष काल में लक्ष्मीन्द्र-कुबेरादि पूजा। महानिशीथ काल रात्रि 11.45 मिनट से रात्रि 12.39 मिनट तक। सायं प्रदोष वेला में देवालयों में दीपदान तत्पश्चात घर में दीपदान।

-पं. ऋभुकांत गोस्वामी

आस्था-अनास्था

समीर उपाध्याय ज्योतिर्विद

कर्क का गुरु: धीरज धरें, होंगे सब कारज

कर्क राशि के बृहस्पति के बारह राशियों पर क्या प्रभाव होंगे? -पुनीता पुनीत, फरीदाबाद

बृहस्पति ग्रह 18 अक्तूबर, 2025 को रात्रि 09.39 बजे अतिचारी अवस्था में मिथुन राशि से निकलकर अपनी उच्च राशि कर्क में प्रवेश करेंगे। यह 11 नवंबर, 2025 को रात्रि 10.11 बजे कर्क राशि में वक्री होंगे और पुनः 05 दिसंबर, 2025 को अपराह्न 03.38 बजे मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे। आइए जानें गुरु के उच्च राशि कर्क में अतिचारी अवस्था में गोचर का आपकी राशि पर क्या प्रभाव पड़ेगा:

मेष : नए कार्यों में संलग्नता। स्वरोजगार से जुड़े लोगों को बड़ी सफलता। निवास, कार्य स्थल की प्रकृति में परिवर्तन की संभावना।

वृष : परिवर्तनकारी समय। परिवार में भाई-बहनों से जुड़े मांगलिक कार्य। पुरानी समस्याओं का समाधान होगा।

मिथुन : आर्थिक लाभ। घर में मांगलिक कार्य। धन संचय। पुरानी समस्या का समाधान। अतिरिक्त प्रयास से महत्वपूर्ण काम बनेंगे।

कर्क : मिश्रित प्रभाव। विदेश यात्रा। मांगलिक कार्य। महत्वपूर्ण कार्यों में अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता। स्वास्थ्य पर खर्च।

सिंह : निवास, कार्य स्थल में परिवर्तन। स्वास्थ्य, निर्माण कार्य तथा खरीदारी पर खर्च। ननिहाल से शुभ-अशुभ दोनों समाचार।

कन्या : लाभकारी परिवर्तन। नए कार्य में संलग्नता। आर्थिक तरक्की। नई जिम्मेदारी मिलेगी।

तुला : मिश्रित फल। निवास, कार्य स्थल में परिवर्तन। निर्माण कार्य, खरीदारी व मरम्मत पर खर्च की अधिकता। गलत निर्णय से आर्थिक क्षति।

वृश्चिक : कार्यक्षेत्र में लाभकारी परिवर्तन। कला, शिक्षा, खेल, मीडिया से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता।

धनु : संघर्षपूर्ण सफलता। संबंधों में तनाव। खर्च की अधिकता। महत्वपूर्ण कार्य में बाधा।

मकर : मांगलिक कार्य। आर्थिक लाभ। नई जगह की यात्रा। चल-अचल संपत्ति की खरीददारी।

कुंभ : संघर्षपूर्ण सफलता। पुरानी स्वास्थ्य समस्या का समाधान। कार्य स्थल में परिवर्तन। घर में स्वास्थ्य की समस्या।

मीन : संतान पक्ष के लिए शुभ। रुके कार्य बनेंगे। कार्यक्षेत्र में लाभकारी परिवर्तन। महत्वपूर्ण कार्य में सफलता।

भेजें अपने सवाल

स्वर्ग-नरक की कल्पना का आधार क्या है?

पाप क्या है, पुण्य क्या है? धर्म क्या है, अधर्म क्या है? ईश्वर की आराधना कैसे करें? ऐसे सवाल अकसर हमारे मन में उठते हैं, पर इनका जवाब हमारे पास नहीं होता। मन-मस्तिष्क में आने वाले ऐसे ही सवालों के जवाब हमारे पैनल में शामिल धर्माचार्य आपको देंगे।

अपने सवाल हमें इस पते पर भेजें:
धर्मक्षेत्रे, हिन्दुस्तान, 11वां तल, द आइकॉन टॉवर, एफ सी-24 सी, फिल्म सिटी, सेक्टर-16ए, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर-201301 (उत्तर प्रदेश)

विचार

श्रीमद्भागवत ने ज्ञान-वैराग्य को दिया जीवन

सनकादि ऋषियों ने नारदजी को बताया कि ज्ञान और वैराग्य को सचेत करने का एकमात्र उपाय श्रीमद्भागवत का श्रवण है। ज्ञान और वैराग्य ने जब श्रीमद्भागवत का श्रवण किया, तो उन्हें फिर से यौवन प्राप्त हो गया।

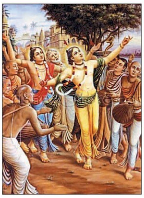

वृंदावन में विलाप करती हुई एक तरुणी के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए नारदजी ने उससे उसके दुख का कारण पूछा। उस तरुणी ने कहा, 'मेरा नाम भक्ति है और ये दोनों मेरे पुत्र हैं- ज्ञान और वैराग्य। मैं इनकी मां अभी भी जीवित हूं, जबकि इन दोनों की मेरे रहते हुए भी मृत्यु हो रही है। एक मां के लिए इससे बड़ा दुख और क्या हो सकता है।'

अपनी करुण गाथा सुनाते हुए भक्ति ने कहा कि मैं द्रविड़ देश में पैदा हुई। कर्नाटक में बढ़ी। कहीं-कहीं महाराष्ट्र में भी सम्मानित हुई और गुजरात पहुंचकर बूढ़ी हो गई। वहां से चलकर वृंदावन आई। वृंदावन आते-आते मेरा यौवन फिर लौट आया। मैं दिन-रात नवांगना होती जा रही हूं, परंतु मेरे इन दोनों पुत्रों के स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ। मां युवती और पुत्र जर्जर वृद्ध! यह कैसी विडंबना है?

नारदजी ने विचार कर इस विपरीत दशा का कारण वृंदावन में भक्ति की प्रबलता और ज्ञान-वैराग्य की उपेक्षा बताया। युवती भक्ति के निवेदन से पसीज कर नारदजी ने उन दोनों वृद्धों के कान में मंत्रोच्चार कर कहा, 'ज्ञान जागो...वैराग्य जागो।' मगर उन दोनों बूढ़ों ने आंखें नहीं खोलीं।

तब नारदजी भक्ति को ज्ञान-वैराग्य सहित वहीं छोड़ कर बदरिका आश्रम पहुंचे और सारा दृश्य सनकादि ऋषियों के सामने रखा। सनकादि ऋषियों ने नारदजी को बताया कि ज्ञान और वैराग्य को सचेत करने का एकमात्र उपाय श्रीमद्भागवत का श्रवण है।

श्रीमद्भागवत की महिमा के विषय में भली प्रकार जानकर नारदजी ने पहली बार हरिद्वार के समीप आनंद नामक स्थल पर श्रीमद्भागवत सप्ताह का आयोज किया। तब से यह परंपरा आज तक चली आ रही है। नारदजी के परामर्श पर ज्ञान और वैराग्य ने जब श्रीमद्भागवत का श्रवण किया, तो उन्हें उनका यौवन फिर से प्राप्त हो गया।

कैलाश वाजपेयी

चिंतन

चमत्कार नहीं साधना को पूजें

संत साधना का आश्रय लेना परम आवश्यक है। इस साधना का अभ्यास करने से ज्यों-ज्यों हमारे अंदर गुणों का विकास होगा, त्यों-त्यों हम संत और संत कृपा के अधिकारी होंगे।

हनुमान प्रसाद पोद्दार

अधिकांश सच्चे संत प्रायः अपने को लोगों में प्रकट नहीं करके जगत में विचरण करते हैं। संत-परंपरा के प्रसिद्ध संत आज भी हैं। वे हम लोगों के बीच में आते भी हैं; पर हम उन्हें पहचान नहीं पाते।

भिन्न-भिन्न स्तरों पर भगवान का कार्य करनेवाले ऐसे हजारों संत पृथ्वी पर हैं, जो लोकचक्षु से परे रहकर अपना महत कार्य कर रहे हैं। कहते हैं कि संत जगत में सब कार्य नियमपूर्वक होते हैं।

संतों के सर्वोपरि संचालक परम सद्गुरु भगवान शंकर हैं, जो रुद्ररूप में जगत का संहार और सुंदर शिवरूप में सबका सदा कल्याण करते हैं। उनकी अधीनता में अनेक सिद्ध-महात्मा संत पुरुष निरंतर ईश्वरीय लीला में सहायक होकर भगवान की आज्ञानुसार कार्य कर रहे हैं। इन संतों को कुछ लेना नहीं है। पूजा नहीं करवानी है। ख्याति और प्रशंसा से कोई सरोकार नहीं है। लोगों का प्रशंसा पात्र न होने से इनका कोई नुकसान नहीं होता। फिर ये लोगों के सामने प्रकट होकर क्यों अपना परिचय दें। अधिकारी पुरुष को इनमें से किन्हीं-किन्हीं के दर्शन आज भी होते हैं। कहा जाता है कि देवर्षि नारद, सनकादि, भगवान दत्तात्रेय, शुकदेव आदि प्राचीन और शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, गोरखनाथ, भर्तृहरि, कबीर, नानक, तुलसीदास, ज्ञानदेव आदि से लेकर रामकृष्ण परमहंस जैसे अनेक संतों के दर्शन आज भी उनके अंतरंग भक्तों को होते हैं।

इन संतों के अलावा ऐसे अनेक अज्ञात संत हैं, जो विविध स्थानों में विविध कार्य करते हुए हम लोगों के बीच रह रहे हैं, जो अज्ञात रूप से इस मंडल की दृष्टि और शासन सूत्र में बंधे रहने पर भी विभिन्न स्थानों में अप्रकट रूप से साधना कर रहे हैं। हमें यह नहीं समझना चाहिए कि जितने और जो हम लोगों की जानकारी में हैं, वे ही और उतने ही संत हैं।

संतों के लिए यह कोई आवश्यक बात नहीं है कि वे संसार में प्रसिद्ध ही हों। उनमें प्रसिद्ध तो बहुत थोड़े ही होते हैं और साथ ही यह भी याद रखना चाहिए कि संत की प्रसिद्धि पाए हुए अनेक पुरुष वस्तुतः संत होते भी नहीं हैं। उनका केवल संत का ऊपरी बाना मात्र होता है।

मन असंत तथा विषयी ही होता है। ऐसे लोगों से संसार की बहुत बुराई होती है। ये धर्म-संचालन के कार्य में अयोग्य होते हुए भी जब उसमें अनधिकार प्रवेश कर बैठते हैं, तब अपने हृदय के विकारों और व्याधियों को ही जगत में फैलाते हैं और अपने संपर्क में आनेवाले नर-नारियों के जीवन को पापमय, दुखी और अशांतिपूर्ण ही बनाते हैं।

सच्चे संत अधिकांश अप्रकट ही रहते हैं। उनकी कोई ख्याति या प्रसिद्धि नहीं होती। ऐसे सच्चे संतों को पाने और उन्हें पहचानने के लिए संत साधना का आश्रय लेना परम आवश्यक है।

संतोचित साधना का अभ्यास करने से ज्यों-ज्यों हमारे अंदर उन गुणों का विकास होगा, त्यों-त्यों हम संत और संत कृपा के अधिकारी होंगे। कठिनता तो यह है कि हम संतों के चमत्कारों को ही पूजते हैं, उनकी साधना को नहीं, जिसके बिना हम यथार्थ लाभ से वंचित ही रह जाते हैं।

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। जीवनसाथी व पिता की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों की अधिकता रहेगी। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में वृद्धि हो सकती है।

वृष : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन परेशान रहेगा। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। आय में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में परिश्रम अधिक रहेगा।

मिथुन : वाणी में मधुरता रहेगी, परंतु धैर्यशीलता बनाए रखें। नौकरी में अफसरों से सद्भाव बनाकर रखें। तरक्की के अवसर मिल सकते हैं।

कर्क : मन में शांति व प्रसन्नता रहेगी। संतान सुख में वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी। परिवार का साथ मिलेगा। सेहत का ध्यान रखें।

सिंह : मन परेशान रहेगा। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। कारोबार के लिए पिता से धन मिल सकता है।

कन्या : आत्मसंयत रहें। अपनी भावनाओं को वश में रखें। बातचीत में संतुलित रहें। नौकरी में बदलाव की संभावना बन रही है। किसी मित्र का सहयोग मिल सकता है।

तुला : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। माता की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। खर्चों में वृद्धि होगी। शैक्षिक कार्यों के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

वृश्चिक : मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। व्यर्थ के क्रोध व वाद-विवाद से बचें। परिवार का साथ मिलेगा। नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। आय में वृद्धि होगी।

धनु : पठन-पाठन में रुचि रहेगी। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। आय में वृद्धि होगी। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी।

मकर : मन प्रसन्न रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार के लिए विदेश जा सकते हैं। यात्रा से लाभ के अवसर मिल सकते हैं।

कुंभ : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। पिता का साथ मिलेगा। भागदौड़ अधिक रहेगी। रहन-सहन कष्टमय हो सकता है।

मीन : आत्मविश्वास तो बहुत रहेगा, परंतु संयत रहें। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा, परंतु कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

14 अक्तूबर, मंगलवार, **शक संवत्:** 22 आश्विन (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग:** 29 आश्विन मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम:** 21 रबि-उल्सानी, 1447, **विक्रमी संवत्:** कार्तिक कृष्ण अष्टमी प्रातः 11.10 मिनट तक पश्चात नवमी तिथि, पुनर्वसु नक्षत्र प्रातः 11.55 मिनट तक पश्चात पुष्य नक्षत्र, सिद्ध योग रात्रि 04.11 मिनट तक पश्चात साध्य योग, कौलव करण। चंद्रमा कर्क राशि में (दिन-रात)।

सूर्य दक्षिणायन। सूर्य दक्षिण गोल। शरद् ऋतु। अपराह्न 03 बजे से सायं 04.30 मिनट तक राहुकालम्।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

घर में बुजुर्गों के शयन कक्ष में कौन सा रंग होना चाहिए? -वरदराजन, वाराणसी

- बुजुर्गों के कमरों का रंग ऐसा होना चाहिए, जो उन्हें मानसिक शांति एवं सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करे। उनके शयन कक्ष में हल्के और ठंडे रंग जैसे हल्का हरा, सफेद रंग करवा सकते हैं। इसके अलावा उनके कमरे में हल्का पीला तथा हल्के नीले रंग की सफेदी या पेंट करवा सकते हैं। इन रंगों से वातावरण शांत रहता है तथा उनके तनाव को कम करके उन्हें सुकून देता है।
- बुजुर्गों के कमरे में गहरे और तेज रंग जैसे डार्क रेड, काला या डार्क नीला रंग नहीं होने चाहिए। ये रंग उनको चिड़चिड़ा बना सकते हैं या डिप्रेशन को बढ़ा सकते हैं।

वर्ग पहेली: 8118

1	■	2	3			4		5
	■	■		■	■		■	
6		7		■	8			
	■		■	9	■		■	
■	10							■
11	■		■		■		■	12
13				■	14			
	■		■	■		■	■	
15							■	

बाएं से दाएं
2. शासन संचालन हेतु कानून/विधान बनाना; नियम बनाना; संविधान लिखना (4,3)
6. परिक्षेत्र; परिधि; भवन क्षेत्र (4)
8. लगाया गया हिसाब; संभावित व्यय का पहले से ही लगाया गया अनुमान; अनुसंधान (4)
10. कुपथ पर डालना; रास्ता भुलाना; पथभ्रष्ट करना (4,3)
13. समान; बराबर; तुल्य (4)
14. शालिग्राम की बटिया का एक भेद; कृष्ण; विष्णु; लोगों को कष्ट पहुंचाने वाला; दुखदायक (4)
15. टकराव करवाना; भिड़वाना; लड़वाना; डटने के लिए कहना; मुकाबला करवाना (3,4)

ऊपर से नीचे
1. बराबर चली आ रही रीति; परिपाटी; प्रथा; क्रम; सिलसिला (4)
3. खराबी; दोष; बुराई (3)
4. कष्ट, विपत्ति आदि से अलग रहना; रक्षित रहना; सावधान रहना; दूर रहना; परहेज करना; पीछे रहना (2,2,3)
5. गज; गजानन; गणेश; हाथी जैसे मुख वाला (4)
7. आपत्ति निवारण करना; विचार एक करवाना; बात बनाना; राजी करना (4,3)
9. फूलों के मकरंद से संग्रह किया हुआ बहुत मीठा, गाढ़ा और परम स्वादिष्ट तरल पदार्थ; मधु (3)
11. चिपचिपा; लसदार (4)
12. अदालत द्वारा सुना जाना; किसी वाद का सुना जाना; सुनने की क्रिया; सुना जाना (4)
14. झलक; दीदार; दर्शन; कांति (3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली: 8117

1 द	■	2 अ	सु	3 र	नि	4 कं	द	न
5 ल	ग	न	■	क्षा	■	ठ	■	■
प	■	म	■	■	6 म	हा	ज	7 न
रि	■	8 ना	9 या	ब	■	र	■	ब्ज
10 व	र	■	द	■	11 ढो	■	12 पा	प
र्त	■	13 सं	■	14 पा	र	15 स	■	ह
16 न	म	स्का	र	■	■	ह	■	चा
■	■	र	■	17 ती	■	18 म	ही	न
19 ब	च	क	र	र	ह	ना	■	ना

सुडोकू: 8100

* कठिन

			5				7	
	9	1				8		
				2		5		6
			7				3	8
	7						2	
9	8				4			
8		3		5				
		4				6	5	
	5				1			

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3×3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू: 8099

8	5	2	4	7	6	1	3	9
1	6	3	2	8	9	4	5	7
4	9	7	5	3	1	6	8	2
3	8	6	9	5	7	2	4	1
5	7	4	3	1	2	8	9	6
2	1	9	6	4	8	5	7	3
7	3	5	1	2	4	9	6	8
9	4	1	8	6	3	7	2	5
6	2	8	7	9	5	3	1	4

कूटनीति उद्देश्यों और साधनों का सफल संयोजन है। -डेनिस रॉस

पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर में एक मेडिकल छात्रा के साथ हुई सामूहिक दरिंदगी वाकई शर्मसार करने वाली है। अफसोस की बात है कि इस बार भी व्यवस्था को चलाने वाले खुद को बचाने की मुद्रा में ज्यादा दिख रहे हैं।

बंगाल के हाल

पश्चिम बंगाल के पश्चिम बर्धमान जिले के दुर्गापुर में एक मेडिकल छात्रा के साथ हुई सामूहिक दरिंदगी शर्मसार करने वाली तो है ही, यह सवाल भी उठाती है कि आखिर पश्चिम बंगाल में चल क्या रहा है। कुछ ही महीने पहले कोलकाता के लॉ कॉलेज की एक छात्रा के साथ सामूहिक दुष्कर्म की वारदात सामने आई थी। पिछले वर्ष कोलकाता के ही आरजी कर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में एक जूनियर डॉक्टर के साथ दुष्कर्म के बाद हत्या की कड़वी याद भी अब तक लोगों के जेहन से मिटी नहीं है। उस वक्त शैक्षणिक परिसर में सुरक्षा का मुद्दा बड़े जोर-शोर से उठा था और उतनी ही तेजी से फिर ठंडा भी हो गया। राजधानी कोलकाता से महज 170 किलोमीटर दूर दुर्गापुर में मेडिकल कॉलेज के ताजा मामले में छात्रा का एक सहपाठी उसे रात्रि भोजन के बहाने बाहर ले गया। इसके बाद जब दो-तीन लोगों ने उन्हें घेर लिया, तो सहपाठी उसे छोड़कर भाग गया। कॉलेज प्रशासन के अनुसार, रात को पीड़िता अपने दोस्त के साथ बाहर गई, लेकिन उसका दोस्त कुछ देर में अकेला ही लौटा। कॉलेज के गेट पर कुछ मिनट इंतजार करने के बाद वह फिर गया और फिर थोड़ी देर बाद पीड़िता के साथ लौटा। लिहाजा पीड़िता का यह मित्र भी जांच के दायरे में है। राज्य पुलिस ने अब तक पांच आरोपियों को पकड़ कर अपनी सक्रियता दिखाने की कोशिश की है, लेकिन राज्य में बार-बार हो रही ऐसी वारदातें उनकी मुस्तैदी को लेकर कुछ और ही इशारा करती हैं। सवाल यह है कि जब राज्य की राजधानी और उसके आसपास के क्षेत्रों में महिला सुरक्षा की ऐसी स्थिति है, तो सुदूर क्षेत्रों का क्या हाल होगा? छात्रा के साथ हुए जघन्य कांड पर सवाल मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के रवैये पर भी उठते हैं। वह राज्य की मुख्यमंत्री होने के साथ खुद एक महिला भी हैं। लिहाजा 'लड़कियों को रात में बाहर नहीं घूमना चाहिए', जैसी अशोभनीय नसीहत देने से बचा जा सकता था। इसी तरह उनकी ही

पार्टी की एक अन्य महिला सांसद का यह कहना भी उतना ही आपत्तिजनक है कि हर समाज में ऐसी घटनाएं होती ही हैं। दरअसल, यह मानसिकता अपराधों को रोकने वाली नहीं, बल्कि अपराधियों को प्रश्रय देने की है। महिलाओं के खिलाफ अपराधों में पश्चिम बंगाल वैसे भी देश के कुछ शीर्ष राज्यों में से एक है, जहां महिला सुरक्षा के मामले में बार-बार सामने आ रही चूकें महज अपराध नहीं, बल्कि एक व्यवस्था की विफलता को इंगित करती हैं। इस तरह की जघन्यता दोहराई न जाए, इसके लिए जरूरी है कि दूसरे राज्यों पर उंगली उठाने के बजाय व्यवस्थाएं खुद के भीतर झांकें।

दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है

अफगानिस्तान एक बार फिर भू-राजनीतिक शक्तियों का अखाड़ा बनने के लिए अभिशप्त है। पाकिस्तान दो स्वामियों-अमेरिका और चीन की सेवा में लगा है। अमेरिका अफगानिस्तान में वापसी की जुगत में है, जहां चीन तेजी से पैर जमा रहा है। भारत के पास पीछे रहने की गुंजाइश नहीं है।

महेंद्र वेद
वरिष्ठ पत्रकार

चाणक्य ने कहा है कि दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है। भारत अफगानिस्तान के साथ अपने रिश्ते को मजबूत करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, जिसके रिश्ते पाकिस्तान से तनावपूर्ण बने हुए हैं और सीमा पर संघर्ष छिड़ा हुआ है। भारत 1999 में कश्मीरी उग्रवादियों द्वारा अपने विमान के अपहरण की अपमानजनक घटना से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है, जिसका अंत कंधार में हुआ था। भारत यह नहीं भूला है कि जब वह अफगानिस्तान में विभिन्न परियोजनाओं पर काम कर रहा था, तो उसके कर्मचारियों एवं कार्यालयों पर हमला किया गया था। उस समय तालिबान (जो अब सत्ता में हैं) दो दशकों तक पाकिस्तान के इशारे पर काम कर रहे थे।

अतीत की इन त्रासदियों एवं महिलाओं व जातीय अल्पसंख्यकों के साथ कठोर व्यवहार के बावजूद भारत तालिबान के साथ फिर से बातचीत कर रहा है। भले ही इसे रणनीतिक जरूरत के रूप में देखा जा रहा है, पर यह जोखिमों और विडंबनाओं से भरा है। तालिबानी विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी की नई दिल्ली यात्रा के दौरान, भारत सरकार ने दूतावास में (जो तकनीकी रूप से भारतीय जमीन पर अफगान क्षेत्र है) एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की थी, जिससे कथित तौर पर महिला पत्रकारों को बाहर रखा गया।

विपक्ष की आलोचना और सोशल मीडिया पर तीखी प्रतिक्रिया के बाद, मुत्ताकी ने आगरा के ताजमहल का दौरा रद्द कर दिया और मीडिया के साथ एक और बैठक की, जिसमें महिलाओं के प्रवेश पर रोक को एक 'तकनीकी गड़बड़ी' बताया। इसके बगैर यह दौरा पूरी तरह से विफल होने का खतरा था। उन्होंने अफगान महिलाओं के साथ व्यवहार के बारे में मीडिया के कठिन सवालों के जवाब तो दिए, लेकिन इस आयोजन का इस्तेमाल अपनी उस सोच को आगे बढ़ाने के लिए किया, जो दुनिया की समझ के बिल्कुल विपरीत है। तालिबान इस्लाम के अतिवादी रूप का पालन करते हैं। वे इस मुद्दे पर किसी भी आलोचना को 'प्रोपगैंडा' कहकर खारिज कर देते हैं। उनका स्पष्ट संदेश यह है कि वे अपनी घरेलू नीतियों

को जारी रखेंगे और चूंकि वे सत्ता में हैं, तो दुनिया को उनसे निपटना होगा। और दुनिया वाकई ऐसा कर भी रही है। इस वास्तविकता को स्वीकार करने वाले 40 अन्य देशों के साथ भारत ने धीरे-धीरे काबुल के साथ अपने संबंधों को विकसित किया है। वह अफगानिस्तान के विकास में सावधानीपूर्वक और क्रमिक रूप से मदद करना चाहता है।

2002-2021 के दौरान, अमेरिका समर्थित काबुल शासन का समर्थन करते हुए भारत ने विकास कार्यों पर लगभग तीन अरब डॉलर का निवेश किया था, जिससे यह सबसे बड़ा क्षेत्रीय दाता बन गया। यह मुश्किल था और भविष्य में भी ऐसा ही होगा। यह विडंबना ही थी कि अपनी दिल्ली यात्रा के दौरान, मुत्ताकी ने हेरात प्रांत में सलमा बांध का जिक्र किया, जिसे भारत ने भारी धन और जान-माल की कीमत पर बनवाया था। हमलावर उन ताकतवर लोगों में से थे, जो आज काबुल में राज कर रहे हैं। तालिबान द्वारा पाकिस्तान को भारत के खिलाफ 'रणनीतिक तवज्जो' न दिए जाने से खुश भारत को उम्मीद है कि वह पाकिस्तान के खिलाफ अफगान का राजनयिक समर्थन हासिल कर सकेगा। फिलहाल, दोनों ने पाकिस्तान का जिक्र किए बगैर आतंकवादी कृत्यों की निंदा की है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मुत्ताकी ने जम्मू-कश्मीर पर भारत की 'संप्रभुता' की घोषणा की, जिससे इस्लामाबाद का नाराज होना स्वाभाविक है।

अफगानिस्तान और पाकिस्तान का संबंध जटिल और स्वाभाविक रूप से प्रतिकूल हैं, लेकिन यह भी सच है कि अफगानिस्तान चारों ओर से स्थल-रुद्ध (लैंडलॉक्ड) है और उसे समुद्र तक पहुंच तथा दैनिक आपूर्ति के लिए पाकिस्तान की जरूरत है। भारत ने काबुल स्थित अपने दूतावास में अपने 'तकनीकी मिशन' को उन्नत किया है और वीजा प्रक्रियाओं को आसान बनाया है। लेकिन उसने विश्व समुदाय के कदम का इंतजार कर रहे 'अमीरात' को मान्यता नहीं दी है। तालिबान सरकार और उसके नेता वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र के प्रतिबंधों के अधीन हैं। निकट भविष्य में तालिबान और अमेरिका के बीच समझौता हो जाने के बाद यह स्थिति बदल सकती है। ट्रंप प्रशासन पश्चिम और दक्षिण एशिया के लिए अपनी रणनीति की समीक्षा कर रहा है। तालिबान चतुर सौदेबाज हैं और अब तक अमेरिकी प्रस्तावों को ठुकराते रहे हैं। ट्रंप पाकिस्तान की मदद से फिर से अपनी पकड़ बनाना चाहते हैं, यही वजह है कि वह सेना प्रमुख मुनीर का स्वागत कर रहे हैं। तालिबान के शासन में चार साल से भी अधिक समय से अफगानिस्तान एक अस्थिर मुल्क है, जिसका मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) दुनिया के सबसे निचले स्तर पर है। उनके कठोर शासन ने किसी भी घरेलू बहस या विरोध को जगह नहीं दी है।

तालिबान की काबुल में वापसी में मदद करने वाला पाकिस्तान सीमा पर लगातार होने वाली झड़पों और विद्रोही तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) की मौजूदगी के कारण नाराज है, जो पाकिस्तानी सुरक्षा बलों पर हमला करने के लिए दोनों तरफ के जनजातीय क्षेत्रों का उपयोग कर रहा है। तालिबान और टीटीपी में वैचारिक भाईचारा है। हालांकि, काबुल इससे इन्कार करता है, जबकि वहां न सिर्फ टीटीपी के 30,000 परिवार रहते हैं, बल्कि वह इस्लामिक स्टेट खुरासान प्रांत (आईएसकेपी) समेत वैश्विक आतंकी समूहों से निपटने के लिए भी संघर्ष कर रहा है, जो भारत समेत पूरे दक्षिण एशिया को निशाना बनाता है। जाहिर है, भारत को सोच-समझकर कदम उठाने होंगे, क्योंकि अमेरिका अफगानिस्तान में वापसी की कोशिश कर रहा है, जहां चीन भी तेजी से आगे बढ़ रहा है। बीजिंग, शिनजियांग प्रांत में अपने विद्रोही मुस्लिम आदिवासियों, उइगरों पर नियंत्रण रखने के लिए अफगानिस्तान का समर्थन चाहता है। उसकी नजर विशाल और अनछुए अफगान खनिजों पर भी है।

बीजिंग, अमेरिका के लौटने से पहले अपने अरबों डॉलर के चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) को अफगानिस्तान तक बढ़ाने की योजना बना रहा है। चीन-पाकिस्तान के मजबूत रिश्ते इसमें मददगार साबित हो सकते हैं। इससे दो स्वामियों की सेवा करने वाले पाकिस्तान को भी वाशिंगटन-बीजिंग प्रतिद्वंद्विता से निपटने में सावधानी बरतनी होगी। साफ है कि कूटनीति में कोई स्थायी मित्र या शत्रु नहीं होता। विश्व समुदाय अफगानिस्तान की उन महिलाओं के लिए मगरमच्छ के आंसू भी नहीं बहाएगा, जिन्हें पढ़ाई और काम करने से रोका गया है। अफगानिस्तान एक बार फिर प्रतिस्पर्धी भू-राजनीतिक ताकतों के खेल का मैदान बनने के लिए अभिशप्त है।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

कार्ल हिल्टी

आदर्श जीवन वह है, जिसमें अच्छाई आदत बन जाए और बुराई इतनी अप्राकृतिक लगे कि वह असहज कर दे। इन्सान को बुरी आदतों से बचने के बजाय अच्छी आदतों को विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए।

जीवन की दिशा आदतों पर निर्भर करती है

प्रत्येक कार्य और निश्चित विचार, अपने पीछे एक ऐसी प्रवृत्ति छोड़ जाता है, जो एक भौतिक प्रभाव की तरह होती है, और जो अगले समान विचार या कार्य को आसान या कठिन बना देती है। बुरे व्यवहार का अभिशाप यह है कि यह और बुरे व्यवहार को जन्म देता है, जबकि अच्छे व्यवहार का सबसे बड़ा पुरस्कार यह है कि यह अच्छाई की प्रवृत्ति को मजबूत करता है और जो हासिल किया गया है, उसे स्थायी बनाता है। मानव जीवन का गंभीर तथ्य यह है कि हमने जो एक बार कर दिया, उसे कभी बदल नहीं सकते। यह वही रहता है, चाहे हम इसे स्वीकार करें या नहीं। इसलिए, इतिहास की सच्ची कहानी कोई मनोरंजक नाटक नहीं, बल्कि नियति की गति को दर्शाती है।

जीवन को गंभीरता से लेने पर मुख्य समस्या विचार या विश्वास से नहीं, बल्कि आदतों से जुड़ी होती है। शिक्षा का उद्देश्य लोगों को अच्छी आदतों की ओर प्रेरित करना होना चाहिए। अच्छे और बुरे के बीच सही चुनाव करना हमेशा संभव नहीं होता, क्योंकि मानवीय भावनाएं कभी-कभी बहुत प्रबल होती हैं। लेकिन एक ऐसी स्वाभाविक प्रवृत्ति विकसित की जा सकती है, जो अच्छाई की ओर तुरंत आकर्षित हो। आदर्श जीवन वह है, जिसमें अच्छाई आदत बन जाए और बुराई इतनी अप्राकृतिक लगे कि वह शारीरिक रूप से भी असहज कर दे। ऐसा न होने पर, सद्गुण या भक्ति सिर्फ अच्छे इरादों का ढेर बनकर रह जाती है, जो बुराई की ओर भी ले जा सकती है। इन्सान को बुरी आदतों से बचने के बजाय अच्छी आदतों को विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए। आंतरिक और बाहरी जीवन में सकारात्मक रूप से आगे बढ़ना आसान है। हर सफलता में आनंद मिलता है। मुख्य लक्ष्य है त्वरित संकल्प की आदत, जो तुरंत कार्य में बदल जाए। निडर होना दूसरी महत्वपूर्ण आदत है। डर हमारी ताकत को पहले ही कम कर देता है। ज्यादातर चीजें जो हमें डरावनी लगती हैं, पास आने पर उतनी भयानक नहीं होतीं। जल्दी से बेहतर चीजों को चुनने और कमजोर चीजों को छोड़ने की आदत डालें। खास तौर पर उन चीजों की अपेक्षा छोड़ दें, जो एक-दूसरे के विपरीत हों। यही कई विफलताओं का रहस्य है। मेरा मानना है कि कोई व्यक्ति न केवल अपने जीवन के लक्ष्य चुन सकता है, बल्कि उन सभी लक्ष्यों को पा भी सकता है, बशर्ते वह उन इच्छाओं को छोड़ दे, जो इनके विपरीत हों। जीवन में सबसे अच्छी चीजें जो आसानी से पाई जा सकती हैं, वे हैं, मजबूत नैतिक सिद्धांत, बौद्धिक अनुशासन, प्रेम, निष्ठा, काम करने की क्षमता और उसका आनंद, आध्यात्मिक और शारीरिक स्वास्थ्य, और सीमित सांसारिक संपत्ति। इनकी तुलना में कोई अन्य चीज नहीं ठहरती। लेकिन कुछ चीजें, जैसे बहुत ज्यादा धन, सांसारिक सम्मान, शक्ति या आत्म-भोग, इनसे मेल नहीं खातीं। लोग अक्सर इन्हीं की इच्छा करते हैं और इन्हें पा भी लेते हैं, लेकिन इसके लिए उन्हें बेहतर चीजों का त्याग करना पड़ता है। अच्छी आदतों को अपनाकर जीवन को सार्थक और अच्छाई से भरा बनाया जा सकता है।

संकल्प को कार्य में बदलें

सूत्र

हर कार्य और विचार भविष्य को आकार देता है। निडर बनें, बेहतर चीजों को चुनें, और प्रेम, निष्ठा व मेहनत को अपनाएं। डर को कमजोरी समझकर दूर करें। जो चाहते हैं, उसे पाने के लिए असंगत इच्छाओं का त्याग करें। छोटी-छोटी अच्छी आदतें बड़े बदलाव लाती हैं। अपने संकल्प को तुरंत कार्य में बदलें और नियति को जीतें।

दूसरा पहलू

आगरा में यमुना किनारे मुगल शासक के बनाए एत्माउद्दौला के मकबरे में मौजूद है कमाल का बाढ़ मापक यंत्र।

मछली डूबी या नहीं

मछली और पानी का संबंध तो सदियों से है, पर यहां बात हो रही है संगमरमर की अनोखी मछली की। आगरा में यमुना किनारे बने एत्माउद्दौला के मकबरे के पिछले हिस्से में मौजूद यह मछली बड़ी कमाल की है। यमुना में पानी बढ़ते ही इस मछली की खोज-खबर लेना शुरू हो जाता है कि मछली डूबी या नहीं। हर जबान पर यही रहता है, जैसे यमुना और इस मछली में कोई गहरा नाता हो। हां, नाता तो मुगल बादशाह जहांगीर का भी इस मछली से है। कैसे, इसे जानने के लिए अतीत के पन्ने पलटने होंगे।

भूपेंद्र कुमार

यमुना में पानी बढ़ते ही एत्माउद्दौला के मकबरे में बनी इस मछली की खोज-खबर लेना शुरू हो जाता है कि मछली डूबी या नहीं।

यमुना में विशालकाय नावें चलती थीं और व्यापारी सामान लाने-ले जाने के लिए जल मार्ग का इस्तेमाल करते थे। नाविकों के लिए मछली संकेतक का काम करती थी कि अभी नदी में उतरना कितना सुरक्षित हो सकता है।

जिस तरह अकबर को लाल बलुआ पत्थर से लगाव था, जहांगीर को संगमरमर से था। जहांगीर ने सबसे पहले संगमरमर की इमारतें तामीर कराईं। आगरा में यमुना नदी के बाएं किनारे पर चीनी का रोजा के पास स्थित एत्माउद्दौला कई मामलों में खास माना जाता है। संक्षेप में कहें, तो यह संगमरमर का बना नफीस-सा शृंगारदान लगता है, जिस पर बहुत सुंदर पच्चीकारी की गई है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के अनुसार, मुगल शासक जहांगीर ने अपनी बेगम नूरजहां के पिता मिर्जा ग्यास बेग की याद में यह इमारत बनवाई थी। मिर्जा बेग को ही एत्माउद्दौला की उपाधि दी गई थी। 1628 ईस्वी में यह पूरा बनकर तैयार हो गया था। मकबरे के पिछले हिस्से में यमुना तट पर एक इमारत है, जिसकी दीवार पर मुंह खोले मछली बनी है।

जानते हैं, इस मछली को बनाने की वजह क्या थी? दरअसल, मुगल काल में यमुना का इस्तेमाल नौवहन के लिए लिए होता था। यमुना में विशालकाय नावें चलती थीं और व्यापारी सामान लाने-ले जाने के लिए जल मार्ग का इस्तेमाल करते थे। नाविकों के लिए मछली संकेतक का काम करती थी कि अभी नदी में उतरना कितना सुरक्षित हो सकता है। नदी में उफान की स्थिति में पानी मछली के मुंह के अंदर चला जाता था, ज्यादा पानी हो, तो फिर मछली डूब जाती थी। इसका मतलब यह था कि अब नौकाओं को ले जाना सुरक्षित नहीं है। पानी का मछली के मुंह तक आ जाना इस बात का संकेत था कि इलाहाबाद तक यमुना की यह स्थिति है। मछली के निचले हिस्से को अगर पानी छूने लगे, तो इसका मतलब था कि आगरा और इटावा तक पानी उफान पर है। कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल म्यूजियम में यमुना के नौवहन से जुड़े नक्शे और चित्र प्रदर्शित हैं, उनमें भी मछली से बाढ़ के स्तर को मापने का जिक्र है। यह तब की बात है, जब यमुना में खूब पानी होता था। धीरे-धीरे पानी घटा और यमुना में नौवहन भी खत्म हो गया। लेकिन, वह मछली आज भी है, जो उन दिनों की याद दिलाती है।

आंकड़े

मोबाइल निर्यात

बीते एक दशक में भारत से मोबाइल फोन के निर्यात में वृद्धि दर्ज की जा रही है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति का सूचक है।

2016	0.22
2019	1.60
2022	5.80
2023	11.10
2025	24.10

आंकड़े भारत से मोबाइल फोन निर्यात के, अरब डॉलर में | स्रोत : ICEA, MoC&I, NR

महात्मा बुधगीर को राजा लक्ष्मण सिंह ने कुछ गांव दान में देने चाहे, तो उन्होंने कहा, 'मैं मां का भक्त हूं, वे ही मेरा ध्यान रखती हैं। आप गरीबों में अपना धन खर्च कर दें।'

मां रखती हैं मेरा ध्यान

पूर्व जन्म के संस्कारों की वजह से बालपन में ही महात्मा बुधगीर में वैराग्य पैदा हो गया। वह जयपुर के नुंवा गांव में संत लक्ष्मणगीर की शरण में पहुंचे और उनसे गुरु दीक्षा ली। गुरुदेव ने उन्हें हिंगलाज की देवी (वर्तमान में पाकिस्तान के कब्जे वाले बलूचिस्तान प्रांत में स्थित) के दर्शन करने की आज्ञा दी और कहा, 'मार्ग में अपने गुरुभाई घोरीबाबा से मिलना।'

गुरुदेव की आज्ञा के बाद वह उस स्थान पर पहुंचे, जहां घोरीबाबा रहते थे। घोरीबाबा ने कहा, 'हिंगलाज की देवी का मंदिर यहां से बहुत दूर है, मैं आपको उनके दर्शन यहीं पर करा देता हूं।' घोरीबाबा ने उन्हें अपने तपोबल से हिंगलाज की भवानी का दर्शन कराते हुए कहा, 'फतेहपुर से डेढ़ मील दूर बीहड़ में एक टीले पर जाकर माता की आराधना करो, वे वहीं पर प्रकट होकर न केवल तुम्हें दर्शन देंगी, बल्कि यहां के लोगों का भी कल्याण करेंगी।' गुरुभाई के कथनानुसार, बुधगीर महाराज ने वर्षों तक उस टीले पर तपस्या की और मां हिंगलाज ने प्रकट होकर उन्हें दर्शन दिया और वहीं पर जमीन से मां की मूर्ति निकली, जिसके बाद महात्मा बुधगीर की ख्याति चारों ओर फैल गई। महाराव राजा लक्ष्मण सिंह ने उन्हें कुछ गांव दान में देने का आग्रह किया, लेकिन उन्होंने कहा, 'मैं मां का भक्त हूं, वे ही मेरा ध्यान रखती हैं। आप गरीबों के कल्याण में अपना धन खर्च कर दें।' राजा लक्ष्मण सिंह ने ऐसा ही किया। महात्मा बुधगीर की समाधि पर राजा लक्ष्मण सिंह ने शिव मंदिर बनवाया।

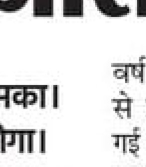

अंतर्यात्रा
संकलित

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 14 अक्तूबर, 1953

यूपी पंचवर्षीय योजना का खर्च 121 से 130 करोड़ रुपये हुआ

१२१ से १३० करोड़ हुआ

उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य के कल्याण के लिए जो पंचवर्षीय योजना बनाई थी, उसके खर्च को बढ़ाकर 121 करोड़ से 130 करोड़ रुपये कर दिया गया है। इसका ज्यादातर खर्च सिंचाई और सामूहिक विकास पर होगा।

टैरिफ, दीपावली और बाजारों की रौनक

अमेरिकी टैरिफ भी दिवाली से पहले बाजार की रौनक कम नहीं कर सका। अब सभी स्वदेशी उत्पाद खरीदने की ठान लें, तो सोने पर सुहागा होगा।

जयंतीलाल भंडारी

आर्थिकी

इस समय देश के त्योहारी बाजार स्वदेशी उत्पादों के साथ उत्साह और अभूतपूर्व खरीदी की रौनक से सराबोर हैं। ये बाजार मिट्टी के दीयों, देवी लक्ष्मी की मूर्तियों, पूजा के सामान, घर की सजावट के हल्पशिल्प के सामान, रंग-बिरंगी झालरों, शुभ-लाभ पट्टिकाओं और ओम जैसे सौभाग्य के प्रतीक सामानों से सुसज्जित दिखाई दे रहे हैं। इस बार गांवों और शहरों के बाजारों में बड़ी संख्या में व्यापारियों और दुकानदारों के द्वारा स्थानीय स्वदेशी सामानों को प्राथमिकता से बेचा जा रहा है।

पिछले दो महीनों में रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, नवदुर्गा और दशहरा के त्योहारी बाजारों में भी स्वदेशी राखियां, कृष्ण, गणपति, मां दुर्गा की मूर्तियां और रावण के स्वदेशी पुतलों की धूम रही। अब वह समय बीता हुआ दिखाई दे रहा है, जब त्योहार के सीजन में देश के बाजारों में दुकानें केवल सस्ते और आकर्षक चीनी सामानों से भर जाती थीं। इस बार पारंपरिक बाजारों से लेकर आधुनिक मॉल तक हर

जगह स्थानीय और स्वदेशी उत्पाद खरीदने के लिए उपभोक्ताओं का उत्साह चरम पर है।

गौरतलब है कि हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बार-बार यह भी कहा है कि त्योहारों पर हम ऐसे ही उत्पाद खरीदें, जिनमें देशवासियों के पसीने की महक हो, देश के युवाओं का टैलेंट हो। इन बातों का त्योहारी बाजार पर असर दिखाई दे रहा है। इस बार दीवाली के त्योहारी बाजार में अभूतपूर्व खरीदी का भी परिदृश्य दिखाई दे रहा है। इसके तीन बड़े कारण हैं। एक, इस वर्ष 22 सितंबर से जीएसटी सुधारों के लागू होने से लगभग सभी उपभोक्ता उत्पादों की कीमतें घट गई हैं। दो, महंगाई दर घटी हुई है और तीन, कृषि उत्पादन रिकॉर्ड स्तर पर है और ग्रामीणों की क्रयशक्ति बढ़ी हुई है।

निस्संदेह जीएसटी में सरलता और नए जीएसटी ढांचे के रोडमैप के तहत जीएसटी के चार टैक्स स्लैब में बदलाव करते हुए इन्हें घटाकर पांच फीसदी और 18 फीसदी स्लैब में बदलाव ने त्योहारी बाजार को नई ऊर्जा दी हैं। जीएसटी दरों में नए बदलाव से वर्तमान में 12 फीसदी जीएसटी वाली लगभग 99 फीसदी वस्तुएं अब पांच फीसदी के स्लैब में आ गई हैं, जबकि 28 फीसदी टैक्स वाली लगभग 90 फीसदी वस्तुएं 18 फीसदी के स्लैब में आ गई हैं।

नए जीएसटी सुधारों के कारण देश के लोगों के पास लगभग दो लाख करोड़ रुपये बचने के कारण इस त्योहार के सीजन में घरेलू खर्च और खपत बढ़ती हुई दिखाई दे रही है। खास तौर से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग (एमएसएमई) और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र के लगभग सभी पदार्थों पर जीएसटी दरों में कमी होने से खाद्य प्रसंस्करण और संबद्ध उद्योगों की बिक्री बढ़ गई है।

यह बात भी महत्वपूर्ण है कि त्योहारी बाजार में दोपहिया वाहनों, कारों, और ट्रैक्टरों पर कम जीएसटी से मांग बढ़ गई है। चाहे आम आदमी के इस्तेमाल की चीज हों, चाहे वे किसानों से जुड़ी वस्तुएं हों, चाहे वे मध्यम वर्ग से संबंधित वस्तुएं हों, प्रत्येक क्षेत्र में एमएसएमई को दी गई बड़ी जीएसटी राहत से त्योहारी बाजार को रफ्तार मिली है। जीएसटी की दरों में भारी कमी के साथ महंगाई दर में पिछले छह महीनों से लगातार कमी आई है और इस समय अक्तूबर में यह एक फीसदी के आसपास स्तर पर ही दिखाई दे रही है। इस वर्ष खाद्यान्न उत्पादन रिकॉर्ड स्तर पर है और मानसून ने भी खुशहाली दी है। इन सब से भी त्योहारी बाजार को ऊंचाई मिलती हुई दिख रही है।

निश्चित रूप से दिवाली के बाजार को जीएसटी दरों और महंगाई दर के घटने से उछाल मिला है। इस परिप्रेक्ष्य में कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट उल्लेखनीय है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, इस बार दिवाली का बाजार जहां करोड़ों लोगों के द्वारा स्वदेशी और वोकल फॉर लोकल की संकल्प शक्ति के साथ आत्मनिर्भर भारत की डगर पर दिखाई दे रहा है, वहीं इस वर्ष 2025 में देश के बाजारों में खरीदारों की भीड़ उमड़ने और घरेलू खपत चरम पर रहने की संभावना है।

वर्ष 2023 में दिवाली के त्योहारी बाजार में 3.75 लाख करोड़ रुपये और वर्ष 2024 में 4.25 लाख करोड़ रुपये की खरीदारी हुई थी, वहीं इस बार त्योहारी सीजन के तहत खरीदारी 4.75 लाख करोड़ रुपये के अभूतपूर्व स्तर को छूते हुए दिखाई दे सकती है। हम उम्मीद करें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वोकल फॉर लोकल के मंत्र से प्रेरणा लेते हुए देशवासी स्वदेशी और स्थानीय उत्पादों के उपयोग को जीवन का मूलमंत्र बनाएंगे। स्वदेशी और स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहन दिए जाने से देश में कुटीर और ग्रामीण उद्योगों तथा हस्तशिल्प को बढ़ावा मिलेगा और देश आत्मनिर्भरता की डगर पर भी तेजी से आगे बढ़ते हुए दिखाई देगा।

कैंपस डायरी

नीमा के सीएमई कार्यक्रम में 194 चिकित्सकों को मिले 10 क्रेडिट पॉइंट

नई दिल्ली। राष्ट्रीय एकीकृत चिकित्सा संघ (नीमा दिल्ली) ने जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय में सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रम का आयोजन किया। इस 10 क्रेडिट पॉइंट वाले कार्यक्रम में 194 पंजीकृत चिकित्सकों ने भाग लिया। यह मंच आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सा के क्षेत्र में नवीनतम ज्ञान साझा करने का माध्यम बना। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि अपर्णा और डॉ. मजाहिर आलम (एनसीआईएसएम) ने की, जबकि डॉ. रघुराम अय्यागरी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। चर्चा का विषय यूनानी व आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणालियों का एकीकरण, आधुनिक चुनौतियां और नैदानिक प्रगति रहा। नीमा दिल्ली के डॉ. शहाबुद्दीन ने बताया कि प्रतिभागियों को 10 क्रेडिट पॉइंट प्रदान किए जाएंगे, जो उनके रजिस्ट्रेशन रिन्यूअल में सहायक होंगे। कार्यक्रम में प्रमुख वक्ताओं में डॉ. जमीर अहमद और एएमयू तिब्बिया कॉलेज के प्राचार्य डॉ. जुबैर अहमद सहित अन्य विशेषज्ञ शामिल रहे। संवाद

डूसू पदाधिकारियों ने डीयू वीसी से की मुलाकात

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ (डूसू) 2025-26 के सभी पदाधिकारियों ने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह से सोमवार को औपचारिक मुलाकात की। कुलपति ने पदाधिकारियों को जीत की बधाई देते हुए प्रशासन के साथ मिलकर सकारात्मक काम करने की उम्मीद जताई। इस पर पदाधिकारियों ने विश्वविद्यालय एवं छात्र हितों में रचनात्मक सहयोग का आश्वासन दिया। डूसू पदाधिकारियों ने कुलपति के समक्ष अपने सुझाव और कुछ मांगें रखीं। इस पर डीयू कुलपति ने समाधान के निर्देश दिए। कुलपति से मुलाकात के दौरान डूसू अध्यक्ष आर्यन मान, उपाध्यक्ष राहुल झांसला, सचिव कुणाल चौधरी, संयुक्त सचिव दीपिका झा सहित डीन ऑफ कॉलेज प्रो. बलराम पाणी, रजिस्ट्रार डॉ विकास गुप्ता, कल्चर काउंसिल के अध्यक्ष अनूप लाठर सहित कई दूसरे अधिकारी मौजूद रहे। ब्यूरो

जामिया के कुलपति ने की सैयदना से मुलाकात

नई दिल्ली। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति प्रो. मजहर आसिफ और रजिस्ट्रार प्रो मोहम्मद महताब आलम रिजवी ने सूरत में कुलाधिपति (अमीर-ए-जामिया) सैयदना मुफद्दल सैफुद्दीन से मुलाकात की। दरअसल, सोमवार को हुई इस बैठक में विकास परियोजनाओं पर चर्चा की गई। इनमें एक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल की स्थापना, दंत चिकित्सा संकाय में एमडीएस कार्यक्रमों की शुरुआत और छात्राओं के लिए नए हॉस्टल का निर्माण शामिल है। मुलाकात के दौरान सैयदना ने जामिया की शैक्षणिक उत्कृष्टता की सराहना की और निरंतर समर्थन का आश्वासन दिया। इसके अलावा उन्होंने अलजामिया-तुस-सैफिया अरबी अकादमी और कौशल विकास केंद्रों का भी दौरा किया। संवाद

सत्र आधे से ज्यादा हो गया खत्म पाठ्य सामग्री अब तक नहीं मिली

एसओएल के छात्रों ने किया प्रदर्शन, यूजीसी के नियमों का दिया हवाला

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग (एसओएल) के छात्रों ने स्टडी सामग्री न मिलने सहित कई दूसरे मुद्दों पर सोमवार को नॉर्थ कैंपस स्थित एसओएल बिल्डिंग के बाहर प्रदर्शन किया। क्रांतिकारी युवा संगठन के बैनर तले आयोजित प्रदर्शन में छात्रों का आरोप है कि उन्हें स्टडी सामग्री उपलब्ध न होने से काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

क्रांतिकारी युवा संगठन (केवाईएस) दिल्ली राज्य समिति सदस्य भीम कुमार ने कहा कि यूजीसी नियमों के अनुसार सेमेस्टर शुरू होने के दो हफ्ते के अंदर छात्रों को स्टडी सामग्री उपलब्ध कराया जाना अनिवार्य है। दुर्भाग्य है कि सेमेस्टर आधे से ज्यादा खत्म होने के बावजूद ज्यादातर छात्रों को अभी तक उनका स्टडी मेटेरियल तक नहीं मिला है। यह न केवल यूजीसी के नियमों का उल्लंघन है बल्कि इससे छात्रों की परीक्षा तैयारी भी गंभीर रूप से प्रभावित हो रही है। एक अन्य गंभीर मुद्दा सिलेबस पूरा करने में कक्षाओं की अपर्याप्तता से संबंधित है। पहले से ज्यादा भारी फीस देने के बावजूद छात्रों को पहले की तरह सेमेस्टर में भी केवल 10 से 15 दिन की कक्षाएं मिल रही है जो सिलेबस पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। इतनी कम कक्षाओं के चलते छात्रों के लिए सिलेबस को अच्छे तरीके से समझकर परीक्षा की तैयारी कर पाना बेहद कठिन है। छात्रों की मांगों को प्रशासन जल्द पूरा करें।

एसओएल बिल्डिंग के बाहर प्रदर्शन करते छात्र। अमर उजाला

डीयू सेमेस्टर परीक्षा की संभावित तारीखों को लेकर विरोध

10 दिसंबर से अलग-अलग सेमेस्टर की परीक्षाएं होनी हैं शुरू

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) की ओर से दिसंबर/जनवरी 2025-26 सेमेस्टर परीक्षा की संभावित डेटशीट को लेकर शिक्षकों के बीच विरोध शुरू हो गया है। इसके विरोध में शिक्षकों के संघ ने मोर्चा खोल दिया है। डीयू प्रशासन से डेटशीट में संशोधन की मांग की गई है। इस मुद्दे को एकेडमिक काउंसिल में भी उठाया जा रहा है।

डेमोक्रेटिक टीचर्स फ्रंट की सचिव आभा देव हबीब ने बताया कि सेमेस्टर 1,3,5 और सात को लेकर डीयू ने संभावित डेटशीट जारी की है। परीक्षाएं दस दिसंबर 2025 से शुरू होकर 30 जनवरी 2026 को समाप्त होंगी। इस बीच सेमेस्टर कक्षाएं दो जनवरी से शुरू होंगी। ऐसे में परीक्षा के साथ कक्षाओं का आयोजन कैसे संभव होगा। रेगुलर कॉलेज में ढाई लाख छात्र पढ़ते हैं। जबकि एनसीवेब और एसओएल की परीक्षाएं भी होनी है।

शिक्षकों को अगले सेमेस्टर के पाठ्यक्रम पढ़ाने के साथ-साथ परीक्षा संबंधी कार्य निरीक्षण और मूल्यांकन भी एक साथ करना होगा। ऐसे में छात्रों को पढ़ाना संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि छात्र परीक्षा के साथ सेमेस्टर की पढ़ाई कैसे कर सकेंगे। दो जनवरी से शुरू होने वाले सेमेस्टर को देरी से भी शुरू किया जा सकता है। प्रशासन से इसमें संशोधन की मांग करेंगे और एकेडमिक काउंसिल में भी इस मुद्दे को उठाया जाएगा। ब्यूरो

जेएनयू छात्र संघ चुनाव के लिए स्कूल जीबीएम अंतिम दौर में

चुनाव समिति संयोजक का हफ्ते के आखिर तक होगा चयन

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) छात्र संघ चुनाव 2025-26 को लेकर तैयारियां जारी है। अलग-अलग स्कूल और सेंटरों में जनरल बॉडी मीटिंग (जीबीएम) आयोजित की जा रही है।

इस हफ्ते के आखिरी तक चुनाव समिति संयोजक का चयन कर लिया जाएगा। उसके बाद चुनाव को लेकर कार्यक्रम जारी होगा। जेएनयू छात्र संघ की सचिव मुंतेहा फातिमा ने बताया कि छोटे-छोटे स्कूल में जीबीएम पूरी हो चुकी है। स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, स्कूल ऑफ लैंग्वेज और स्कूल ऑफ सोशल साइंस में जीबीएम का आयोजन होना बाकी रह गया है। इस जीबीएम में स्कूल काउंसलर की ओर से रिपोर्ट भी पेश की जा रही है। साथ ही चुनाव समिति सदस्यों का चयन किया जा रहा है। 48 सदस्यों के चयन के बाद सर्वसम्मति से चुनाव समिति संयोजक का चयन होगा। फिर संयोजक चुनाव कार्यक्रम की घोषणा करेंगे।

जेएनयू छात्र संघ चुनाव को लेकर डीन छात्र कार्यालय पहले ही अधिसूचना जारी कर चुका है। शिकायत निवारण प्रकोष्ठ (जीआरसी)/उप समिति का गठन भी कर दिया गया है।

सीपीआर का प्रशिक्षण लेते छात्र। अमर उजाला

एम्स में स्कूली छात्रों ने सीखे सीपीआर के गुर

नई दिल्ली। अचानक हार्ट अटैक होने पर कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन (सीपीआर) देने से किसी की भी जान बच सकती है। ऐसे में सीपीआर देने के लिए स्कूली छात्रों को भी तैयार किया जा रहा है। सोमवार को एम्स में छह स्कूलों के 400 से अधिक स्कूली छात्रों को सीपीआर देने का प्रशिक्षण मिला। इसके उद्घाटन समारोह में एम्स निदेशक प्रो. एम श्रीनिवास, कार्डियोलॉजी विभाग के डॉ. अंबुज रॉय सहित कई दूसरे डॉक्टर मौजूद रहे। ब्यूरो

एनआईओएस छात्रों की मिड टर्म परीक्षा नवंबर में

यूनिट टेस्ट दिसंबर-जनवरी में और प्री बोर्ड परीक्षा फरवरी-मार्च में होंगी

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। शिक्षा निदेशालय ने राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा संस्थान (एनआईओएस) के छात्रों के लिए मिड टर्म परीक्षा सहित यूनिट टेस्ट और प्री बोर्ड परीक्षा को लेकर शेड्यूल जारी कर दिया गया है। निदेशालय के सर्कुलर के अनुसार शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए कक्षा दसवीं के छात्रों की मिड टर्म परीक्षाएं छह से शुरू होकर 18 नवंबर को समाप्त होंगी।

सुबह और सामान्य पाली वाले स्कूलों में परीक्षा का आयोजन सुबह दस से लेकर दोपहर 12 बजे तक और शाम की पाली वाले स्कूलों में दोपहर दो से लेकर शाम चार बजे तक परीक्षाएं होंगी। छह नवंबर को होम साइंस विषय, सात नवंबर को डाटा एंट्री ऑपरेशन, 10 नवंबर को सोशल साइंस, 12 नवंबर को इंग्लिश, 14 नवंबर को हिंदी, 15 नवंबर को साइंस एंड टेक्नोलॉजी, 17 नवंबर को संस्कृत और 18 नवंबर को आखिरी परीक्षा पेंटिंग विषय की होगी।

वहीं छात्रों की यूनिट टेस्ट दिसंबर 2025 और जनवरी 2026 में होंगे। जबकि प्री बोर्ड की परीक्षाएं फरवरी-मार्च 2026 में होंगी। सर्कुलर में एनआईओएस सेंटर को 31 अक्तूबर तक साप्ताहिक सिलेबस पूरा करने के निर्देश दिए गए है।

सरकारी स्कूलों में दिव्यांग बच्चों को मिलेंगी बेहतर सुविधाएं

नई दिल्ली। शिक्षा निदेशालय की ओर से राजधानी के सभी सरकारी स्कूलों में दिव्यांग बच्चों और कर्मचारियों के लिए बेहतर सुविधाएं लागू करने के आदेश जारी किए गए हैं। यह पहल दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के तहत लागू की गई है। इसका उद्देश्य समावेशी शिक्षा और बाधा-मुक्त वातावरण उपलब्ध कराना है।

अपर शिक्षा निदेशालय ने आदेश दिए हैं कि सभी स्कूलों में बने रैंप पूरी तरह साफ, मजबूत और फिसलन-रहित होने चाहिए, ताकि दिव्यांग बच्चों को आने-जाने में किसी तरह की बाधा न आए। उन्होंने कहा कि दिव्यांग छात्रों की कक्षाएं भूतल पर रखी जाएं और सभी सीढ़ियों के दोनों ओर रेलिंग लगाई जाए, जिससे उनकी सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। इसके अलावा नेत्रहीन छात्रों और शिक्षकों के लिए कक्षाएं एक ही भवन में लगाई जाए, ताकि उन्हें आवागमन में परेशानी न हो। निदेशालय का कहना है कि विशेष शिक्षकों (एसईटी) को केवल दिव्यांग बच्चों के साथ कार्य करने के लिए नियुक्त किया जाए और उन्हें अन्य कार्यों में नहीं लगाया जाएगा। साथ ही स्कूलों में दिव्यांग छात्रों के लिए सुलभ खेल मैदान और साफ-सुथरे, संशोधित शौचालय की व्यवस्था करना भी अनिवार्य होगा। ब्यूरो

सीईटी-2025, एमवीपीपी और एनएमएमएस परीक्षाओं की पंजीकरण की समयसीमा बढ़ाई

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय ने सीईटी-2025, मुख्यमंत्री विज्ञान प्रतिभा परीक्षा (एमवीपीपी) और राष्ट्रीय साधन-सह-योग्यता छात्रवृत्ति परीक्षा (एनएमएमएस) के लिए छात्रों के ऑनलाइन पंजीकरण की समय सीमा बढ़ा दी है। अब सभी पात्र छात्र 16 अक्तूबर 2025 तक पंजीकरण करा सकते हैं।

पहले सीईटी-2025 के लिए पंजीकरण की अंतिम तिथि 30 सितंबर और एमवीपीपी व एनएमएमएस के लिए 4 अक्तूबर तय की गई थी। ऐसे में स्कूल प्रमुखों ने मध्यावधि परीक्षाओं के कारण पंजीकरण के लिए और समय देने की मांग की थी। शिक्षा निदेशालय ने इसको ध्यान में रखते हुए समय सीमा बढ़ा दी है। ब्यूरो

एसआरसीसी खो-खो लीग में खिलाड़ियों ने दिखाया हुनर

चार मुकाबले में से एक बराबरी पर हुआ खत्म, तीन दिवसीय लीग का आगाज

city sports

संवाद न्यूज एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के स्वदेशी खेलों को पुनर्जीवित करने के लिए एसआरसीसी खो-खो लीग का आयोजन किया जा रहा है। इसमें अमर उजाला मीडिया सहयोगी की भूमिका निभा रहा है, जिसमें खिलाड़ियों ने सोमवार को बड़े उत्साह के साथ अपना हुनर दिखाया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के एसआरसीसी कॉलेज में तीन दिवसीय चलने वाले इस खेल में पहले दिन कुल चार मुकाबले खेले गए, जिसमें से एक मुकाबला बराबरी पर खत्म हुआ। खेल की शुरुआत सांस्कृतिक कार्यक्रम और मशाल जलाकर की गई। इस दौरान विभागाध्यक्ष डॉ. कुलजीत कौर, उप-प्रधानाचार्य प्रो. अरुण झा, मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय शतरंज खिलाड़ी वंतिका अग्रवाल और विशिष्ट अतिथि के रूप में निर्मला भाटी मौजूद रहीं। बताते चलें कि इस चैंपियनशिप में कुल छह टीमों ने हिस्सा लिया। इसमें मगध वॉरियर्स, मराठा स्ट्राइकर्स, पंजाब पैंथर्स, राजस्थान लायंस, तमिल टाइगर्स और अवध फाइटर्स शामिल हैं।

कार्यक्रम के दौरान नृत्य प्रस्तुत करते विद्यार्थी। अमर उजाला

पहला मुकाबला पंजाब पैंथर्स और मराठा स्ट्राइकर्स के बीच खेला गया। इस मुकाबले में मराठा स्ट्राइकर्स ने एक अंक से जीत हासिल की। मराठा स्ट्राइकर्स ने मुकाबले में 15 अंक, जबकि चुनौती देते हुए पंजाब पैंथर्स ने 14 अंक हासिल किए थे।

दूसरा मुकाबला मगध वॉरियर्स और राजस्थान लायंस के बीच खेला गया। इसमें मगध वॉरियर्स ने तीन अंक से जीत दर्ज की। मगध वॉरियर्स ने 23 अंक प्राप्त किए, जबकि राजस्थान लायंस ने 20 अंक हासिल किए। इसके अलावा तीसरा मुकाबला अवध फाइटर्स और तमिल टाइगर्स के बीच हुआ।

इसमें अवध फाइटर्स ने चार अंक की बढ़त से बाजी मारी। उसने 20 अंक दर्ज किए, जबकि तमिल टाइगर्स 16 अंक ही हासिल कर सके। वहीं, चौथा मुकाबला पंजाब पैंथर्स और मगध वॉरियर्स के बीच खेला गया। यह मुकाबला 19-19 के साथ बराबरी पर समाप्त हुआ।

दिल्ली में 15 से शुरू होगी एशिया की सबसे बड़ी रेलवे प्रदर्शनी

भारत मंडपम में तीन दिवसीय प्रदर्शनी का होगा आयोजन

नई दिल्ली। भारतीय उद्योग परिसंघ की ओर से एशिया की सबसे बड़ी अंतरराष्ट्रीय रेलवे उपकरण प्रदर्शनी इंटरनेशनल रेलवे इक्विपमेंट एग्जिबिशन (आईआरईई) 2025 का आयोजन 15 से 17 अक्तूबर तक भारत मंडपम में किया जाएगा।

भारतीय रेल के सहयोग से आयोजित प्रदर्शनी में देश-विदेश की अग्रणी कंपनियां हिस्सा लेंगी। इसका उद्देश्य रेलवे क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीकों, सतत विकास और स्मार्ट मोबिलिटी को प्रोत्साहित करना है। भारतीय उद्योग परिसंघ व्यापार मेला परिषद के अध्यक्ष बी. थियागराजन ने कहा कि आईआरईई भारतीय रेल और वैश्विक उपकरण निर्माताओं के बीच सहयोग का एक सशक्त मंच है। सैनमार मैट्रिक्स मेटल्स लिमिटेड के प्रबंध निदेशक नारायण सेथुरामन ने कहा कि भारतीय रेल 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' की सच्ची भावना को दर्शाती है। ब्यूरो

सफदरजंग अस्पताल में नया बर्न ओपीडी ब्लॉक शुरू

वर्चुअल क्लीनिकल एनाटॉमी प्रयोगशाला का भी उद्घाटन

नई दिल्ली। हादसों में झुलसे मरीजों के लिए सफदरजंग अस्पताल में नए बर्न ओपीडी ब्लॉक की शुरुआत की गई है। सोमवार को इसका उद्घाटन अस्पताल निदेशक डॉ. संदीप बंसल ने किया। नया ओपीडी ब्लॉक आधुनिक सुविधाओं से लैस है, जिसमें पुरुष, महिला और बच्चों के लिए अलग ड्रेसिंग सूट, एडवांस स्टेरलाइजेशन सिस्टम और निजता की व्यवस्था की गई है।

साथ ही बर्न इमरजेंसी एंड कैजुअल्टी यूनिट में बेड की संख्या एक से बढ़ाकर दस कर दी गई है। इमरजेंसी में अब बेड की कमी की समस्या नहीं होगी। यूनिट में प्रशिक्षित स्टाफ चौबीसों घंटे मौजूद रहेगा और फिजियोथेरेपी व रिहैबिलिटेशन की भी सुविधा दी जाएगी। डॉ. बंसल ने इस मौके पर वर्चुअल क्लीनिकल एनाटॉमी प्रयोगशाला का भी उद्घाटन किया, जिसमें ढाई करोड़ रुपये की लागत से एनाटोमेज टेबल लगाई गई है। यह इंटरैक्टिव 3डी एनाटॉमी विजुअलाइजेशन सिस्टम है, जिससे वर्चुअल पोस्टमार्टम किया जा सकेगा। अस्पताल का दावा है कि दिल्ली-एनसीआर में इस सुविधा वाला यह पहला अस्पताल है। ब्यूरो

बर्न ओपीडी ब्लॉक। अमर उजाला

एम्स में पहली बार संपूर्ण रामलीला का मंचन आज

नई दिल्ली। एम्स में दीपोत्सव-2025 के तहत पहली बार मंगलवार को संपूर्ण रामलीला का मंचन किया जाएगा। एम्स के जेएल ऑडिटोरियम में शाम पांच बजे से आयोजित होने वाले रामलीला मंचन को आम लोग भी देख सकेंगे। नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन और अंतरराष्ट्रीय रामलीला महोत्सव के तत्वावधान में रघुकुल नायक श्रीरामलीला मंचन का आयोजन किया जा रहा है।

ऑर्गेनाइजेशन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य प्रोफेसर संजय राय ने बताया कि आरडीए, कर्मचारी यूनियन सहित सहित कई दूसरे संगठन मिलकर रामलीला मंचन का पहली बार आयोजन कर रहे है। संस्था के सदस्य कनिष्क यादव ने बताया कि तीन घंटे की संपूर्ण रामलीला होगी। एक हजार लड्डू का भोग लगाया जाएगा। भगवान राम की 100 दीयों से आरती होगी। उससे पहले अंधकार पर रोशनी की विजय विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। ब्यूरो

आर्ट लाउंज निर्वाण में अपर्णा बनर्जी की एकल प्रदर्शनी

नई दिल्ली। आर्ट लाउंज निर्वाण में अपर्णा बनर्जी की एकल प्रदर्शनी 'द सेक्रेड वाइल्ड' दिखाई जा रही है। इसे सुभो सेनगुप्ता ने बीकानेर हाउस स्थित कलमकार गैलरी में क्यूरेट किया है। यह प्रदर्शनी प्रकृति और मानव आत्मा के बीच के गहरे और रहस्यमय संबंध का जश्न मनाती है।

प्रदर्शनी में अपर्णा बनर्जी ने अपनी कला के माध्यम से प्राकृतिक दुनिया की अदम्य सुंदरता को जीवंत और भावपूर्ण अंदाज में दर्शाया है। उनके चित्र और कलाकृतियां दर्शकों को सोचने पर मजबूर करती हैं कि कैसे प्रकृति और मानव जीवन आपस में जुड़े हुए हैं। यह प्रदर्शनी कला प्रेमियों के लिए 14 अक्तूबर तक खुली रहेगी। बता दें कि द सेक्रेड वाइल्ड न केवल प्राकृतिक सुंदरता को प्रदर्शित करती है, बल्कि दर्शकों को आत्म-निरीक्षण और प्रकृति के महत्व को समझने का अवसर भी देती है। कला प्रेमियों के लिए यह प्रदर्शनी अनदेखी न करने वाली अनुभवों में से एक साबित होगी। संवाद

महिलाओं पर केंद्रित फिल्म फेस्टिवल का आयोजन

नई दिल्ली। इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (आईआईसी) स्थित सीडी देशमुख ऑडिटोरियम में अ फेस्टिवल ऑफ द आर्ट्स का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का विशेष आकर्षण महिलाओं पर केंद्रित फिल्म फेस्टिवल है, जिसमें महिलाओं की कहानियों और उनकी भूमिका को केंद्र में रखते हुए कई महत्वपूर्ण फिल्में दिखाई जाएंगी। फेस्टिवल की शुरुआत सुबह 10 बजे महेश भट्ट की हिंदी फिल्म अर्थ (1982) से होगी, जिसकी अवधि 138 मिनट है। इसके बाद दोपहर 1 बजे अमेरिकी क्लासिक ऑल अबाउट ईव (1950) दिखाई जाएगी, जिसे छह अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिसमें बेस्ट पिक्चर भी शामिल है। इसके अलावा रात 8:30 बजे हिंदी फिल्म रुदाली (1993) का प्रदर्शन होगा, जिसे कल्पना लाजमी ने निर्देशित किया है। संवाद

म्यांमार चुनाव और उसके परिणामों पर भारतीय दृष्टिकोण पर चर्चा

नई दिल्ली। भारत में म्यांमार चुनाव और उसके बाद की स्थिति पर विशेषज्ञों ने विस्तृत चर्चा की। इंडिया फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित इस पैनल चर्चा में कई वरिष्ठ विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया। पैनल का संचालन इंडिया फाउंडेशन के कार्यकारी उपाध्यक्ष आलोक बंसल ने किया। उस दौरान चर्चा में राजिंदर खन्ना, रामी निरंजन देसाई, ओम प्रकाश दास और राजीव भाटिया मौजूद रहे। वहीं, पैनल ने म्यांमार में हालिया चुनावों के राजनीतिक और सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण किया। संवाद

पुष्य नक्षत्र में आज बन रहा खरीदारी का राजयोग

14 से 15 अक्तूबर की शाम तक रहेगा नक्षत्रों के राजा पुष्य नक्षत्र का मान

चल-अचल संपत्ति के साथ वाहन और भूमि खरीदने के लिए सर्वोत्तम मुहूर्त

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। दीपों के महापर्व दीपावली से पहले ही पुष्य नक्षत्र, अमृतसिद्धि, सर्वार्थ सिद्धि और सिद्धि राजयोग का महासंयोग बन रहा है। सबसे सर्वोत्तम मुहूर्त 14 और 15 अक्तूबर को बनने वाला पुष्य नक्षत्र का संयोग है।

चल-अचल संपत्ति के साथ वाहन और आभूषण की खरीददारी का यह सबसे उत्तम मुहूर्त है। मंगलवार को शुरूआत होने के कारण अचल संपत्ति की खरीददारी तो बेहद लाभदायक होगी। काशी विश्वनाथ मंदिर न्यास के पूर्व सदस्य ज्योतिषाचार्य पं. दीपक मालवीय ने बताया कि 14 अक्तूबर की शाम को 5:28 बजे पुष्य नक्षत्र की शुरूआत हो रही है जो अगले दिन 15 अक्तूबर की शाम 4:49 बजे तक रहेगा। दीपावली और धनतेरस से पहले यह खरीददारी के लिए शानदार मुहूर्त मिल रहा है।

सभी नक्षत्रों में सर्वाधिक शुभ होने के कारण इसे नक्षत्रों का राजा भी कहते हैं। शास्त्रों में पुष्य को सौ दोषों को दूर करने वाला, शुभ कार्य में निश्चित सफलता दिलाने वाला और बहुमूल्य वस्तुओं की खरीददारी के लिए सबसे श्रेष्ठ एवं शुभ फलदायी मुहूर्त माना जाता है।

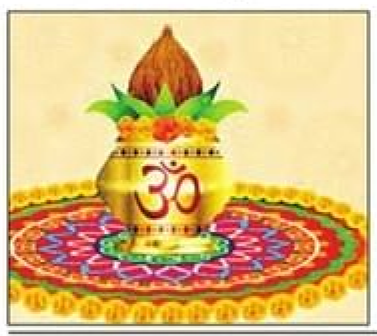

पुष्य नक्षत्र में खरीदें

अचल संपत्ति - मकान, प्लॉट, फ्लैट, कृषि भूमि और व्यावसायिक संपत्ति।

चल संपत्ति - सोना, चांदी, हीरा, प्लेटिनम के आभूषण। ऑटोमोबाइल (चार पहिया वाहन, दोपहिया वाहन), इलेक्ट्रॉनिक सामान में फ्रिज, टीवी, वॉशिंग मशीन, लैपटॉप, माइक्रोवेव ओवन आदि।

सिद्ध और साध्य योग का भी रहेगा प्रभाव

पुष्य नक्षत्र के राजयोग में 14 और 15 अक्तूबर को पुष्य नक्षत्र के महामुहूर्त में सिद्ध और साध्य योग भी निर्मित हो रहे हैं। यह दोनों योग निवेश को फलदायक बनाते हैं। ज्योतिषाचार्य दैवज्ञ कृष्ण शास्त्री ने बताया कि मंगल पुष्य नक्षत्र में भूमि या भवन के क्षेत्र में निवेश सर्वाधिक लाभकारी होगा। इस महामुहूर्त का निवेश लंबे समय तक स्थिर लाभ प्रदान करेगा।

प्रदर्शनी | जनपथ हैंडलूम हाट की 'सूत्रों का सफर' प्रदर्शनी में छाईं यूपी–बिहार की साड़ियां

मिथाली की पेंटिंग वाली बनारसी साड़ियां बनीं महिलाओं की पहली पसंद

काजल कुमारी

नई दिल्ली। जनपथ स्थित हैंडलूम हाट में चल रही 'सूत्रों का सफर' प्रदर्शनी के चौथे दिन मिथाली की पेंटिंग वाली बनारसी साड़ियां महिलाओं की खास पसंद बनी हुई हैं। पारंपरिक बुनाई और आधुनिक कला का सुंदर संगम पेश करती इन साड़ियों की रंग और डिजाइन की विविधता ने खरीदारों को खूब आकर्षित किया है।

बिहार से आए हस्तशिल्प बुनकर मोहम्मद सुहैल ने बताया कि हाथी की कारीगरी उनके परिवार में पीढ़ियों से चली आ रही है। उन्होंने कहा, इस बार महिलाओं की पहली पसंद मिथाली की पेंटिंग वाली साड़ी बनी है। खास बात यह है कि इस साड़ी को इस साल बजट पेश करते समय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी पहना था, जिसके बाद इसकी मांग और बढ़ गई। बनारस के बुनकर मोहम्मद नौशाद ने कहा कि वे दूसरी पीढ़ी के कारीगर हैं और यह प्रदर्शनी उन्हें दिल्ली जैसे बड़े बाजार में अपनी कला दिखाने का अवसर देती है। ऐसे आयोजनों से हमें सीधे ग्राहकों की पसंद-नापसंद समझने का मौका मिलता है।

खरीदारी करतीं महिला। अमर उजाला

ग्राहकों की राय : खरीदार सोनिया ने बताया कि दिल्ली के सामान्य बाजारों में असली बनारसी साड़ी मिलना मुश्किल होता है, लेकिन इस प्रदर्शनी में शुद्ध बनारसी सिल्क साड़ियों की बेहतरीन क्वालिटी और डिजाइन मिल रहे हैं।

16 तक रहेगी : 'सूत्रों का सफर' प्रदर्शनी 16 अक्तूबर तक प्रतिदिन सुबह 11 बजे से रात आठ बजे तक हैंडलूम हाट में जारी रहेगी।

देशभर से आए कारीगर : वस्त्र मंत्रालय की इस प्रदर्शनी में देशभर के 75 बुनकर, स्वयं सहायता समूह और सहकारी समितियां भाग ले रही हैं। आंध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और कश्मीर से आए बुनकर अपने पारंपरिक वस्त्र साड़ियां, सूट प्रदर्शित कर रहे हैं।

प्रेरणा

जीवन की असली चमक वहीं है, जहां उम्मीद कभी खत्म न हो।- हेनरी डेविड थोरो

संपादकीय

किसानों की वास्तविक आमदनी बढ़ाने की जरूरत

पिछले हफ्ते सरकार ने रबी फसल की एमएसपी घोषित की। इसमें असाधारण रूप से नीतिगत दोष के तहत गेहूं का एमएसपी (सीएसीपी द्वारा निर्धारित ए-2 एफ-एल लागत मूल्य- 1239 रु.) दूने से ज्यादा 2585 रु. (जो कि 109% है) घोषित किया गया है जबकि दलहन और तिलहन की फसलों का औसतन 60-70%। यानी गेहूं बोने वाले किसानों को वरीयता दी गई है। साथ ही सरकारी खरीद भी गेहूं और चावल की ज्यादा होती है, जबकि दलहन और तिलहन उपेक्षित रहते हैं। नतीजा यह है कि सरकार के पास पिछले कुछ वर्षों से भंडारण सीमा से कई गुना ज्यादा गेहूं-चावल गोदामों में चूहों की खुराक बनते रहे हैं और एफसीआई कंगाल होता रहा है। यहां तक कि गेहूं की नई एमएसपी दर अंतरराष्ट्रीय बाजार की दर से भी 29-30% ज्यादा है। रखरखाव और अंतिम खपत बिंदु तक पहुंचाने में सरकार को हर किलो गेहूं पर कम से कम 12-15 रुपया प्रशासनिक खर्च लगता है। अब तस्वीर का दूसरा पहलू देखें। किसानों को दूने से ज्यादा लागत मिलने के बाद भी किसान फटेहाल क्यों है? क्यों उसके बच्चे नोएडा, केरल, तमिलनाडु, पंजाब और गुजरात में मजदूरी करने को मजबूर हैं? क्यों देश के 2050 किसान रोजाना खेती छोड़ शहरों में ठेला चलाते हैं? और क्यों कई वर्षों से हर 48 मिनट पर एक किसान आत्महत्या कर रहा है? किसान की वास्तविक आय बढ़ानी होगी।

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

हर चीज के आरम्भ, मध्य और अंत में ईश्वर को रखें

कथाओं के केंद्र में ईश्वर ही होता है। उसकी प्रस्तुति सब अपने-अपने ढंग से करते हैं। इसी से वक्ता की प्रतिष्ठा स्थापित होती है। कुछ वक्ता कथा में गिमिक्स जोड़ लेते हैं- नाच, गाना, किस्से, कहानी। समझदार श्रोता उसमें ईश्वर ढूंढता रहता है। शंकर जी कहते हैं कि सत्संग में ऐसी कथा सुनी जाए, जिसके आदि, मध्य और अंत में भगवान श्रीराम हों- जेहि महुं आदि मध्य अवसाना, प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना। इस मामले में व्यास जी, जिन्होंने वेद-पुराण की रचना की- अद्‌भुत थे। उनका हर दृश्य ईश्वर से आरम्भ होता, मध्य में ईश्वर के दिए हुए संदेश गुजरते और समापन पर पुन: परम-शक्ति को वो स्थापित कर देते। इस हुनर में तुलसीदास जी भी गजब के निकले। रामचरितमानस में जितने दृश्य आते हैं, अगर हम बारीकी से ढूंढें तो आरम्भ, मध्य और अंत में हम ईश्वर को पा लेंगे। तो क्यों ना हम इस तरीके को जीवन की हर गतिविधि से जोड़ें। जो भी करें, तीनों समय ईश्वर को साथ रखें- आरंभ, मध्य और अंत में। • Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

नजरिया • हमारी भावनाएं इतनी आहत क्यों होती हैं?

सीजेआई पर फेंके जूते का निशाना न्याय व्यवस्था थी

जस्टिस

राजदीप सरदेसाई
वरिष्ठ पत्रकार
rajdeepsardesai52@gmail.com

एक सवाल है। अगर सीजेआई पर कोर्ट में जूता फेंकने वाले वकील का नाम राकेश किशोर के बजाय रहीम खान होता तो क्या होता? क्या उसे बिना सजा छोड़ा जाता? या उस पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून, जन सुरक्षा कानून (अगर वो कश्मीरी मुसलमान होता तो) या गैरकानूनी गतिविधि निरोधक कानून के तहत आरोप लगाए जाते? यहां मेरा मकसद किसी को भड़काना नहीं, बल्कि उस इको-सिस्टम को उजागर है, जिसमें लोगों की धारणाएं न्याय प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं।

पिछले महीने सीजेआई गवई ने खजुराहो के एक मंदिर में भगवान विष्णु की क्षतिग्रस्त मूर्ति के पुनर्निर्माण की याचिका खारिज कर दी थी। इसे जनहित याचिका के बजाय 'प्रचार-हित याचिका' बताते हुए गवई ने कहा था कि याचिकाकर्ता को याचिका दायर करने के बजाय स्वयं भगवान से ही कुछ करने के लिए कहना चाहिए। यहां पर जज का यह व्यंग्यात्मक लहजा यकीनन गैरजरूरी था। लेकिन ध्यान रखें कि ये महज टिप्पणियां थीं। याचिका तो इसलिए खारिज की गई, क्योंकि कोर्ट ने कहा कि इस पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण निर्णय करेगा।

लेकिन सोशल मीडिया पर बैठी 'हथियारबंद' सेना के पास फैसले के तर्क पढ़ने का समय कहां था? उन्माद फैलाने के लिए जस्टिस गवई की टिप्पणी ही काफी थी। सुनियोजित आक्रोश ने सीजेआई को यह सफाई देने को मजबूर कर दिया कि वे सभी धर्मों में आस्था रखते हैं, सभी प्रकार के धर्मस्थलों में जाते हैं और 'सच्ची धर्मनिरपेक्षता' में उनका भरोसा है। लेकिन यह स्पष्टीकरण आक्रोशित भीड़ को शांत करने के लिए काफी नहीं था। मीम्स, हैशटैग और यूट्यूब वीडियो के जरिए गवई की निंदा चलती रही। इसी तनावपूर्ण माहौल में एक 71 वर्षीय वकील ने गवई पर जूता फेंकने का फैसला कर लिया। 'सनातन धर्म का अपमान, नहीं सहेगा हिंदुस्तान'। ऐसी किसी घटना पर दिल्ली पुलिस स्वत: संज्ञान लेकर कार्रवाई करती, लेकिन उसने हाथ बांधे रखे। गवई ने बड़ी गरिमा के साथ इस मामले में मुकदमा दर्ज कराने से इनकार कर दिया, लेकिन उन वकील ने कहा- 'मैं फिर से ऐसा करूंगा'। मानो, उन्हें भरोसा हो कि अदालत की स्पष्ट अवमानना के बावजूद कानून उन्हें छू भी नहीं सकता।

हमें इस पर अचम्भा भी नहीं होना चाहिए। क्योंकि कानून मंत्री अर्जुन मेघवाल ने भी इस मामले पर चुप्पी साधे रखी। प्रधानमंत्री को यह ट्वीट करने में आठ घंटे लगे कि जूता फेंकना 'एक निंदनीय कार्य है, जिसने हर भारतीय को नाराज किया है।' प्रधानमंत्री के कड़े शब्द स्वागतयोग्य हैं, लेकिन याद करें कि जब 2019 में भाजपा सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर ने गोडसे का महिमामंडन किया था, तब भी पीएम ने कहा था कि वे प्रज्ञा को कभी भी पूरी तरह माफ नहीं कर पाएंगे। लेकिन साध्वी के खिलाफ ठोस कार्रवाई नहीं की गई।

एडवोकेट किशोर भी ऐसी ही विचारधारा का हिस्सा हैं, जहां कोई भी खुद को सनातन का 'रक्षक' मान बैठता है। अंतर बस इतना है कि गोडसे की तुलना में किशोर ने गुस्सा निकालने के लिए एक अपेक्षाकृत निरापद हथियार को चुना। लेकिन दोनों ही मामलों में निहित असहिष्णुता की मानसिकता से इनकार नहीं किया जा सकता। कथित तौर पर 'हिंदुओं की भावनाओं को ठेस' पहुंचाने वाला कोई भी कृत्य हिंसक प्रतिक्रिया के लिए काफी है। ये लोग उन इस्लामिस्टों से कितने अलग हैं, जो भावनाएं आहत होने का दावा करते हुए 'सर तन से जुदा' का नारा लगाते हैं? आहत भावनाओं के गणतंत्र में हिंसा का सामान्यीकरण क्यों किया जाता है?

इस मामले का एक और पहलू परेशान करने वाला है। जस्टिस गवई सीजेआई के उच्च संवैधानिक पद पर

जूता फेंकने की घटना केवल जस्टिस गवई ही निशाने पर नहीं थे। उसका लक्ष्य तार्किक और निष्पक्ष समझी जाने वाली न्यायिक व्यवस्था को कमजोर करना था। आहत भावनाओं के गणतंत्र में हिंसा का सामान्यीकरण क्यों किया जाता है?

आसीन हुए दलित वर्ग के दूसरे व्यक्ति हैं। उनके पिता आरएस गवई रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया आंदोलन में एक प्रमुख चेहरा थे। जस्टिस गवई का इस पद तक पहुंचना किसी आम्बेडकरवादी के लिए एक ऐसे समाज का सपना पूरा होने जैसा है, जिसमें उत्पीड़ित जातियों के लिए समान अवसर उपलब्ध हों। दलित आंदोलन वाले परिवार की पृष्ठभूमि से होने के कारण जस्टिस गवई के लिए ऐसे सुनियोजित हमलों का जोखिम और बढ़ जाता है। एक साल पहले जब जस्टिस गवई ने 'बुलडोजर न्याय' के खिलाफ एक आदेश देते हुए इसे असंवैधानिक बताया था, तब भी वे दक्षिणपंथियों के ऑनलाइन दुष्प्रचार अभियान के शिकार बने थे।

इसीलिए जूता फेंकने की घटना को वैसे ही देखना चाहिए, जैसी वह है- एक धर्मनिरपेक्ष संवैधानिक ढांचे में किसी धर्म की सर्वोच्चता थोपने की कोशिश। उसका निशाना जस्टिस गवई नहीं थे, उसका लक्ष्य तार्किक और निष्पक्ष समझी जाने वाली न्याय व्यवस्था को कमजोर करना था। (ये लेखक के अपने विचार हैं।)

विश्लेषण • भूलसुधार के लिए मजबूर किया गया

तालिबान को हमारी महिला-शक्ति का एहसास हुआ है

सियासत

नीरजा चौधरी
वरिष्ठ राजनीतिक टिप्पणीकार
neerja_chowdhury@yah oo.com

शुक्रवार को अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी की प्रेस कॉन्फ्रेंस से महिला पत्रकारों को वापस भेज दिया गया था। इससे देश में हंगामा मच गया। अगर रविवार को इस भूल को सुधारा नहीं गया होता तो यही उनकी छह दिवसीय भारत यात्रा का सबसे बड़ा संदेश साबित होता। लेकिन रविवार की सुबह मुंबई स्थित तालिबान सरकार के महाधिवक्ता- जो भारत में तैनात उनके एकमात्र राजनयिक हैं- ने पत्रकारों को मुत्ताकी की दूसरी प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए व्यक्तिगत निमंत्रण भेजा, जिनमें लगभग 30 महिला मीडियाकर्मी भी शामिल थीं। यह कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली स्थित अफगान दूतावास परिसर में हुई। जाहिर है कि तालिबानी सरकार शुक्रवार की अपनी भूल को सुधार रही थी। वहीं भारत और अफगानिस्तान ने एक-दूसरे के साथ बातचीत की प्रक्रिया फिर से शुरू कर दी है।

लेकिन शुक्रवार की प्रेस कॉन्फ्रेंस से महिला पत्रकारों को बाहर करने से राजधानी में बवाल मच गया था। कांग्रेस की प्रियंका गांधी और टीएमसी की महुआ मोइत्रा ने भी इस तरह से महिलाओं के साथ भेदभाव किए जाने पर नाराजगी जताई। मीडिया संगठनों ने सवाल उठाया कि भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में ऐसा कैसे हो सकता है, जहां महिलाओं को कानूनी और संवैधानिक रूप से समान अधिकार प्राप्त हैं, और इसमें बिना किसी पूर्वग्रह के पेशेवर के रूप में काम करने का अधिकार भी शामिल है? हालांकि अफगानिस्तान दूतावास तकनीकी रूप से अफगानिस्तान का क्षेत्र है, फिर भी कई लोगों ने सवाल उठाया है कि अफगान शासन भारतीय महिलाओं पर तालिबानी मूल्य कैसे थोप सकता है, और वह भी भारतीय धरती पर? और तो और, भारत सरकार ने ऐसा कैसे होने दिया? अलबत्ता विदेश मंत्रालय ने महिला पत्रकारों को बाहर रखने के फैसले में अपनी किसी भी भूमिका से इनकार किया था।

भारत में सत्तारूढ़ दल जानता है कि महिलाएं एक महत्वपूर्ण वोटबैंक हैं और उन्हें नाराज करना उनके लिए मुनासिब नहीं होगा- खासकर बिहार में आसन्न महत्वपूर्ण चुनावों को देखते हुए, जहां 'एम' (महिला) फैक्टर के मायने रखने की संभावना है। शुक्रवार के हंगामे के बाद 36 घंटों में भारत सरकार डैमेज-कंट्रोल मोड में आई और तालिबान सरकार के प्रतिनिधियों को भी ऐसा करने के लिए राजी कर लिया। दिलचस्प बात यह है कि रविवार की प्रेस कॉन्फ्रेंस में आमंत्रित महिलाएं मुख्य रूप से वे थीं, जो विदेश मामलों की रिपोर्टिंग करती हैं। मुत्ताकी को रविवार को ताजमहल देखने आगरा जाना था, लेकिन उन्हें अपना कार्यक्रम रद्द करना पड़ा। उन्होंने 70-80 पत्रकारों के साथ एक और प्रेस कॉन्फ्रेंस की, जिनमें से लगभग आधी महिलाएं थीं। सभी महिलाएं आगे की पंक्तियों में बैठी थीं और उन्होंने भारतीय परिधान पहने हुए थे। उनमें से किसी ने अपना सिर नहीं ढांका था। न ही अफगान सरकार की ओर से ऐसी कोई शर्त लगाई गई थी। देर आए दुरुस्त आए।

दोनों देशों के बीच चल रही बातचीत में इतना कुछ दांव पर लगा था कि न तो भारत और न ही तालिबान के नेतृत्व वाला अफगानिस्तान दुनिया में गलत संदेश जाने का जोखिम उठाना चाहता था। वे नहीं चाहते थे कि मुत्ताकी की यात्रा जेंडर सम्बंधी भेदभाव पर केंद्रित होकर रह जाए, जबकि मूल कहानी पाकिस्तान और क्षेत्र में उभर रही नई भू-राजनीतिक वास्तविकताओं से निपटने के लिए एक नई भारत-अफगान साझेदारी है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने काबुल में भारतीय दूतावास को फिर से खोलने की घोषणा की और

तालिबान को आज नहीं तो कल महिलाओं से संवाद करना ही होगा- चाहे वह यूएन में हो या दुनिया की राजधानियों में महिला प्रधानमंत्रियों (इटली और जापान) के साथ। तमाम जगहों के मीडिया में भी महिलाएं होंगी ही।

मुत्ताकी ने कहा कि वे नई दिल्ली में और राजनयिक भेजेंगे। उन्होंने भारत को दुर्लभ खनिजों के खनन में मदद के लिए भी आश्वस्त किया। ध्यान रहे कि भारत अफगानिस्तान को मान्यता नहीं देता है, क्योंकि 2021 में तालिबान द्वारा उस पर कब्जा करने के बाद जब अमेरिकी नेतृत्व वाली नाटो सेनाएं वहां से वापस लौट आई थीं तो भारत ने उसके साथ संबंध तोड़ लिए थे। लेकिन अब दोनों देश भारत-अफगानिस्तान संबंधों को फिर से स्थापित करने की प्रक्रिया में हैं।

भारत और अफगानिस्तान दोनों ही पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के शिकार रहे हैं। हाल ही में काबुल में विस्फोट हुए थे, जिसके बाद अफगान बलों ने पाकिस्तानी सैनिकों पर जवाबी कार्रवाई की थी। भारत तो लंबे समय से आतंकवाद का सामना कर ही रहा है। ऑपरेशन सिंदूर के समय इजराइल के अलावा तालिबान के नेतृत्व वाला अफगानिस्तान ही एकमात्र ऐसा देश था, जो उस समय भारत के साथ खड़ा था। (ये लेखिका के अपने विचार हैं।)

दैनिक भास्कर

अब आप NYT के सभी आर्टिकल DB एप पर हर मंगलवार पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें डीबी एप।

© The New York Times

दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

इस हफ्ते चर्चा में...

भारी जुर्माने के बाद एपल, मेटा का मामला निपटा

1.73 लाख करोड़ रुपए
की मदद दी है संयुक्त राज्य अमेरिका ने अर्जेंटीना की अर्थव्यवस्था को सहारा देने के लिए।

7208 करोड़ रुपए
का संयुक्त जुर्माना लगाए जाने के बाद एपल और मेटा यूरोपियन यूनियन के साथ एकाधिकार विरोधी मामले सुलझाने के नजदीक पहुंच गए हैं।

6.37 लाख करोड़
रुपए जुटाए हैं, इस साल एआई कंपनियों ने दुनियाभर में।

साइबर क्राइम

एयरलाइंस के 57 लाख यात्रियों का डेटा चोरी

मार्क वॉकर

ऑस्ट्रेलियाई एयरलाइन क्वांटास एयरवेज ने बताया कि साइबर हमले में कस्टमर्स का पर्सनल डेटा चोरी कर लिया गया है। कंपनी ने एक बयान में बताया कि उसके कॉल सेंटर को निशाना बनाकर साइबर अपराधियों ने 57 लाख यात्रियों का डेटा चुरा लिया है। कॉल सेंटर थर्ड पार्टी चलाती है। क्वांटास ने कहा उसके साथ दुनिया की कई कंपनियां साइबर हमलों की चपेट में आई हैं। चुराए गए अधिकतर रिकॉर्ड में नाम, ई-मेल एड्रेस और यात्री का ब्योरा शामिल हैं। कुछ यात्रियों के बिजनेस का ब्योरा, घर के पते, जन्मतिथि, फोन नंबर और खान-पान की पसंद जैसी जानकारियां चुरा ली गई हैं। इससे पहले हैकर्स ने ऑस्ट्रेलियाई टेलीकम्युनिकेशन, हेल्थ केयर कंपनियों में सेंध लगाई थी। 2022 में टेली कम्युनिकेशन कंपनी ऑप्टस के 98 लाख लोगों का डेटा चुराया गया था।

© The New York Times

एजुकेशन • वीसा फीस बढ़ाना पैर पर कुल्हाड़ी मारने जैसा, अमेरिका में शिक्षकों, डॉक्टर्स की कमी होगी

एच-1बी संकट: अमेरिकी यूनिवर्सिटी बढ़ी वीसा फीस भरने की स्थिति में नहीं, वहीं देश में विशेषज्ञ मिल नहीं रहे

मैडेलीन न्गो

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की नए एच-1 बी वीसा पर एक लाख डॉलर की फीस से टेक-फाइनेंस कंपनियों पर सर्वाधिक असर पड़ेगा। नई फीस से अमेरिका की शिक्षा व्यवस्था भी प्रभावित होगी। उच्च शिक्षा विशेषज्ञों का कहना है, भारी फीस के कारण शिक्षकों की कमी हो सकती है। कई विश्वविद्यालयों के प्रेसिडेंट्स का कहना है, उन्हें फैकल्टी की भर्ती में मुश्किल होगी। कुछ कहते हैं, वे मैथ्स व अन्य खास विषयों के लिए नियुक्तियां नहीं कर पाएंगे।

कॉलेज और विश्वविद्यालय पहले ही उच्च शिक्षा पर ट्रम्प सरकार के हमलों से परेशान हैं। सरकार ने रिसर्च फंड के करोड़ों डॉलर रोक दिए हैं। स्टूडेंट वीसा की बारीकी से छानबीन हो रही है। दर्जनों विश्वविद्यालयों के खिलाफ जांच जारी है। सरकार का कहना है, एच-1बी वीसा प्रोग्राम से अमेरिकी वर्कर्स को दरकिनार किया जा रहा है। नई फीस के कारण अब यूनिवर्सिटी और कॉलेज घरेलू वर्कर्स को अहमियत देंगे।

वहींविशेषज्ञ कहते हैं, न्यूक्लियर इंजीनियरिंग, मटेरियल साइंस जैसे क्षेत्रों में भी विदेशी वर्कर्स की कमी होगी। विश्वविद्यालयों की इनोवेशन, एआई में आगे बढ़ने की क्षमता प्रभावित होगी। टेक कंपनियां एच-1 बी वीसा की सबसे बड़ी यूजर हैं। 2024 में प्रोफेशनल, साइंटिफिक और टेक्निकल सेवाओं के सेक्टर को आधे एच-1 बी वीसा मिले थे। शैक्षणिक सेवाओं का हिस्सा सात प्रतिशत रहा। स्टैनफोर्ड, मैरीलैंड, पेनसिल्वेनिया यूनिवर्सिटी ने सर्वाधिक एच-1 बी वीसा का इस्तेमाल किया है।

नेब्रास्का यूनिवर्सिटी के प्रेसिडेंट डॉ. जेफ्री गोल्ड बताते हैं, यूनिवर्सिटी के 16 हजार में से 500 कर्मचारी एच-1बी वीसा के जरिये आए हैं। यूनिवर्सिटी के मेडिकल सेंटर में कुछ डॉक्टर या प्रोफेसर हैं। भारी फीस के कारण ऐसे कुछ पद खाली रह जाएंगे। वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी के चांसलर एंड्रयू मार्टिन ने बताया कि यूनिवर्सिटी हर साल 285 नए एच-1 बी वीसा प्रायोजित करती है। हर वीसा के लिए एक लाख डॉलर देने की स्थिति में भर्ती के में सावधानी बरतनी होगी। इनमें से ज्यादातर पदों पर देश में विशेषज्ञ नहीं मिलते हैं। वे अमेरिका में एनेस्थीशिया विशेषज्ञों की कमी का जिक्र करते हैं। वीसा फीस बढ़ने से विदेशी छात्रों का आकर्षण कम होगा। बहुत छात्र ग्रेजुएशन के बाद अमेरिका में जॉब हासिल करने की उम्मीद रखते हैं। कुछ छोटे कॉलेजों को वीसा प्रोग्राम के तहत विदेशी वर्करों की भर्ती बंद करना पड़ेगी।

© The New York Times

साइंस, तकनीक और गणित जैसे क्षेत्रों पर ज्यादा असर

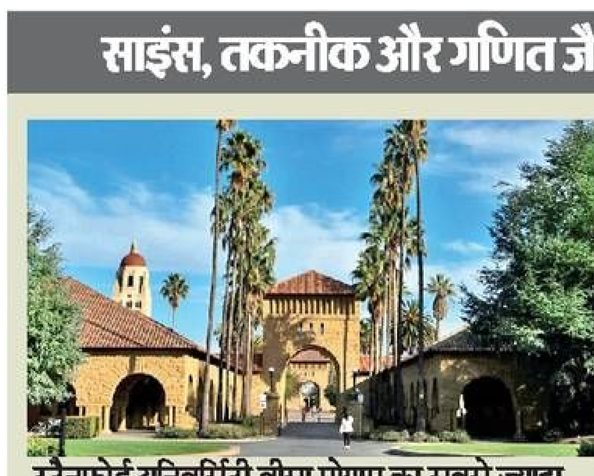

स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी वीसा प्रोग्राम का सबसे ज्यादा इस्तेमाल करने वाले विश्वविद्यालयों में शामिल है।

कई शिक्षाविदों का कहना है, बदलाव की वजह से शिक्षण संस्थान बेहतर प्रतिभाओं को मौका नहीं दे सकेंगे। अमेरिकन कॉलेजेस, यूनिवर्सिटीज एसोसिएशन की प्रेसिडेंट लिन पासक्वेरेला कहती हैं, कई संस्थान साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, मैथमैटिक्स (एसटीइएम) शिक्षकों के पद नहीं भर पाएंगे। मेडिकल शिक्षा प्रभावित होगी। वे कहती हैं, विदेशी डॉक्टरों का आना और कम हो जाएगा।

आखिर बाहर से भर्ती करनी पड़ी

अमेरिकन स्कूल सुप्रिटेनडेंट्स एसोसिएशन की सीनियर मैनेजर तारा थॉमस बताती हैं, देश के स्कूल डिस्ट्रिक्ट खाली पद भरने के लिए एच-1बी वीसा पर निर्भर हैं। हाईस्कूलों और कॉलेजों में स्टाफ की कमी है। नई फीस से भर्ती का रास्ता बंद हो जाएगा। हैरीसन स्कूल डिस्ट्रिक्ट की प्रमुख वेंडी बिरहेंजेल का कहना है, हमने अमेरिकी वर्कर्स को भर्ती करने की कोशिश की थी। लेकिन,मैथ्स,साइंस के लिए योग्य लोग नहीं मिले। लिहाजा, डिस्ट्रिक्ट को भारत, फिलीपीन्स और मैक्सिको से टीचर्स की नियुक्तियां करना पड़ी थी।

कई विश्वविद्यालयों ने नियुक्तियां बंद कर दीं

इमिग्रेशन वकील सोफी एलकॉर्न ने बताया कई विश्वविद्यालयों ने नए एच-1 बी वीसा आवेदनों पर भर्ती रोक दी है। नए आदेश के संबंध में भ्रम की स्थिति है। शिक्षण संस्थानों को जानकारी नहीं है कि वे कैसे आदेश से छूट हासिल करने के लिए आवेदन कर सकते हैं। वीसा फीस के पेमेंट पर भी पूरी स्पष्टता नहीं है।

मैन्युफैक्चरिंग

चीन के नए प्रतिबंधों से उत्पादन प्रभावित होगा

कीथ ब्रेडशर

चीन के नए निर्यात प्रतिबंधों से कारों, कंप्यूटर चिप्स से लेकर टैंकों और लड़ाकू विमानों तक के वैश्विक कारोबार पर असर पड़ सकता है। अमेरिका और यूरोप के खिलाफ चीन का व्यापार युद्ध नए दौर में पहुंच रहा है। नए नियम 8 नवंबर और 1 दिसंबर से पूरी दुनिया पर लागू होंगे। व्यापार पर चल रही तनातनी के बीच चीन की पहल से स्थिति और बिगड़ सकती है।चीन ने अप्रैल में दुर्लभ धातुओं और उससे बने मैग्नेट्स के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया था। इनका मुख्य रूप से उत्पादन चीन में होता है। चीन ने गुरुवार को पूरी दुनिया के लिए इलेक्ट्रिक मोटरों, कंप्यूटर चिप्स और कई डिवाइस के निर्यात पर नियंत्रण लगाने की घोषणा की है। नियमों के तहत चीन से किसी भी देश को ऐसी सामग्री या उपकरणों के निर्यात पर रोक रहेगी, जिनका इस्तेमाल सैनिक इक्विपमेंट बनाने में होता है। प्रतिबंधित वस्तुओं में मिसाइलों और लड़ाकू जेट विमानों, टैंक और सैनिक वाहनों में लगने वाली इलेक्ट्रिक मोटर शामिल हैं। इन नियमों के कारण यूरोपीय देशों से अब यूक्रेन को हथियारों की सप्लाई पर असर पड़ेगा। कई किस्म के हथियारों के निर्माण में दुर्लभ धातुओं का इस्तेमाल होता है। हथियार निर्माताओं के बाद ऑटो इंडस्ट्री पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ेगा। कारों के निर्माण में 40 किस्म की दुर्लभ धातुओं के मैगनेट्स लगते हैं। इलेक्ट्रिक कारों में भी इनकी जरूरत पड़ती है।

© The New York Times

ओपिनियन • अमूमन सोना-शेयर बाजार साथ नहीं बढ़ते, इस बार ऐसा नहीं

नए ट्रेंड के साथ आ रहा है इस बार सोने में उछाल

निक गेलोप्ली

सोने के मूल्यों में भारी उछाल से लगता है जैसे अमेरिका वित्तीय संकट की कगार पर है। वास्तव में ऐसा नहीं है। इस साल सोने के मूल्य पहली बार चार हजार डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गए थे। यह 1970 के बाद सबसे अधिक है। पिछले माह निवेशकों और पेंशन फंड्स ने सोने से जुड़े एक्सचेंज ट्रेडेड फंड्स पर 82 हजार 548 करोड़ रुपए खर्च किए हैं। अकसर सोने में उछाल होने पर शेयरों के मूल्य गिरते रहे हैं। लेकिन इस बार ऐसा नहीं हो रहा है।

1970 से 1979 के बीच सोने की कीमतें 600 प्रतिशत से अधिक बढ़ गई थीं। वहीं कंपनियों के सूचकांक एसएंडपी 500 में 11 प्रतिशत गिरावट आई थी। जनवरी 2008 से दिसंबर 2009 की महामंदी के समय सोने के मूल्य 37% ऊपर आए थे। जबकि एसएंडपी ने 23% गोता लगाया था। पिछले सप्ताह सोना उड़ान भर रहा था तो बुधवार को एसएंडपी 500 में बढ़ोतरी दर्ज की गई। बॉन्ड मार्केट और अमेरिकी डॉलर में संकट के चिह्न नहीं थे।

मोर्गन स्टेनले बैंक ने हाल में 60/20/20 के हिसाब से निवेश का सुझाव दिया है। बॉन्ड और सोने में बराबर निवेश की सलाह दी है। सिटाडेल सिक्योरिटीज के केन ग्रिफिन का कहना है, जिस तरह डॉलर पहले सुरक्षित था। आज वैसे ही गोल्ड सुरक्षित है।

निवेशकों की सोच है कि अमेरिका और यूरोपियन यूनियन पर बढ़ते कर्ज जैसे जोखिम के बावजूद एआई से अर्थव्यवस्था की बढ़त कायम रहेगी। अर्थशास्त्री रॉबिन ब्रुक्स का कहना है, फाइनेंशियल मार्केट्स फैशन के समान होते हैं। दुनियाभर के सेंट्रल बैंक अनिश्चितता से बचने के लिए वर्षों से सोने का स्टॉक कर रहे हैं। लिहाजा या तो फाइनेंशियल मार्केट्स नए हालात से तालमेल बिठाने में धीमे रहे हैं या गोल्ड में उछाल अस्थायी है।

बफेट मानते थे कोई फायदा नहीं

मशहूर निवेशक वारेन बफेट ने एक बार आगाह किया था कि सोना रखना महंगा पड़ सकता है। क्योंकि भविष्य में उससे कोई आय नहीं होती है। यदि आपके पास अनंतकाल तक एक औंस सोना है तो वह अंत में भी एक औंस ही रहेगा।

© The New York Times

रोजगार • ट्रम्प की नीतियों का असर

अमेरिका में पिछले चार महीनों में अश्वेतों में बेरोजगारी बढ़ी, श्वेतों की कम हो गई

लीडिया डेपिलिस

अमेरिका में रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंचने के दो साल बाद अश्वेत कामगारों में बेरोजगारी बढ़ रही है। फेडरल सरकार ने छंटनी शुरू कर दी गई। इसका सर्वाधिक असर अश्वेतों पर पड़ा है।

पिछले चार माह में अफ्रीकी अमेरिकी अश्वेतों में बेरोजगारी की दर छह से बढ़कर 7.5% हो गई। श्वेतों में बेरोजगारी कम होकर 3.7% पर आ गई है। अर्थशास्त्रियों का कहना है, सरकार की नीतियों ने अश्वेत वर्कर्स को नुकसान पहुंचाया है। नई भर्ती पर रोक से युवाओं के अवसर बंद हो गए हैं। अर्थशास्त्री गर्बेगा अलीजोर कहते हैं, फेडरल सरकार से लोगों को शुरुआती रोजगार मिलता है।

दो लाख लोगों की छंटनी

सरकार ने नई भर्ती पर रोक लगा दी। फेडरल वर्क फोर्स में बड़े पैमाने पर छंटनी की गई। मौजूदा शटडाउन के दौरान छंटनी जारी है। दो लाख से अधिक लोगों की छंटनी हो चुकी है। इसका सबसे अधिक असर अश्वेत कामगारों पर पड़ा है।

2023 में अश्वेत वर्कर्स की बेरोजगारी 4.8% थी। 2024 में महामारी के समय की सब्सिडी बंद होने से स्थिति बिगड़ना शुरू हुई। महंगाई ने प्रभावित किया। पिछले साल केवल अश्वेत समूह की आय में गिरावट आई है। © The New York Times

पुलिस इन्वेस्टिगेशन अनटोल्ड स्टोरी | जिस रेप कांड को ब्लाइंड केस मानकर भूल गए थे, इसे इंसाफ तक पहुंचाया

आईपीएस 'आंटी' बनकर पहुंचीं घर, दो माह में पक्की दोस्ती की तो बालिका ने चुप्पी तोड़ी, बोली- गुटखा खाता था, कान में बाली थी... इसी क्लू से पुलिस पहुंची दरिंदे तक

▪ **आईपीएस प्रीति चंद्रा**
अलवर में तत्कालीन एएसपी, वर्तमान में **डीआईजी आरएसी**

वर्ष 2010 अक्टूबर का महीना... अलवर में दो मासूम बालिकाओं को अगुवा कर दुष्कर्म की घटना ने झकझोर दिया था, यह न सिर्फ दिल दहलाने वाली थी बल्कि ब्लाइंड केस भी था। छह और नौ साल की दो मासूम बच्चियां,जो एक दरिंदे की हवस का शिकार बनी थीं। दोनों इस कदर सहमी हुई थीं कि पुलिस के हर सवाल पर चुप्पी साधे रहतीं। उनके चेहरे पर खौफ साफ झलकता था।

मैं उस समय अलवर एएसपी बनकर गई थी। एसपी ने मुझे पहले दिन से ही खुलासे की जिम्मदारी दी। जांच की शुरुआत तमाम एंगल से हुई, स्केच बनवाए, इलाके को छाना, लेकिन सुराग नहीं मिला। कुछ जगह के सीसीटीवी थे, मगर क्लू नहीं मिला। छोटी बच्ची कई दिनों तक जयपुर के एसएमएस अस्पताल में भर्ती रही। डिस्चार्ज के बाद एएसआई स्नेहलता जो अब इंस्पेक्टर बन गई, उसके साथ रोज दोनों बच्चियों के घर जाती। हर दिन बिस्किट, चॉकलेट, नए कपड़े... ताकि बच्चियों के टूटे मन में विश्वास की कोई रोशनी जल सके। धीरे-धीरे बच्चियों ने "आंटी" कहकर बात शुरू की। डेढ़ महीने बाद चुप्पी टूटी। बातों ही बातों में मैंने घटना के बारे में पूछा तो बताया: आंटी, वो गुटखा खाता था... कान में बाली थी... उसका रंग सांवला था... मुंह पर पिंपल्स थे.. इतना क्लू मिलने पर हमने स्केच तैयार करवाया, लेकिन नतीजा नहीं निकला। मामला अब भी अंधेरे में था। फिर किस्मत ने खींचा एक तार... घटना के दो माह बाद 1 दिन एक युवक और युवती को बीच सड़क पर झगड़ते हुए पकड़ा। उनको थाने लाकर इंट्रोगेशन किया। पूछताछ में आया कि दोनों नट समुदाय के हैं और युवक, युवती की बहन के साथ भिवाड़ी में रह रहा था। इसी के चलते युवती झगड़ा कर रही थी। प्रीति चंद्रा बताती है: युवक के कान की बाली और रंग-रूप के आधार पर संदेह हुआ। जब सख्ती से पूछताछ की, तो उसने बातों-बातों में ऐसी घटनाओं का जिक्र कर दिया, जिनमें समाज की पंचायतों में राजीनामा हो चुका था। तभी प्रीति चंद्रा ने तुरंत उससे एक खास घटना का जिक्र किया: माताजी के मंदिर के पास वाली। युवक तपाक से बोल पड़ा: अरे वो बच्ची... घाघरी पहनी थी... वो तो हमारे समाज की नहीं थी, इसलिए कुछ नहीं हुआ। इसके बाद जब तालाब के पास की दूसरी घटना का जिक्र हुआ, तो आरोपी हंसते हुए बोला: वो तो डरपोक थी... बस, यही वो पल था जब पुलिस ने उसे दबोच लिया। आरोपी युवक से पूछताछ हुई तो महज 5 मिनट में कबूल लिया: हां, मैंने ही दोनों बच्चियों से दुष्कर्म किया था। जिस केस को महकमा ब्लाइंड मानकर फाइलों में दबा चुका था, उसे मासूमों की चुप्पी और महिला आईपीएस की संवेदनशीलता ने खोल दिया। पुलिस ने दरिंदे को गिरफ्तार कर लिया।

-जैसा राजेन्द्र गौतम को बताया

BSC नर्सिंग मामले में कोर्ट का फैसला

NOC वाले संस्थान ही काउंसलिंग में हिस्सा लें

जोधपुर | राजस्थान हाईकोर्ट जस्टिस डॉ. पुष्पेंद्र सिंह भाटी और जस्टिस अनुरूप सिंघी ने बीएससी नर्सिंग और जीएनएम कोर्स 2025-26 की काउंसलिंग प्रक्रिया को लेकर महत्वपूर्ण आदेश दिया है। कोर्ट ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा वैध एनओसी प्राप्त संस्थानों को ही काउंसलिंग में भाग लेने की अनुमति दी जाएगी। जोधपुर की ऋद्धि सिद्धि एजुकेशन एंड रिसर्च सोसायटी को हाईकोर्ट की एकल पीठ ने अंतरिम आदेश में काउंसलिंग में भाग लेने की अनुमति दी गई थी। आरयूएचएस ने इस आदेश को खंडपीठ के समक्ष विशेष अपील के जरिए चुनौती दी। आरयूएचएस ने एडवोकेट अक्षिति सिंघवी ने पैरवी की। हाईकोर्ट की खंडपीठ ने 19 सितंबर 2025 को ऐसे ही 23 मामलों में एक साथ फैसला सुनाया था। एकलपीठ ने अलग-अलग तारीखों में कई नर्सिंग संस्थानों को बीएससी नर्सिंग और जीएनएम कोर्स की काउंसलिंग में भाग लेने की अनुमति दे दी थी। उन अंतरिम आदेशों के खिलाफ आरयूएचएस ने अपील दायर कर चुनौती दी थी। खंडपीठ ने एकल पीठ के अंतरिम आदेश को संशोधन करते हुए आवश्यक निर्देश दिए हैं।

सीएस समेत 54 अफसरों के पास 77 विभागों का अतिरिक्त चार्ज

6 माह से अधिक अतिरिक्त प्रभार पर भी आईएएस को 2% ज्यादा विशेष वेतन

भास्कर न्यूज | जयपुर

राज्य सरकार ने विभागाध्यक्षों और आईएएस अधिकारियों के लिए विशेष वेतन का प्रावधान किया है। वित्त विभाग की ओर से सोमवार को जारी आदेश में कहा गया है कि जिन अधिकारियों के पास अपने विभाग के साथ-साथ 6 महीने से अधिक दूसरे विभाग का अतिरिक्त प्रभार है तो भी उन्हें अतिरिक्त कार्य भत्ता दिया जाएगा। वर्तमान में 6 माह की अवधि तक के अतिरिक्त प्रभार पर ही विशेष वेतन का प्रावधान है। इससे अधिक समय तक के अतिरिक्त प्रभार पर कोई विशेष वेतन नहीं दिया जाता रहा है। अब रिक्त पद से पूरी अवधि के लिए यह विशेष वेतन मूल वेतन का 2 प्रतिशत या उससे अधिक दिया जाएगा।

वर्तमान में राज्य के विभागाध्यक्षों के अलावा मुख्य सचिव सहित 54 आईएएस के पास 77 विभागों या सैक्शन का अतिरिक्त प्रभार है। ऐसे में आईएएस अधिकारियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी के रूप में बढ़ा हुआ वेतन मिलेगा। आदेश में विशेष वेतन का प्रावधान एसीएस तक ही रख गया है।

6 माह से अधिक समय तक अफसर नहीं हैं तो पद होल्ड हो जाते हैं

कर्मचारियों से संबंधित ऐसे पद जो 6 माह तक अतिरिक्त प्रभार में रहते हैं, तो उन पदों को अपनी भर्ती तक होल्ड कर दिया जाता है। जबकि विभागाध्यक्ष, सचिव, प्रमुख सचिव व अतिरिक्त मुख्य सचिव तक के अतिरिक्त प्रभार वाले पद 6 माह के बाद भी नियमित रहते हैं और अधिकारियों को जिम्मेदारी संभालनी होती है। नियमों के अनुसार 6 माह तक ही विशेष वेतन का प्रावधान था, लेकिन 6 माह के बाद भी यह विशेष वेतन दिया जाएगा।

विभाग-बोर्ड मिलती हैं विशेष सुविधाएं

आईएएस अधिकारियों को अपने विभाग की सुविधाएं जैसे गाड़ी, कर्मचारी, अन्य भत्ते आदि की सुविधाएं मिलती ही हैं। अतिरिक्त प्रभार वाले विभाग संबंधी भी ऐसी सुविधाएं पहले से ही मिलती रही हैं। अब विशेष वेतन की अवधि 6 माह से अधिक समय के लिए भी बढ़ा दी गई है।

यह है विशेष वेतन का वर्तमान स्लैब

अवधि	मूल वेतन का प्रतिशत
30 दिन तक	शून्य रुपए
31 से 60 दिन	1%
60 दिन से 6 माह	2%
6 माह से अधिक	2% या इससे अधिक

सचिवालय में डेपुटेशन पर लगे कर्मी मूल विभाग में लौटेंगे

584 नए कार्मिक मिले, कुछ कर्मियों के पदस्थान के आदेश भी जारी किए गए

जयपुर | सरकार ने सचिवालय में प्रतिनियुक्ति पर लगे कार्मिकों को मूल विभाग में भेजने का फैसला किया है। सचिवालय को 584 नए कार्मिक मिल गए हैं। कार्मिक सचिव केके पाठक ने बताया कि सचिवालय में नए कार्मिक आ गए हैं। विभाग ने इसके तीन बड़े कारण बताए हैं। इनमें नई नियुक्तियां, स्थान की कमी और विशिष्ट कार्मिकों की व्यवस्था को बताया है। आदेश के अनुसार सचिवालय के विभिन्न विभागों में रिक्तियों एवं कार्मिकों की कमी के चलते उनके अधीनस्थ या अन्य विभागों से कर्मचारियों को प्रतिनियुक्ति पर लगाया गया था। लेकिन, अब सचिवालय में लिपिक ग्रेड द्वितीय के 584 पदों पर नियुक्ति संबंधी कार्यवाही प्रक्रियाधीन है। कार्यग्रहण के बाद सचिवालय के विभिन्न विभागों में रिक्त पदों पर इन कार्मिकों का पदस्थापन भी कर दिया गया है। कुछ कार्मिकों का पदस्थान अविलंब कर दिया जाएगा। कार्मिक विभाग के अनुसार, दो अक्टूबर के आदेश में है कि विभाग अपने यहां लिपिक ग्रेड द्वितीय के कार्यग्रहण के साथ ही अधीनस्थ विभागों से प्रतिनियुक्ति पर लगे कार्मिकों को तत्काल कार्यमुक्त किया जाए।

महाराष्ट्र के ठाणे क्रीक में कूदा युवक, बचाव अभियान शुरू किया

एजेंसी | ठाणे

महाराष्ट्र के ठाणे जिले के कशेली क्रीक में सोमवार सुबह 28 वर्षीय युवक ने छलांग लगा दी। इस घटना के बाद स्थानीय अधिकारियों ने खोज और बचाव अभियान शुरू किया। घटना सुबह करीब 10 बजे की है। कशेली ब्रिज पर एक कार खड़ी मिली। उसके ड्राइवर अनुराग केसरी ने क्रीक में छलांग लगाई। ठाणे नगर निगम के आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ के प्रमुख यासीन तडवी ने बताया कि आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ, फायर ब्रिगेड और ठाणे आपदा प्रतिक्रिया बल की टीमें बचाव कार्यों का समन्वय कर रही हैं। समुद्री पानी आने से खोज अभियान में चुनौतियां आ रही हैं।

PM आवास के लिए घूस लेते मेघरज ग्राम सेवक पकड़ाया

अरवल्ली | मेघरज तालुका पंचायत में कुनोल गांव के आउटसोर्स ग्राम सेवक नरेश पटेल को प्रधानमंत्री आवास योजना की किश्तें के लिए ₹52 हजार की रिश्वत लेते एसीबी ने रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। लाभार्थी ने संपर्क किया तो जिला एसीबी पीआई तोरल एम पटेल और टीम ने जाल बिछाया और रिश्वत लेते ग्राम सेवक को पकड़ लिया।

किसान दलहन की खेती करें, सरकार पूरी उपज एमएसपी पर खरीदेगी

2027 के बाद 3 साल में सुप्रीम कोर्ट तक से न्याय मिल जाएगा : गृह मंत्री

भास्कर न्यूज | जयपुर

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि नए आपराधिक कानूनों में 2027 के बाद जो भी एफआईआर दर्ज होगी, उसमें तीन साल में सुप्रीम कोर्ट तक से न्याय मिल जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 160 पुराने कानूनों को खत्म कर तीन नए कानून दिए हैं। ऐसे में समय पर लोगों को न्याय मिलेगा। उन्होंने कहा कि लोग कोर्ट में जाना पसंद नहीं करते हैं। न्यायिक व्यवस्था की छवि समय पर न्याय नहीं मिलने की है। नए कानूनों को पूरी तरह से लागू होने में अभी 2 साल और लगेंगे।

शाह सोमवार को जेसीसी सीतापुरा में नए आपराधिक कानूनों पर आधारित प्रदर्शनी 'नव विधान : न्याय की नई पहचान' के उद्घाटन के बाद संबोधित कर रहे थे। इस दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और हाईकोर्ट के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश संजीव प्रकाश शर्मा, डिप्टी सीएम दिया कुमारी और प्रेमचंद बैरवा, मुख्य सचिव सुधांश पंत मौजूद थे। शाह ने 9 हजार 300 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का शिलान्यास व लोकार्पण किया। इसके साथ ही राइजिंग राजस्थान के 4 लाख करोड़ रुपए के एमओयू की राउण्ड ब्रेकिंग की। उन्होंने प्रदेश के लगभग 40 लाख विद्यार्थियों को यूनिफॉर्म के लिए 240 करोड़ रुपये एवं दुग्ध उत्पादकों को दूध सब्सिडी के 364 करोड़ रुपये की राशि का हस्तांतरण किया।

जेसीसी में विकसित राजस्थान कार्य योजना का विमोचन करते गृहमंत्री अमित शाह, सीएम भजनलाल शर्मा और हाईकोर्ट के कार्यवाहक सीजे संजीव प्रकाश शर्मा।

किसान खेती करें, 100% दलहन सरकार खरीदेगी

शाह ने कहा कि मोदी सरकार ने फैसला किया है कि जो किसान एनसीसीएफ और नाफेड में रजिस्ट्रेशन करते हैं उनकी तुर, मसूर व उड़द की दलहन सौ फीसदी एमएसपी पर खरीदी जाएगी। राजस्थान के किसान दलहन की खेती करें और रजिस्ट्रेशन करवाएं। पूरी उपज सरकार एमएसपी पर खरीदेगी। देश में दलहन व तिलहन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर करने की जिम्मेदारी अन्नदाताओं की है।

सीएम के कार्यों को सराहा, गहलोत पर कटाक्ष किया

गृह मंत्री ने राइजिंग राजस्थान के एमओयू व विद्यार्थियों को यूनिफॉर्म के पैसे ट्रांसफर करने में पारदर्शिता पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सराहना की। शाह ने कहा कि जब राइजिंग राजस्थान के समिट के दौरान गहलोत ने एमओयू के धरातल पर उतरने को लेकर सवाल उठाया था, तब हमने जवाब नहीं दिया। मैं आज गहलोत को कहना चाहता हूं कि यह भाजपा की सरकार है, यह कांग्रेस की सरकार नहीं है।

अंता सीट: कांग्रेस प्रत्याशी भाया ने भरा नामांकन, भाजपा का प्रत्याशी तय नहीं

भास्कर न्यूज | अंता (बारां)

विधानसभा उपचुनाव को लेकर नामांकन प्रक्रिया सोमवार से शुरू हो गई। पहले दिन कांग्रेस प्रत्याशी प्रमोद जैन ने नामांकन दाखिल किया। नामांकन प्रक्रिया 21 अक्टूबर तक चलेगी। एसडीएम हवाईसिंह यादव ने बताया कि सोमवार को सिर्फ एक नामांकन दाखिल हुआ है। एसडीएम ने बताया कि चुनाव को लेकर विभिन्न टीमें गठित की हैं, जो चुनाव की हर गतिविधियों पर पैनी नजर रखे हुए हैं। दूसरी ओर, अभी भाजपा ने यहां से उम्मीदवार की घोषणा नहीं की है।

भाजपा का टिकट दिलाने को पंचायत समिति प्रधान से 38 हजार रुपए ठगे

अंता उपचुनाव में भाजपा से टिकट दिलाने के नाम पर ठगों ने बारां पंचायत समिति के प्रधान मोरपाल सुमन से 38 हजार रुपए की ठगी की है। ठगी के बाद प्रधान ने साइबर थाना बारां में रिपोर्ट दर्ज करवाई है। साइबर थाना पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए ठगी की आधी राशि को होल्ड करवा दिया है। साइबर थाने के एएसआई भारत सिंह का कहना है कि केस दर्ज कर लिया गया है।

राजकोट: नाश्ता लेने जा रही 7 साल की बच्ची से शारीरिक छेड़छाड़ की

राजकोट | राजकोट में एक 7 वर्षीय बच्ची से शारीरिक छेड़छाड़ का मामला सामने आया है। शहर के कुवाडवा थाना क्षेत्र की 30 वर्षीय महिला की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी विपुल प्रेमजी गोहेल पर पॉक्सो के तहत मामला दर्ज किया है। 7 साल की बच्ची नाश्ता लाने के लिए घर से निकली थी, तभी आरोपी उसे बहला-फुसलाकर अपने घर उठा ले गया और उसके प्राइवेट पार्ट पर चोट पहुंचाकर शारीरिक छेड़छाड़ की। पुलिस आरोपी को हिरासत में लेकर कार्रवाई कर रही है।

ट्रक से भिड़ी कार, आग लगने से चालक जिंदा जला

बीकानेर | नापासर में नौरंगदेसर से आगे भारतमाला रोड पर एक सीएनजी कार आगे चल रहे ट्रक से जा भिड़ी। भिड़ंत के बाद कार में आग लग गई और उसका चालक लूणकरणसर निवासी कालूराम ओझा (34) जिंदा जल गया। पांच लोगों को बाहर से निकाला गया जिनमें से एक शिक्षक संतोष जीनगर (60) ने अस्पताल ले जाते समय दम तोड़ दिया।

नापासर पुलिस थाने के एसएचओ लक्ष्मण सुथार ने बताया कि सोमवार को सुबह 6 बजे नौरंगदेसर से आगे भारतमाला रोड पर एक सीएनजी कार ट्रक के पीछे जा भिड़ी। इससे कार का अगला हिस्सा चकनाचूर हो गया और उसमें आग लग गई। नजदीक खेत से एक ग्रामीण मौके पर पहुंचा और कार में सवार 5 लोगों को बाहर निकाला। लेकिन, ड्राइवर कालूराम ओझा अंदर फंस गया और आग भड़कने से वह जिंदा जल गया। घायलों को एक गाड़ी में डालकर पीबीएम अस्पताल के लिए रवाना किया। गंभीर रूप से घायल शिक्षक संतोष जीनगर ने रास्ते में दम तोड़ दिया। बाद में बीकानेर से दमकल मौके पर पहुंच गई और आग पर काबू पाया गया। कार में लूणकरणसर के लोग सवार थे जो बाड़मेर गए थे और वापस अपने घर लौट रहे थे। कार में सवार लोगों में श्रीगंगानगर निवासी दिनेश कुमार मोची (35), उसकी पत्नी ज्योति (32), मृतक संतोष की पत्नी जमना (50), कालू इलाके के शेखसर निवासी रामचन्द्र मोची (50) शामिल थे।

तहसील के धीरदान गांव निवासी व हाल लूणकरणसर में रहने वाले शिक्षक संतोष जीनगर 31 अक्टूबर को राजकीय सेवा से सेवानिवृत्त होने वाले थे। घर में सेवानिवृत्ति की तैयारियां चल रही थीं। सेवानिवृत्ति से 18 दिन पूर्व ही शिक्षक संतोष जीनगर की सड़क हादसे में मौत हो गई। संतोष जीनगर जिले में राजासर उर्फ करणीसर के उच्च माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत थे।

गुजरात • देशभर से आए खिलाड़ियों ने स्पर्धा में हिस्सा लिया

70 से 90 साल के बुजुर्गों ने दिखाई युवाओं जैसी फुर्ती, जीते मेडल

भास्कर न्यूज | सूरत

गुजरात के सूरत में वीर नर्मद साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी के कैंपस में आयोजित चौथी नेशनल मास्टर स्पोर्ट्स एंड गेम्स चैम्पियनशिप 2025 में 70 से 90 साल के बुजुर्गों ने दौड़, ऊंची कूद, रिले और शॉटपुट जैसी खेल स्पर्धाओं में हिस्सा लेकर मेडल जीते। इस आयोजन में देशभर के 25 राज्यों से 1,000 से ज्यादा खिलाड़ियों ने भाग लिया। खास बात यह रही कि 95 साल तक के खिलाड़ियों ने भी मैदान में उतरकर अपनी फिटनेस का प्रदर्शन किया। बुजुर्ग खिलाड़ियों को युवाओं ने चीयर किया और उनकी जीत का जश्न भी खास अंदाज में मनाया गया। स्पर्धा में हिस्सा लेने वाले बुजुर्गों ने यह साबित किया कि उम्र सिर्फ एक संख्या है। उन्होंने यह संदेश भी दिया कि मेहनत और सकारात्मक सोच से किसी भी उम्र में स्वस्थ रहा जा सकता है।

90 की उम्र में भी रोज 5 किमी चलती हैं मणिबेन

90 वर्षीय मणिबेन जामनगर से आई थीं। उन्होंने बताया कि मैंने 80 साल की उम्र में खेलों में भाग लेना शुरू किया। दौड़ना मेरा पसंदीदा खेल है। मेरा बेटा खिलाड़ी है और वही मुझे हर प्रतियोगिता में ले जाता है। मैं रोज 5 किलोमीटर पैदल चलती हूं।

60 की उम्र में बिगड़ी सेहत, खेलों से मिली नई ऊर्जा

78 वर्षीय पुरुषोत्तम भयानी ने बताया कि 60 की उम्र में मेरी तबीयत खराब रहने लगी थी। तब मैंने खेलों में भाग लेना शुरू किया। अब मैं गोला फेंक, ऊंची कूद, रिले और रेसिंग में हिस्सा लेता हूं। मुझे अब ब्लड प्रेशर या शुगर जैसी कोई बीमारी नहीं है।

खेती से खेल तक का सफर, देश-विदेश में जीते मेडल

72 वर्षीय जगराम जाट ने कहा कि मैं किसान हूं। बचपन से ही खेतों में काम करता रहा हूं। जब भी कोई रास्ता दिखता था, मैं उस पर कूद जाता था। कॉलेज में लंबी कूद में भाग लिया और यहीं से खेल करिअर शुरू हुआ। मैंने मलेशिया में एशियन एथलेटिक्स में गोल्ड मेडल भी जीता।

उदयपुर: रेप पीड़िता की FIR दर्ज नहीं करने पर मांडवा सीआई सस्पेंड

उदयपुर | 15 साल की नाबालिग से रेप और उसके गर्भवती होने के मामले में एफआईआर दर्ज नहीं करने वाले उदयपुर के मांडवा थाने के सीआई देवीलाल मीणा को सस्पेंड कर दिया है। उदयपुर आईजी गौरव श्रीवास्तव ने आदेश जारी करते हुए थानाधिकारी के खिलाफ विभागीय जांच शुरू कर दी है।

भास्कर ने खुलासा करते हुए बताया था कि परिजनों ने 28 जून 2025 को मांडवा थाने में रेप के आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दी थी लेकिन पुलिस ने एफआईआर दर्ज करने के बजाय पंचायत में मामला सुलझाने की सलाह दे दी थी। पीड़िता ने 17 अगस्त को दोबारा मांडवा थाने में रिपोर्ट दी, फिर भी पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। इसके बाद 18 सितंबर को उन्होंने उदयपुर एसपी से न्याय की गुहार लगाई। एसपी ने केस दर्ज करने के आदेश दिए, इसके बावजूद मांडवा थानाधिकारी ने कोई एक्शन नहीं लिया था। पोक्सो जैसे गंभीर मामले में लापरवाही बरतने वालों के साथ मॉनिटरिंग नहीं करने वाले अधिकारी भी जिम्मेदार माने जाते हैं, लेकिन अब तक उन पर कोई कार्रवाई नहीं हुई है।

सख्ती • पेंशन लेने वालों की आय की जांच कराने के आदेश

अधिक बिजली बिल का झटका; 3.2 लाख लोगों की सामाजिक पेंशन रोकी

भास्कर न्यूज | जयपुर

राज्य सरकार ने 3 लाख से ज्यादा लोगों की सामाजिक सुरक्षा पेंशन रोक दी है। सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग ने 24 हजार से ज्यादा सालाना बिजली बिल भरने वाले पेंशन लाभार्थियों को नोटिस भेजा है। विभाग ने उनकी आय की जांच करवाने के आदेश दिए हैं। जांच पूरी होने तक पेंशन नहीं दी जाएगी। सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग के प्रमुख सचिव आशीष मोदी ने कलेक्टरों को चिट्ठी लिखी है। इसमें 24 हजार से ज्यादा का सालाना बिजली बिल भरने वाले पेंशनर्स की आय की नए सिरे से जांच करने और तब तक पेंशन रोकने के आदेश दिए हैं। अब इन पेंशनर्स को नोटिस जारी करने की तैयारी है। अब संबंधित सामाजिक सुरक्षा पेंशन मंजूर करने वाले अधिकारी के स्तर से पेंशन लाभार्थियों को नोटिस जारी किए जाएंगे। उनकी पेंशन के लिए आय पात्रता की गहराई से जांच की जाएगी।

आय 48 हजार से ज्यादा तो पेंशन रद्द

जांच में अगर आय 48 हजार सालाना से ज्यादा पाई जाएगी तो उनकी पेंशन स्थायी रूप से बंद कर दी जाएगी। पेंशन लाभार्थियों की आय अगर 48 हजार या इससे कम पाई जाती है तो रोकी हुई पेंशन फिर से शुरू कर दी जाएगी। इसे लेकर प्रमुख सचिव ने सभी जिलों को निर्देश जारी किए हैं।

जनाधिकार प्राधिकरण ने भेजी रिपोर्ट

आयोजना विभाग के अधीन आने वाले जनाधार प्राधिकरण ने तीनों डिस्कॉम से सालाना बिजली बिल भुगतान की रिपोर्ट सरकार को भेजी है। इसमें आया कि सामाजिक के 3.2 लाख पेंशन लाभार्थियों ने 24 हजार से ज्यादा का सालाना बिजली बिल भरा है। सितंबर 2023 से लेकर अगस्त 2024 तक बिजली बिल भरने वालों का ब्योरा दिया गया। प्रदेश में सामाजिक सुरक्षा पेंशन के लिए 48 हजार रुपए की आय सीमा है। प्रदेश में बुजुर्ग, विधवा, दिव्यांग लोगों को सामाजिक सुरक्षा पेंशन 1 हजार से 1500 तक मिलती है। जो हर साल 15 प्रतिशत बढ़ती है।

तीन लाख पेंशनर्स की आय की घोषणा संदेहास्पद

सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग के आदेशों के मुताबिक 3 लाख से ज्यादा लोगों ने सालाना 24 हजार से ज्यादा का बिजली बिल भरा है। इन पेंशन लाभार्थियों की आवेदन के समय की गई 48 हजार सालाना आय की घोषणा संदेहास्पद लगती है। पेंशनर्स की तरफ से की गई इस घोषणा की गहनता से जांच करवाए जाने की आवश्यकता है।

बारां: हाइवे किनारे पैंथर ने किया गोवंश का शिकार, लोगों में दहशत

शाहाबाद (बारां) | कस्बे के समीप से गुजर रहे एनएच-27 के किनारे सोमवार को एक पैंथर ने गोवंश का शिकार किया। राहगीरों ने इस पूरी घटना को मोबाइल में कैद कर लिया, जो अब क्षेत्र में चर्चा का विषय बनी हुई है। घटना स्थल पर बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ जमा हो गई। जानकारी के अनुसार क्षेत्र के जंगलों में लंबे समय से पैंथरों का मूवमेंट बना हुआ है। वन विभाग लगातार इन पर निगरानी रख रहा है। क्षेत्रीय वन अधिकारी राजेंद्र मेघवाल ने लोगों से अपील की है कि वह जंगल या जंगली क्षेत्रों में जाते समय सतर्क रहें और वन्य जीवों से दूरी बनाए रखें। वन विभाग की टीम मौके पर पहुंचकर स्थिति की मॉनिटरिंग कर रही है। वहीं आसपास के इलाके में गश्त बढ़ा दी गई है। वन अधिकारी मेघवाल ने कहा कि पैंथर मानव के लिए सामान्यतः खतरा नहीं होता, फिर भी एहतियात बरतना जरूरी है।

विवाद्यको के स्थिरीकरण के लिए सम्मन
(आदेश 5 नियम 1 और 5)
न्यायालय अदालत अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश साहब, भिवाड़ी जिला खैरथल-तिजारा (राज.)
करूर वैश्य बैंक लिमिटेड, भिवाड़ी
बनाम श्री साजिद खान व श्री सैकुल
बाबत दावा दिलाये जाने राशि
वाद सं. 63 सत्र 2023

बनाम **1.** साजिद खान पुत्र श्री अली मोहम्मद निवासी मकान नं. 155, गांव मलाहका, तावडू, जिला मेवात, हरियाणा- 122105, **2.** सैकुल पुत्र श्री उमर मौहम्मद निवासी गोग्जाका, तावडू, जिला मेवात, हरियाणा- 122105

वादी ने आपके विरूद्ध दावा दिलाये जाने राशि के लिए एक वाद संस्थित किया है। आपको इस न्यायालय में तारीख 14.10.2025 सन 2025 को दिन में 10 बजे दावे का उत्तर देने के लिए हाजिर होने के लिए समय दिया जाता है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर द्वारा उपसंजात हो सकते है, जिसे सम्यक अनुदेश दिये गये हो और इस वाद से संबंधित सार वार प्रश्नों का उत्तर दे सकें या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो ऐसे सब प्रश्नों का उत्तर दे सके। आपको यह भी निर्देश दिया जाता है कि आप उस दिन अपनी प्रतिरक्षा या लिखित कथन दाखिल करें और उस दिन ऐसे सब दस्तावेज जो आपके कब्जे या शक्ति में है, पेश करे जिस पर आपको प्रतिरक्षा या मुजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित है और यदि आप किसी अन्य दस्तावेज पर चाहे वह आपके कब्जें या शक्ति में हो अपनी प्रतिरक्षा या मुजराई के दावें या प्रति दावे के समर्थन में साक्ष्य के रूप निर्भर करते है तो आप ऐसे दस्तावेजों को उल्लेखित कथन के साथ उपाबद्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्ठ करें। आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होगें तो वादी की सुनवाई व उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जावेगा। आज तारीख 16.07.2025 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया गया है।

न्यायाधीश, अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश, भिवाड़ी

PSPCL Powering Punjab, Enriching Lives **पंजाब स्टेट पॉवर कॉर्पोरेशन लिमिटेड**
(पंजी. कार्यालय : पी.एस.ई.बी. मुख्य कार्यालय, द माल, पटियाला-147001)
कॉर्पोरेट पहचान संख्या : U40109PB2010SGC033813 वेबसाइट: www.pspcl.in
संपर्क संख्या: 96461-15204

निविदा पूछताछ संख्या 06/उप मुख्य अभियंता/डीएस, मंडल, पीएसपीसीएल, मोहाली 2025-26

उप मुख्य अभियंता/डीएस, मंडल, पीएसपीसीएल, मोहाली द्वारा 'डी.एस. मोहाली मंडल के अंतर्गत एयरोसिटी डिवीजन में 11 केवी केबल पर फॉल्ट का पता लगाने हेतु उपयुक्त 1 मिनी ट्रक/वैन माउंटेड सिंगल फेज केबल फॉल्ट लोकेटिंग उपकरण की आपूर्ति हेतु' ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। विस्तृत डीएनआईटी और निविदा विनिर्देशों के लिए कृपया दिनांक 13.10.2025 प्रातः 11:00 बजे से http://eproc.punjab.govt.in देखें।
नोट: शुद्धिपत्र और संशोधन, यदि कोई हो, केवल http://eproc.punjab.govt.in पर प्रकाशित किए जाएँगे।
1079/12/2025-26/4164 C733/25

कार्यालय नगर पालिक निगम बिलासपुर (जोन क्र.02)
ई-प्रोक्योरमेंट निविदा आमंत्रण सूचना

क्र./1162/न.पा.नि./जो 02/लोनिवि/2025-26 तिफरा, दिनांक 13.10.2025
एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों/फर्मो से निम्नलिखित कार्य हेतु ऑनलाईन ई-निविदा दिनांक 06.11.2025 समय 17.30 Hours (IST) तक आमंत्रित की जाती है :-

सिस्टम टेंडर नं.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (रु. लाख में)	अमानत राशि
177543	CONSTRUCTION OF CC ROAD FROM GOVERNMENT HIGHER SECONDARY SCHOOL TO S.L.R.M. CENTRE UNDER ZONE NO. 02	84.49	63,500
177546	CONSTRUCTION OF R.C.C. DRAIN IN RAIPUR-BILASPUR ROAD SIRGITTI CHOWK TO GOKNE NALA BOTH SIDE UNDER ZONE NO. 02 AREA.	326.94	1,63,500

निविदा की सामान्य शर्ते, अमानत राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई- प्रोक्योरमेंट वेबसाईट https://eproc.cgstate.gov.in से दिनांक 14/10/2025 से डाउनलोड/देखी जा सकती है।

कार्यपालन अभियंता (जोन क्रमांक 02)
नगर पालिक निगम बिलासपुर (छ.ग.)

Green City, Clean City, Dream City.

संक्षिप्त

कर्नाटकात मंत्रिमंडळ फेरबदलाच्या चर्चा

बंगळुरू : कर्नाटकच्या मंत्रिमंडळात फेरबदल होणार असल्याच्या चर्चा सुरू आहेत. मुख्यमंत्री सिद्धरामय्या यांनी यासंबंधी आपल्या मंत्रिमंडळातील सहकाऱ्यांना रात्रीच्या भोजनाचे निमंत्रण दिल्याचे बोलले जात आहे. मात्र, नियोजित भोजन आणि मंत्रिमंडळातील फेरबदल यांचा एकमेकांशी काहीही संबंध नाही, असे सिद्धरामय्या यांनी पत्रकारांना सांगितले. पुढील महिन्यात या सरकारला अडीच वर्षे पूर्ण होत आहेत, त्या पार्श्वभूमीवर राज्यात नेतृत्वबदल होण्याच्या चर्चा आहेत.

राज्यसभा निवडणुकीत चित्र स्पष्ट – ओमर

श्रीनगर : या महिन्यात होणाऱ्या राज्यसभेच्या निवडणुकीत भाजपला स्वतःच्या बळावर एकही जागा जिंकता येणार नाही, असा दावा जम्मू आणि काश्मीरचे मुख्यमंत्री ओमर अब्दुल्ला यांनी सोमवारी केला. या निवडणुकीत विजय मिळवण्यासाठी भाजपला घोडेबाजार करावाच लागेल, त्यावेळी भाजपच्या बाजूने कोण आहे आणि विरोधात कोण आहे ते समजेल, असे अब्दुल्ला म्हणाले. जम्मू-काश्मीरमधून राज्यसभेच्या चार जागांसाठी मतदान होणार आहे.

पश्चिम आशियासाठी सुवर्णकाळ

(पान १ वरून) यांच्या पुढाकाराने सुरू झालेल्या युद्धविरामाला पूर्ण रूप मिळालेले नाही. पण ट्रम्प यांनी इस्रायलच्या संसदेच्या व्यासपीठावरून शांततेचे आवाहन केले. ते म्हणाले, 'पुढील पिढ्या हा बदलाचा क्षण लक्षात ठेवतील. इस्रायलने आमच्या मदतीने जिंकता येईल असे सर्व काही बळाचा वापर करून जिंकले. तुम्ही जिंकलात. दहशतवाद्याविरोधात युद्धभूमीवर मिळालेल्या या विजयाचे रूपांतर पश्चिम आशियात दीर्घकालीन शांतता आणि समृद्धीमध्ये करण्याची वेळ आहे.

ट्रम्प यांनी गाझाच्या पुनर्बांधणीसाठी मदत करण्याचे वचन दिले. तसेच पॅलेस्टिनींना दहशतवाद आणि हिंसाचाराचा त्याग करण्याचे आवाहन केले.

शांतता परिषदेला नेतान्याहू अनुपस्थित

इजिप्तमध्ये होत असलेल्या शांतता शिखर परिषदेला इस्रायलचे पंतप्रधान बिन्यामिन नेतान्याहू अनुपस्थित राहणार आहेत. नेतान्याहू यांच्या कार्यालयाने सांगितले की, 'सिमचाट तोरा' या ज्यू सणाला लागून ही परिषद आल्याने नेतान्याहू यांना येता येणार नाही. इजिप्त येथील परिषदेला उपस्थित राहण्यास इराणनेही नकार दिला.

ओलिसांची सुटका

इस्रायल-हमास युद्धविरामाचा एक भाग म्हणून आवश्यक अटीची पूर्तता सोमवारी करण्यात आली. हमासने इस्रायलच्या २० ओलिसांची सुटका केली. ट्रम्प काही ओलिसांची भेट घेण्याची शक्यता आहे. इस्रायलनेही १९०० पॅलेस्टिनी युद्धकैद्यांची सुटका केली आणि गाझामध्ये मदतीचे रस्ते मोकळे केले. गाझातील युद्धग्रस्त जनतेला मदत मिळणे यामुळे सोपे होणार आहे.

नवनिर्मितीतून आर्थिक विकासाच्या संशोधनासाठी तिघांना अर्थशास्त्राचे नोबेल

एपी, स्टॉकहोम

जोल मोकिर, फिलिप अगियॉन आणि पीटर हॉविट यांना सोमवारी अर्थशास्त्राचे नोबेल जाहीर झाले. नवीन तंत्रज्ञान, नवनिर्मितीचा आर्थिक वाढीवर परिणाम आणि नवे तंत्रज्ञान कशा पद्धतीने जुन्या तंत्रज्ञानाची जागा घेते, यावरील संशोधनासाठी त्यांना हा सन्मान जाहीर झाला. 'सर्जनशील विनाश' (क्रिएटिव्ह डिस्ट्रक्शन) असे नाव या आर्थिक संकल्पनेला आहे.

मूळचे नेदरलँडचे असणारे मोकिर (वय ७९) हे आर्थिक इतिहासकार आहेत. अमेरिकेच्या 'नॉर्थवेस्टर्न' विद्यापीठातून त्यांनी संशोधन केले. ऐतिहासिक संदर्भ वापरून दीर्घकाळ कशा पद्धती चालत आल्या आहेत, यावर त्यांचा अभ्यास आहे. तर, हॉविट (वय ७९) आणि अगियॉन (वय ६९) हे 'सर्जनशील विनाश' ही संकल्पना कशी काम करते, याचे स्पष्टीकरण गणिताच्या सहाय्याने करतात. अगियॉन यांनी फ्रान्स येथील 'कॉलेज दी फ्रान्स' आणि 'लंडन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स' येथून संशोधन केले आहे. मूळचे कॅनडाचे असलेल्या हॉविट यांनी अमेरिकेतील 'ब्राउन' विद्यापीठातून संशोधन केले आहे.

तंत्रज्ञानातील बदलानुसार आर्थिक विकासही कसा बदलतो याची रचना करणाऱ्या 'सर्जनशील विनाशा'च्या संकल्पनेवरील संशोधनासाठी यंदाचा नोबेल पुरस्कार जाहीर करण्यात आला आहे.

पीटर हॉविट

जोल मोकिर

फिलिप अगियॉन

(हा पुरस्कार मिळेल) असे अनेक जण म्हणत. पण, मी खरेच सांगतो, की मला (नोबेल मिळेल) याची अजिबात कल्पना नव्हती. नोबेल जाहीर झाल्याने खरेच धक्का बसला.
– जोल मोकिर, नोबेलविजेते

नोबेल जाहीर झाल्याने आनंद झाला. आनंद व्यक्त करण्यासाठी शब्द सापडत नाहीत. पुरस्कारातून मिळणारी रक्कम संशोधनासाठी उभारलेल्या प्रयोगशाळेसाठी वापरीन.
– फिलिप अगियॉन, नोबेलविजेते

अर्थशास्त्रामध्ये त्यांचे संशोधन परस्परविरोधी पण पूरक दृष्टिकोन देणारे असे आहे. अगियॉन आणि हॉविट यांनी सातत्यपूर्ण विकास कसा होतो, याचा अभ्यास करून १९९२ मध्ये एक लेख लिहिला होता. त्यांनी 'सर्जनशील विनाश' संकल्पना स्पष्ट करण्यासाठी एक गणितीय प्रारूप तेव्हा मांडले होते. अगियॉन यांनी फ्रान्सचे अध्यक्ष इमॅन्युएल माक्राँ यांच्या २०१७ मधील निवडणूक प्रचारासाठीचा आर्थिक कार्यक्रम आखण्यासाठी मदत केली होती.

'आर्थिक वृद्धी गृहित धरता कामा नये, हे नोबेलविजेत्या तीन संशोधकांनी त्यांच्या संशोधनातून दाखवून दिले आहे. साचलेपणाच्या स्थितीत अडकू नये, म्हणून 'सर्जनशील विनाश' या संकल्पनेला आपण स्वीकारले पाहिजे,' असे प्रतिपादन अर्थशास्त्रासाठी नोबेल जाहीर करणाऱ्या समितीचे अध्यक्ष जोन हॅसलर यांनी केले.

गेल्या आठवड्यात वैद्यकीय क्षेत्रासाठीचे, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, साहित्य आणि शांततेचे नोबेल जाहीर करण्यात आले.

जागावाटपास विलंब

बिहारमध्ये महाआघाडीचा निर्णय दोन दिवसांत

लोकसत्ता विशेष प्रतिनिधी

नवी दिल्ली : बिहार विधानसभा निवडणुकीसाठी राष्ट्रीय लोकशाही आघाडीने (एनडीए) जागावाटप घोषित केल्यामुळे विरोधकांच्या 'महागठबंधन'वर जागावाटपासाठी दबाव वाढला आहे. मात्र, जागावाटपाची घोषणा होण्यासाठी किमान दोन ते तीन दिवसांचा कालावधी लागू शकतो, असा दावा काँग्रेसचे महासचिव जयराम रमेश यांनी केला. काँग्रेस व राष्ट्रीय जनता दल यांच्यामध्ये जागांवरून रस्सीखेच सुरू असून या वेळी काँग्रेसला कमी जागांवर समाधान मानावे लागेल असे संकेत दिले जात आहेत.

राष्ट्रीय जनता दलाचे प्रमुख लालूप्रसाद यादव व तेजस्वी यादव यांच्यासह प्रमुख नेते दोन दिवस दिल्लीत तळ ठोकून आहेत. 'आयआरसीटीसी' घोटाळाप्रकरणी यादव पिता-पुत्रांना दिल्लीतील 'राऊस एव्हेन्यू' न्यायालयात हजर राहावे लागले. मात्र, सोमवारी दिवसभर काँग्रेस व राष्ट्रीय जनता दलाच्या नेत्यांच्या बैठका सुरू होत्या. तेजस्वी यादव यांनी काँग्रेसचे नेते राहुल गांधी यांची जागावाटपावर अंतिम चर्चा करण्यासाठी भेट घेतली. तेजस्वी यादव मंगळवारी पाटण्यात पोहोचणार असून त्यानंतर इतर घटक पक्षांशी चर्चा केल्यानंतर जागावाटपाची घोषणा केली जाणार असल्याचे समजते.

काँग्रेसला ५५ ते ६० जागा

काँग्रेसला ५५-६० जागांवर समाधान मानावे लागू शकते. गेल्या वेळी काँग्रेसने ७० जागा लढवून फक्त १९ जागा जिंकल्या होत्या. या वेळी तेजस्वी यादव काँग्रेसला जास्त जागा देण्यास तयार नाहीत. त्यामुळेही जागावाटपाची बोलणी रखडल्याचे सांगितले जाते. २४३ जागांपैकी राष्ट्रीय जनता दल १३०-१३५, काँग्रेस ५५-६०, माकप-माले २२-२५, विकासशील इन्सान पार्टी १८-२०, माकप-भाकप १०, उर्वरित जागा इतर घटक पक्षांना दिल्या जातील, असे काँग्रेसच्या वरिष्ठ नेत्यांचे म्हणणे आहे.

'एनडीए'मध्ये भाजपच मोठा भाऊ

- भाजपच्या केंद्रीय निवडणूक समितीच्या बैठक सुरू होण्यापूर्वीच पक्षाच्या नेत्यांनी 'एनडीए'च्या जागावाटपाची घोषणा केली.
- भाजप व जनता दल (सं) हे दोन्ही पक्ष प्रत्येक १०१ अशा समान जागा लढवणार असले तरी, आता बिहारमधील 'एनडीए'मध्ये भाजपच मोठा भाऊ झाल्याचे मानले जात आहे.
- गेल्या वेळी जनता दलाने (सं) ११५ आणि भाजपने ११० जागा लढवल्या होत्या. या वेळी स्वतःला मोदींचे हनुमान मानणारे चिराग पासवान हेही 'एनडीए'मध्ये आले असून त्यांच्या लोकजनशक्ती (रामविलास पासवान) पक्षाला २९ जागा देण्यात आल्या आहेत. उपेंद्र कुशवाह यांच्या राष्ट्रीय लोकमोर्चा व जीतनराम मांझी यांच्या हिंदुस्थान आवामी मोर्चाला प्रत्येक सहा जागा देण्यात आल्या आहेत.
- त्यामुळे अप्रत्यक्षपणे भाजप १४२ जागा लढवत असल्याची चर्चा सत्तेच्या वर्तुळात रंगली आहे. पंतप्रधान मोदींच्या उपस्थितीत रविवारी भाजपचे १०१ उमेदवार निश्चित करण्यात आल्याचे समजते.

करुर चेंगराचेंगरीची सीबीआय चौकशी

सर्वोच्च न्यायालयाची उच्च न्यायालयाच्या न्यायाधीशांवर नाराजी

पीटीआय, नवी दिल्ली

तमिळनाडूच्या करुर येथे २७ सप्टेंबरला झालेल्या चेंगराचेंगरीची सीबीआय चौकशी करावी, असे आदेश सर्वोच्च न्यायालयाने सोमवारी दिले. या चौकशीवर देखरेख करण्यासाठी सर्वोच्च न्यायालयाचे माजी न्यायाधीश न्या. अजय रस्तोगी यांच्या अध्यक्षतेखाली एक समिती स्थापन करण्यात आली आहे.

'तमिळगा वेत्री कळघम' (टीव्हीके) या पक्षाचे प्रमुख आणि चित्रपट अभिनेते विजय यांच्या करुर येथे आयोजित करण्यात आलेल्या सभेच्या वेळी चेंगराचेंगरी होऊन ४१ जणांचा मृत्यू झाला होता. मद्रास उच्च न्यायालयाच्या न्या. एन. सेंथिलकुमार यांनी चेंगराचेंगरीप्रकरणी विशेष तपास पथकाकडून (एसआयटी) चौकशीचे आदेश दिले होते. त्या आदेशाला 'टीव्हीके'ने सर्वोच्च न्यायालयात आव्हान दिले होते. तसेच याप्रकरणी सीबीआय चौकशीची त्यांनी मागणी केली होती. उच्च न्यायालयात दाखल याचिकेत केवळ सभा आयोजित करण्यासाठी मानक कार्यप्रणालीसंबंधित होती. तरीही उच्च न्यायालयाने आपल्याविरोधात अनेक टिप्पण्या केल्या, अशी तक्रार 'टीव्हीके'ने सर्वोच्च न्यायालयात दाखल केलेल्या याचिकेत केली होती.

या याचिकेवर सोमवारी दिलेल्या निकालामध्ये सर्वोच्च न्यायालयाच्या न्या. जे. के माहेश्वरी आणि न्या. एन. व्ही. अंजारिया यांच्या खंडपीठाने न्या. एन. सेंथिलकुमार यांच्याबद्दल नाराजी व्यक्त केली.

या प्रकरणाच्या चौकशीची मागणी करणाऱ्या याचिका मदुराई खंडपीठासमोर प्रलंबित असताना, मुख्य न्यायाधीशांच्या आदेशाशिवाय एकल खंडपीठाने या याचिका दाखल करून घेण्याचे काहीच कारण नव्हते.
– सर्वोच्च न्यायालय

सर्वोच्च न्यायालयाची निरीक्षणे

- करुर चेंगराचेंगरीचे प्रकरण जिथे खटला दाखल करण्यात आला त्या मदुराई खंडपीठाच्या अधिकारक्षेत्रात मोडते.
- एकल खंडपीठाचे न्यायाधीश अशा निष्कर्षापर्यंत कसे पोहोचले, न्यायालयाने कोणत्या सामग्रीची तपासणी केली याबद्दल उच्च न्यायालयाच्या निकालात काहीही नमूद केलेले नाही.
- उच्च न्यायालयाच्या आदेशामध्ये केवळ अतिरिक्त अधिवक्त्यांनी सादर केलेल्या निवेदनांचा संदर्भ देण्यात आला.
- उच्च न्यायालयासमोर दाखल याचिकांमध्ये 'टीव्हीके' पक्ष आणि त्यांच्या सदस्यांना पक्षकार करण्यात आले नव्हते, तरीही त्यांना सुनावणीची संधी न देता त्यांच्याविरोधात टिप्पणी करण्यात आली.

पश्चिम बंगालमध्ये राजकीय वाद सुरूच

सामूहिक बलात्कारप्रकरणी आणखी दोघांना अटक

पीटीआय, कोलकाता

पश्चिम बंगालच्या दुर्गापूर येथे वैद्यकीय शाखेच्या एका २३ वर्षीय विद्यार्थिनीवरील सामूहिक बलात्कार प्रकरणी सोमवारी आणखी दोघांना अटक करण्यात आली. यामुळे या प्रकरणात अटक करण्यात आलेल्यांची संख्या पाच झाल्याचे पोलिसांनी सांगितले. मात्र, या प्रकरणात पुरावे नष्ट करण्यात येत आहेत आणि संशयितांना केलेली अटक ही धूळफेक आहे, असा आरोप भाजप नेते आणि विधानसभेतील विरोधी पक्षनेते सुवेंदू अधिकारी यांनी केला.

आसनसोल-दुर्गापूरचे पोलीस उपायुक्त अभिषेक गुप्ता यांनी सांगितले की, पीडित मुलीने दाखल केलेल्या तक्रारीवरून या सर्वांना अटक करण्यात आली आहे. पीडित मुलगी ओडिशाच्या बालेश्वर जिल्ह्यातील रहिवासी आहे आणि ती दुर्गापूरमधील एका खासगी वैद्यकीय महाविद्यालयात शिकते. ती शुक्रवारी रात्री तिच्या मित्राबरोबर जेवणासाठी महाविद्यालयाच्या कॅम्पसबाहेर गेली असता, सामूहिक बलात्कार झाल्याची तक्रार तिने नोंदवली. तिच्या मित्राच्या हालचालींबद्दल संशय असल्याने त्याला चौकशीसाठी ताब्यात घेतल्याचे पोलिसांनी सांगितले.

दुर्गापूर सामूहिक बलात्काराचा निषेध करत कोलकात्यामध्ये सोमवारीही निदर्शने करण्यात आली.

मुलीच्या पालकांना तिचे वैद्यकीय अहवाल देण्यात आलेले नाहीत. पालकांनाही रुग्णालयात तिला भेटण्याची परवानगी नाही. हा पुरावा नष्ट करण्याचा प्रयत्न आहे.
– सुवेंदू अधिकारी, नेते, भाजप

अपराजिता विधेयकावरून वाद

दुर्गापूर बलात्कार प्रकरणावरून सत्ताधारी तृणमूल काँग्रेसची कोंडी करण्याचा भाजप प्रयत्न करत असताना, तृणमूल काँग्रेसने अपराजिता विधेयकाचा मुद्दा उपस्थित केला आहे. अपराजिता विधेयकामध्ये महिलांविरोधातील गुन्ह्यांसाठी अधिक कठोर शिक्षेची तरतूद करण्यात आली आहे. मात्र, केंद्रातील मोदी सरकार हे विधेयक मंजूर होऊ देत नसल्याचा आरोप तृणमूल काँग्रेसने केला.

याप्रकरणी पाच जणांना करण्यात आलेली अटक निव्वळ धूळफेक असून सर्व संशयितांना १५-२० दिवसांनी जामीन मिळेल, असा दावा विरोधी पक्षनेते सुवेंदू अधिकारी यांनी केला. एक संशयित तृणमूल काँग्रेसशी संबंधित असल्याचा आरोपही त्यांनी केला. मात्र, तृणमूल काँग्रेसने हा आरोप फेटाळताना राज्यातील प्रत्येक दुसरी व्यक्ती आमच्या पक्षाशी संबंधित असल्याचे सांगितले. या प्रकरणी कठोर कारवाई करावी, असे राज्यपाल सी. व्ही. आनंद बोस म्हणाले.

निवडणुकीच्या तोंडावर लालू, कुटुंबीय अडचणीत

(पान १ वरून)तेजस्वी यादव यांनी दिली. घोटाळे करणे, जनतेची फसवणूक करणे हेच राजद सरकारचे प्रारूप आहे अशी टीका भाजप नेते रविशंकर प्रसाद यांनी दिल्ली येथे पत्रकार परिषदेत केली.

भ्रष्टाचार प्रतिबंधक कायद्यांतर्गत लालूप्रसाद यादव यांच्यावर सार्वजनिक पदाचा गैरवापर केल्याचा ठपका ठेवण्यात आला आहे. लालूप्रसाद, राबडीदेवी आणि तेजस्वी यादव यांच्यावर खटला सुरू होईल. दोष सिद्ध झाल्यास त्यांना कारावास, दंड आणि सार्वजनिक पदावरून अपात्र ठरवले जाऊ शकते.

अमिताभ बच्चन यांच्याकडून भूखंडांची खरेदी

मुनवली येथे तीन जागांमध्ये गुंतवणूक

लोकसत्ता विशेष प्रतिनिधी

अलिबाग : शाहरुख खान, रणवीर सिंग, दीपिका पदुकोण, अनुष्का शर्मा पाठोपाठ ज्येष्ठ अभिनेते अमिताभ बच्चन हे देखील अलिबागकर झाले आहेत. त्यांनी मुनवली येथे सहा कोटींना तीन विकसित भूखंड खरेदी केले आहेत.

पर्यटनस्थळ म्हणून ओळखले जाणारे अलिबाग गेल्या काही वर्षांत प्रमुख गुंतवणूक केंद्र झाले आहे. देशातील बडे उद्योजक, कलावंत आणि क्रिकेटपटू यांनाही अलिबागमध्ये गुंतवणुकीचा मोह आवरता आलेला नाही. शाहरुख खान, अक्षय खन्ना, रणवीर सिंग, दीपिका पदुकोण, अनुष्का शर्मा, राम कपूर, क्रिती सॅनन पाठोपाठ आता बीग बी अमिताभ बच्चन यांनीही अलिबागमध्ये विकसित भूखंड खरेदी केले आहेत. अलिबाग तालुक्यातील मुनवली येथे त्यांनी ८ हजार ८८० चौरस फुटांचे तीन विकसित भूखंड खरेदी केले आहेत. ज्याचे बाजारमूल्य ६ कोटी ५९ लाख रुपये आहे.

कॅनडाच्या परराष्ट्रमंत्र्यांची मोदी यांच्याशी चर्चा

नवी दिल्ली : कॅनडाच्या परराष्ट्रमंत्री अनिता आनंद यांनी सोमवारी पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांची भेट घेतली. पंतप्रधानांनी कॅनडाबरोबर व्यापार, ऊर्जा, तंत्रज्ञानाशी संबंधित क्षेत्राचे महत्त्व या भेटीत अधोरेखित केले.

या वर्षी जून महिन्यात कॅनडाचे पंतप्रधान मार्क कार्नी यांच्याबरोबर झालेल्या भेटीच्या आठवणींना पंतप्रधानांनी उजाळा दिला. कॅनडाचे पंतप्रधान कार्नी यांना मोदी यांनी शुभेच्छा दिल्या. अनिता आनंद यांचे रविवारी सायंकाळी आगमन झाले. त्या चीन आणि सिंगापूरचाही दौरा करणार आहेत.

'दोन्ही देशांनी व्यापार, गुंतवणूक, महत्त्वाची खनिजे, ऊर्जा, नागरी आण्विक सहकार्य या क्षेत्रांत भागीदारीसाठी महत्त्वाकांक्षी आराखडा केला आहे,' असे परराष्ट्रमंत्री एस. जयशंकर यांनी सोमवारी केले.

मविआ नेत्यांबरोबर आज राज ठाकरे एकत्र

(पान १ वरून) पारदर्शक व संविधानाचे पूर्ण पालन व्हावे ही राजकीय पक्षांची भूमिका आहे, असे खासदार राऊत यांनी सांगितले. यावर निवडणूक आयोगाचे लक्ष वेधण्यासाठी मुख्य निवडणूक अधिकारी चोकलिंगम यांची सर्वपक्षीय शिष्टमंडळ भेट घेणार आहे.

शरद पवार अनेक वर्षांनंतर मंत्रालयात

राज्याचे चार वेळा मुख्यमंत्रीपद भूषविलेले शरद पवार हे मंत्रालयात कधी येत नाहीत. मंत्रालयाला लागलेल्या आगीनंतर त्यांनी तेथे भेट दिली होती. यामुळे पवार हे अनेक वर्षांनंतर मंत्रालयात येणार आहेत. दुसरीकडे, सर्वपक्षीय शिष्टमंडळात जाण्यावरून काँग्रेसमध्ये दोन मतप्रवाह आहेत. काही जणांच्या मते मनसेबरोबर पक्षाच्या नेत्यांनी जाऊ नये, अशी भूमिका पक्षाच्या बैठकीत मांडण्यात आली.

हरकती, सूचनांसाठी मुदतवाढ

राज्यातील नगर परिषदा व नगरपंचायतींच्या सदस्यपदाच्या व थेट अध्यक्षपदाच्या सार्वत्रिक निवडणुकीसाठीच्या प्रभागनिहाय प्रारूप मतदार यादीवरील हरकती व सूचनांसाठी १७ ऑक्टोबरपर्यंत राज्य निवडणूक आयोगाने मुदतवाढ दिली आहे. नगरपरिषदा व नगरपंचायत निवडणुकांसाठी प्रभागनिहाय प्रारूप मतदार यादी ८ ऑक्टोबर २०२५ रोजी प्रसिद्ध करण्यात आली होती. त्यावर आता १३ ऑक्टोबरऐवजी १७ ऑक्टोबर २०२५ पर्यंत हरकती व सूचना दाखल करता येतील. प्रभागनिहाय अंतिम मतदार यादी २८ ऑक्टोबरऐवजी ३१ ऑक्टोबर २०२५ रोजी प्रसिद्ध केली जाणार आहे.

जागतिक मृत्युदरात घट, तरीही तरुणांना धोका कायम?

पीटीआय, नवी दिल्ली

जागतिक पातळीवर मृत्युदर ६७ टक्क्यांनी कमी झाला आहे, मात्र तरुणांमधील मृत्युदर त्या प्रमाणात कमी झालेला नाही असा निष्कर्ष 'द लान्सेट जर्नल'मध्ये प्रसिद्ध झालेल्या संशोधनात काढण्यात आला आहे. आत्महत्या, अमली पदार्थांचे अतिसेवन आणि अतिप्रमाणात मद्यसेवन ही तरुणांमधील मृत्यूंची मुख्य कारणे असल्याचे आढळून आले आहे.

'द लान्सेट'च्या पाहणीनुसार, २०२३ या वर्षात चीनमध्ये सर्वाधिक म्हणजे १.०७ कोटी मृत्यू झाले. त्यापाठोपाठ भारतात ९८.५ लाख आणि अमेरिकेत ३० लाखांपेक्षा अधिक मृत्यूंची नोंद करण्यात आली. मात्र, लोकसंख्येच्या तुलनेत क्रमवारी लावली असता मृत्युदरामध्ये भारताचा ७३वा क्रमांक नोंदवण्यात आला. तर, चीनचा १६६वा आणि अमेरिकेचा १६०वा क्रमांक आहे. करोना महासाथीशी संबंधित मृत्यूमध्येही भारत पहिल्या पाच देशांमध्ये आहे.

'द लान्सेट जर्नल' या वैद्यकशास्त्राशी संबंधित प्रकाशनामध्ये तरुणांच्या मृत्युदराची तुलना जागतिक मृत्युदराशी करण्यात आली आहे. त्याचे निष्कर्ष चिंता निर्माण करणारे आहेत.

संशोधनाचे स्वरूप

'ग्लोबल बर्डन ऑफ डिसीज (जीबीडी) २०२३' या जागतिक पातळीवर करण्यात आलेल्या संशोधनात ३ लाख १० हजारांपेक्षा जास्त सूत्रांकडून मिळालेल्या डेटाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. या अभ्यासात जगभरातील १४ हजारांपेक्षा जास्त संशोधक आणि तज्ज्ञ सहभागी झाले होते.

जगातील वृद्धांच्या लोकसंख्येत झपाट्याने वाढ आणि नवनवीन जोखमीचे घटक ही नवीन युगातील जागतिक आरोग्यासमोरील मोठी आव्हाने आहेत.
– डॉ. ख्रिस्तोफर मरे, 'युनिव्हर्सिटी ऑफ वॉशिंग्टन'

अभ्यासकांची निरीक्षणे

- उच्च रक्तदाब, वायुप्रदूषण, धुम्रपान आणि लठ्ठपणा यासारख्या ८८ जोखमीच्या घटकांवर उपाययोजना केल्यास जगातील मृत्यू आणि अपंगत्वाचे प्रमाण जवळपास निम्म्याने कमी करणे शक्य
- मधुमेह, अतिचिंता आणि नैराश्य यात झपाट्याने वाढ; लवकर मृत्यू आणि अपंगत्वाचे पहिल्या १०मधील कारणे
- १९५०पासून आयुर्मानात २० वर्षांपेक्षा जास्त कालावधीने वाढ
- करोना महासाथीपूर्वी महिलांचे सरासरी आयुर्मान ७६, तर पुरुषांचे सरासरी आयुर्मान ७१ वर्षे

'कोल्ड्रिफ'चा परवाना रद्द

२२ मुलांच्या मृत्यूच्या तपासासाठी 'ईडी'चेही छापे

पीटीआय, चेन्नई

मध्य प्रदेशातील २२ मुलांच्या मृत्यूस कारणीभूत ठरलेल्या 'कोल्ड्रिफ' या खोकल्यावरील औषधाचे उत्पादन करणाऱ्या 'श्रेसन फार्मास्युटिकल्स' कंपनीचा औषध निर्मितीचा परवाना तमिळनाडू सरकारने रद्द केला आहे. तसेच कंपनीचे कारखाने पूर्णपणे बंद करण्याचे आदेश देण्यात आले आहेत. दरम्यान, या प्रकरणातील कथित आर्थिक गैरव्यवहाराचे धागेदोरे तपासण्यासाठी सक्तवसुली संचालनालयही (ईडी) सक्रिय झाले असून कंपनीशी संबंधित सात ठिकाणी छापे टाकण्यात आले आहेत.

तमिळनाडूतील अन्न औषध प्रशासनाच्या पथकाच्या तपासणीत या औषधात 'डिथायलीन ग्लायको' या विषारी घटकाचे प्रमाण ४८.६ टक्के असल्याचे समोर आले होते. त्याचप्रमाणे निर्मिती प्रक्रिया आणि प्रयोगशाळेतील सदोष पद्धतींसह जवळपास ३०० महत्त्वाच्या नियमांचे उल्लंघन कंपनीने केल्याचे समोर आले होते.

सात ठिकाणी कारवाई

याप्रकरणी अंमलबजावणी संचालनालयाने सोमवारी आर्थिक गैरव्यवहार प्रतिबंधक कायद्यांतर्गत कंपनीसह अधिकाऱ्यांच्या निवासस्थान व कार्यालयांवर छापे टाकले आहेत. यामध्ये कंपनीचे प्रमुख अधिकारी आणि अन्न व औषध प्रशासनाचे संचालक पी. यू. कार्तिकेयन यांच्याशी संबंधित ठिकाणांचाही समावेश आहे. कार्तिकियन यांना जुलैमध्ये लाचप्रकरणी अटकही करण्यात आली होती. आर्थिक गैरव्यवहार प्रतिबंधक कायद्यानुसार औषध विक्रीतून झालेला नफा हा गुन्ह्यातून मिळालेला असून त्याबाबत पुरावे गोळा करण्यात येत असल्याचे 'ईडी'ने सांगितले.

संक्षिप्त

चर्चासत्राचे आयोजन

शोधइको या संस्थेच्या वतीने 'महिला सक्षमीकरण : महिला बचत गटांचे अर्थव्यवस्थेतील योगदान' या विषयावर चर्चासत्राचे आयोजन करण्यात आले आहे. या चर्चासत्रात ज्ञान प्रबोधिनीच्या स्त्री शक्ती ग्रामीण विभागाच्या प्रमुख सुवर्णा गोखले मार्गदर्शन करणार असून, गुरुवारी (१६ ऑक्टोबर) सायंकाळी सव्वा सहा ते रात्री आठ या वेळेत कर्वेनगर येथील अलंकार हॉलमध्ये हा कार्यक्रम होणार आहे. संस्थेच्या अध्यक्ष हर्षदा अभ्यंकर यांनी निवेदनाद्वारे ही माहिती दिली.

पर्यावरणपूरक प्रयोगशाळेचे उद्घाटन

ज्येष्ठ शास्त्रज्ञ डॉ. रघुनाथ माशेलकर यांच्या हस्ते हेबर कंपनीच्या 'एआय' तंत्रज्ञानावर आधारित 'ग्रीन केमिस्ट्री लॅब'चे उद्घाटन करण्यात आले. कंपनीचे मुख्य कार्यकारी अधिकारी विपिन राघवन या वेळी उपस्थित होते. शाश्वत विकासासाठी औद्योगिक रसायनशास्त्रातील प्रयोगशीलतेला वेग मिळावा म्हणून या पर्यावरणपूरक प्रयोगशाळेची निर्मिती करण्यात आल्याचे कंपनीकडून सांगण्यात आले.

मोटोटेक परिषद

ऑटोमोटिव्ह उत्पादन क्षेत्रात धोरणात्मक बदलांचा आढावा घेण्यासाठी पुण्यात 'मोटोटेक २०२५' या परिषदेचे आयोजन करण्यात आले होते. या परिषदेत अशोक लेलँड कंपनीचे उपाध्यक्ष सचिन गोयल, पुष्कराज ग्रुपचे व्यवस्थापकीय संचालक शैलेंद्र गोस्वामी, इन्स्टिट्यूट ऑफ सप्लाय चेन मॅनेजमेंटचे अध्यक्ष डॉ. राकेश सिंग यांनी मार्गदर्शन केले.

'रंगभोग सेवा' उपक्रम

'के अँड क्यू परिवार' या सांस्कृतिक संस्थेच्या वतीने तुळशीबागेतील श्रीराम मंदिरात गुरुवारी (१६ ऑक्टोबर) सकाळी सात वाजता प्रभू श्रीरामाची 'रंगभोग सेवा' या उपक्रमाचे आयोजन करण्यात आले आहे. यावेळी केतकी फडके-शहा आणि त्यांच्या विद्यार्थिनी कथक सादरीकरण करणार आहेत. याच कार्यक्रमात शिखंडी ढोल पथकाच्या मनस्वी गोईलकर यांना विशेष पुरस्काराने गौरविण्यात येणार असल्याचे संस्थेकडून सांगण्यात आले.

मानसिक आरोग्यावर जनजागृती

मानसिक आरोग्याविषयी जनजागृती करण्यासाठी महाराष्ट्र मानसिक आरोग्य संस्थेच्या वतीने जंगली महाराज रस्ता परिसरात पथनाट्याचे सादरीकरण करण्यात आले. जागतिक मानसिक आरोग्य दिनानिमित्त या उपक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते. या वेळी संस्थेचे संचालक प्रा. डॉ. अजय चंदनवाले यांनी मानसिक आरोग्याविषयी मार्गदर्शन केले. संस्थेच्या विद्यार्थ्यांसह उडान फाउंडेशन आणि बावधन येथील सूर्यदत्ता कॉलेजने उपक्रमात सहभाग नोंदविला.

त गा दा
तक्रार गाऱ्हाणे दाद

नागरिकांना आपल्या शहराविषयी काय वाटते, शहरात सुरू असलेले प्रकल्प किंवा उपलब्ध सेवा-सुविधांमध्ये कोणते उपाय सुचवावेसे वाटतात, ते राहतात त्या भागांत कोणत्या समस्या जाणवतात, आदी बाबी मांडण्यासाठीचे हे व्यासपीठ...

तुम्हीही पाठवू शकता समस्या

तुम्हाला तुमच्या भागात जाणवणाऱ्या समस्यांबाबत तुमचे मत वा गाऱ्हाणे मांडायचे असेल, तर त्यासाठी ई-मेल आयडी : lokpune4@gmail.com

खड्ड्यांच्या प्रश्नाचा निकाल कधी?

प्रातिनिधीक छायाचित्र

राज्याचे प्रमुख असलेले मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस यांना पुण्यातील रस्त्यांवर पडलेल्या खड्ड्यांची दखल घ्यावी लागते; पुण्यासाठी यासारखी दुसरी दुर्दैवी गोष्ट नाही. उपमुख्यमंत्री अजित पवार शहराचे पालकमंत्री आहेत. ते दर आठवड्याला विविध प्रश्नांवर बैठका घेत प्रशासनाला सूचना देत असतात. उपमुख्यमंत्री, नगरविकासमंत्री एकनाथ शिंदे यांनीही शहरातील वाहतूककोंडी सोडविण्याबरोबर रस्त्यांवर पडलेल्या खड्ड्यांची दुरुस्ती करण्यासाठी महापालिका प्रशासनाला सूचना दिलेल्या आहेत. मात्र, त्यानंतरही खड्ड्यांचा प्रश्न निकाली न निघाल्याने मुख्यमंत्र्यांना याची दखल घ्यावी लागली.

खरे तर पुणे शहरामध्ये दोन खासदार, आठ आमदार, मंत्री हे सत्ताधारी पक्षाचे असूनही पुण्यासारख्या प्रसिद्ध शहराची ही दुरवस्था आहे. लोकप्रतिनिधी विकासासाठी निवडून दिले जातात, की फक्त एकमेकांवर आरोप-प्रत्यारोप करणे याला विकास म्हणायचा? रस्तेदुरुस्तीसाठी दर वर्षी कोट्यवधींचा खर्च केला जातो. पण, प्रत्येक वेळी हा खर्च रस्ते, खड्डे दुरुस्तीसाठीच केला जातो का? शिवाय महापालिका प्रशासन विचारते, की रस्त्यांवर खड्डे कोठे आहेत? सगळे रस्ते चांगल्या स्थितीत आहेत, असे प्रशासनाचे म्हणणे.

सिमेंट-काँक्रिटच्या रस्त्यांवर डांबर आणि डांबरी रस्त्यांवर सिमेंट असा महापालिका प्रशासनाचा कारभार सुरू आहे. महापालिका प्रशासनाचे डांबर म्हणजे पाण्यात विरघळणारा पदार्थ आहे. हे डांबर तात्पुरते चिकटते आणि दोन-चार दिवसांनी खडीमिश्रित स्वरूपात रस्त्यांवर पसरते. त्यामुळे अपघात होत आहेत. त्यामुळे वाहनचालकांना मणक्याचे, पाठीचे, हाडांचे दुखणेदेखील मोठ्या प्रमाणात सुरू झाले आहे. याला सर्वस्वी प्रशासनाचा मनमानी कारभारच जबाबदार आहे.

पुण्यातील खड्ड्यांच्या समस्येची दखल आता मुख्यमंत्री फडणवीस यांनी घेतलीच आहे, तर आतापर्यंत रस्त्यांवर खड्डे पडण्यास नक्की कोणत्या गोष्टी जबाबदार आहेत, याची सखोल माहिती घेऊन कठोर निर्णय घेतला पाहिजे. त्यानंतरच पुणेकर नागरिकांची खड्डे, वाहतूककोंडी आणि पार्किंगचा गंभीर झालेला प्रश्न यांमधून सुटका होईल.

■ **अनिल अगावणे**, नारायण पेठ

रेल्वेच्या पुलाखाली खड्डे

जुन्या मुंबई-पुणे रस्त्यावरून खडकी रेल्वे पोलीस स्टेशनकडे गेल्यानंतर रेल्वेचा पूल आहे. या पुलाखाली पाऊस असो वा नसो, सतत पाणी साचलेले असते. हा पूल कटक मंडळाच्या हद्दीत येत असल्याने महापालिका याकडे फारसे लक्ष देत नाही.

गेल्या काही दिवसांपासून या पुलाखाली मोठे खड्डे पडले आहेत. त्यामुळे वाहनचालकांना त्रास होतो. रस्त्यावर खड्डे असल्याने वाहनांचा वेग कमी होतो. त्यामुळे येथे अनेकदा वाहतुकीची कोंडीदेखील होते.

मोटारसायकल, स्कूटर नेताना वाहनचालकांना त्रास होतो. पुणे महापालिका आणि खडकी कॅन्टोन्मेंट बोर्ड, या प्रश्नाकडे गांभीर्याने लक्ष देऊन ही समस्या कधी सोडविणार?

■ **संजय तांबुळवाडीकर**, औंध

पदपथावर पाणी

बिबवेवाडी येथील स्वामी विवेकानंद मार्गावरील राजर्षी शाहू सहकारी बँकेजवळ असलेल्या पदपथावरून सतत पाणी वाहत आहे. हे पाणी नक्की कुठून गळत आहे, इमारतीमधून नलिका फुटून सांडपाणी येत आहे का, याचा मागोवा घेण्याचा प्रयत्न यापूर्वी स्थानिकांनी करून महापालिकेच्या अधिकाऱ्यांनाही स्रोत शोधून त्याचा बंदोबस्त करण्याची विनंती केली आहे. परंतु, आजपर्यंत त्यावर कायमची उपाययोजना करण्यात आलेली नाही.

याच भागात रस्त्याच्या दुसऱ्या बाजूला पदपथावर असलेल्या झाडाच्या पायाशी एक नलिका फुटून पाण्याचे कारंजे उडत आहे. या दोन्ही ठिकाणी पदपथावरून रस्त्याकडे सतत वाहत जाणाऱ्या पाण्यामुळे शेवाळे साचून पदपथ निसरडा होऊन पादचाऱ्यांना धोकादायक ठरत आहे. एका बाजूला महापालिका 'स्वच्छ पुणे, सुंदर पुणे' नावाखाली लाखो रुपये जाहिरातींवर खर्च करते. दुसरीकडे, वारंवार तक्रारी करूनही त्याची दखल घेतली जात नाही.

बिबवेवाडीप्रमाणेच शहरातील विविध भागांत अशा पद्धतीने पाण्याची गळती होत असेल. त्याच्या तक्रारीही महापालिकेकडे आलेल्या असतील. मात्र, जोपर्यंत महापालिकेतील संबंधित अधिकारी त्याची दखल घेऊन प्रत्यक्ष जागेवर जाऊन पाहणी करून उपाययोजना करणार नाहीत, तोवर हे प्रश्न सुटणार नाहीत.

■ **श्रीपाद कुलकर्णी**, बिबवेवाडी

अवजड वाहनांवर निर्बंध

आयटी पार्कमध्ये वाढत्या अपघातांनंतर 'पीएमआरडीए'चा निर्णय

लोकसत्ता प्रतिनिधी

पुणे : हिंजवडी आयटी पार्कसह परिसरात अवजड वाहनांमुळे अपघात वाढले असून, काही जणांना जीवही गमवावा लागला आहे. यामुळे पुणे महानगर प्रदेश विकास प्राधिकरणाने (पीएमआरडीए) अवजड वाहनांवर निर्बंध लागू केले आहेत. पोलिसांनी आखून दिलेल्या वेळेतच अवजड वाहनांना प्रवेश आणि चालक नशेत नसल्याची तपासणी या बाबी बंधनकारक करण्यात आल्या आहेत.

हिंजवडी आयटी पार्क परिसरात अवजड वाहनांमुळे अपघात वाढले आहेत. याप्रकरणी आयटी कर्मचाऱ्यांनी मोर्चा काढून प्रशासनाकडे ठोस पावले उचलण्याची मागणी केली होती. या पार्श्वभूमीवर 'पीएमआरडीए'चे अधिकारी आणि बांधकाम व्यावसायिकांची बैठक सोमवारी झाली. या बैठकीत विविध उपाययोजनांवर चर्चा करण्यात आली. त्यात हिंजवडीसह परिसरात होणारे अपघात टाळण्यासाठी पोलीस यंत्रणेने निर्धारित केलेल्या वेळेतच अवजड वाहने शहरात यावीत, या नियमाचे काटेकोर पालन करण्याचा निर्णय घेण्यात आला. बांधकाम व्यावसायिकांनी याबाबत खबरदारी घ्यावयाची आहे. बांधकामे सुरू असलेल्या ठिकाणी रहदारीच्या नियमांचे पालन करावे. वाहनचालक नशेत नसल्याची आणि त्याचा परवाना अद्ययावत असल्याची खात्री करून एकत्रित माहिती विकासकाने त्याच्या प्रकल्पाच्या संकेतस्थळावर अद्ययावत ठेवावी, असे निर्णयही घेण्यात आले.

आयटीनगरी असलेल्या हिंजवडी - माण भागात सकाळी आणि सायंकाळी दुचाकींसह चारचाकी वाहनांची मोठी गर्दी असते. याच वेळी बऱ्याचदा बांधकाम व्यावसायिकांची अवजड वाहने या मार्गावर धावत असल्याने इतर वाहनचालकांना अडचणी येतात. त्यामुळे यातून मार्ग काढण्यासाठी पीएमआरडीएचे महानगर आयुक्त डॉ. योगेश म्हसे यांनी निर्देश दिले होते. सध्या हिंजवडी, माण, म्हाळुंगे परिसरात अनेक बांधकाम व्यावसायिकांच्या गृहप्रकल्पांची कामे सुरू आहेत. या ठिकाणी बांधकाम करताना अवजड वाहनांद्वारे सिमेंट, लोखंड आदी साहित्याची वाहतूक करावी लागते. मात्र, गेल्या काही दिवसांपासून अवजड वाहनांमुळे सर्वसामान्य नागरिकांना धोका निर्माण झाला असून, अपघातांचे प्रमाण वाढले आहे. हे अपघात टाळण्यासाठी पीएमआरडीएने आता पावले उचलली आहेत.

प्रातिनिधीक छायाचित्र

काम थांबविण्याचा इशारा

हिंजवडी भागात काँक्रीट मिक्सरखाली सापडून एका दुचाकीस्वार महिलेचा मृत्यू झाल्याची घटना नुकतीच घडली होती. याप्रकरणी पोलिसांनी संबंधित वाहनचालकावर गुन्हा नोंदवला असून, याआधारे पीएमआरडीएने संबंधित वाहन कार्यरत असलेल्या बांधकामाची परवानगी रोखण्याचा निर्णय घेतला आहे, अशी माहिती पीएमआरडीएचे जनसंपर्क अधिकारी डॉ. ज्ञानेश्वर भाले यांनी दिली.

'पदवीनंतरही सतत अध्ययन आवश्यक'

डॉ. विश्वनाथ कराड यांना 'गव्हर्नर्स अवॉर्ड ऑफ एक्सलन्स' प्रदान

लोकसत्ता प्रतिनिधी

पुणे : विद्यार्थ्यांनी व्यवहार चातुर्याचे शिक्षण आणि 'मिशन अँण्ड द ॲक्शन' या दोन तत्त्वांच्या आधारे आयुष्याची पुढील वाटचाल करावी. शिक्षणातूनच सर्वांत मोठ्या प्रमाणात रोजगार उपलब्ध होतो. त्यामुळे विद्यार्थ्यांनी पदवीनंतरही सतत अध्ययन करावे, असे मत पश्चिम बंगालचे राज्यपाल डॉ. सी. व्ही. आनंद बोस यांनी व्यक्त केले.

एमआयटी विश्वशांती विद्यापीठाचा ७ वा पदवीप्रदान समारंभ नुकताच लोणी काळभोर येथील विश्व सभामंडप येथे झाला. त्यावेळी बोस बोलत होते. शिक्षण आणि शांतीसाठी केलेल्या कार्याबद्दल डॉ. विश्वनाथ कराड यांना पश्चिम बंगाल राज्यपालांच्या वतीने 'गव्हर्नर्स अवॉर्ड ऑफ एक्सलन्स'ने गौरविण्यात आले. पदवी प्रदान कार्यक्रमात ६ हजार ८०० विद्यार्थ्यांना पदवी प्रमाणपत्र, ११४ विद्यार्थ्यांना सुवर्णपदक, ९६ विद्यार्थ्यांना रौप्य, ९६ विद्यार्थ्यांना कांस्य पदक, ३७ विद्यार्थ्यांना पी.एचडी प्रदान करण्यात आली. श्वेता राजश्री अय्यर हिला 'संस्थापक अध्यक्ष पदक', वेदांगी गुणेश पाटकर हिला 'कार्याध्यक्ष पदकाने गौरवण्यात आले.

आंतरराष्ट्रीय व्यवसाय सल्लागार लेखक डॉ. राम चरण, विद्यापीठाचे कार्याध्यक्ष डॉ. राहुल कराड, कुलगुरू डॉ. आर. एम. चिटणीस, कुलसचिव प्रा. गणेश पोकळे, डॉ. सुनीता कराड, डॉ. प्रसाद खांडेकर, डॉ. संतोष सोनावणे, परीक्षा नियंत्रक डॉ. राहुल जोशी उपस्थित होते.

नोकराकडून दागिने लंपास

पुणे : घरकामास ठेवलेल्या नोकराने ज्येष्ठ महिलेचे दोन लाख १५ हजार रुपयांचे सोन्याचे दागिने लांबविल्याची घटना कोथरूड भागात घडली. याप्रकरणी नोकराविरुद्ध गुन्हा दाखल करण्यात आला आहे.

तक्रारदार महिला कोथरूड भागात राहायला आहेत. त्यांच्या घरात काम करणाऱ्या नोकराने ज्येष्ठ महिलेचे लक्ष नसल्याची संधी साधून दोन लाख १५ हजारांचे मंगळसूत्र लांबविले आणि पसार झाला. पोलीस उपनिरीक्षक मोहन चव्हाण तपास करत आहेत.

कोंढवा भागात एका ज्येष्ठ नागरिकाकडे बतावणी करून चोरट्यांनी त्यांच्याकडील ३७ हजार रुपयांची सोन्याची अंगठी लांबविल्याची घटना घडली. याबाबत एका ज्येष्ठ नागरिकाने कोंढवा पोलीस ठाण्यात फिर्याद दिली आहे. सोमवार पेठेत राहणारे तक्रारदार कात्रज-कोंढवा रस्त्यावरील एका मंदिरात २९ सप्टेंबर रोजी दर्शनासाठी निघाले होते. मंदिरात अभिषेक करतो, अशी बतावणी चोरट्यांनी केली. त्यांना बोलण्यात गुंतवून चोरट्याने संधी साधून चोरटा अंगठी घेऊन पसार झाला.

भारती विद्यापीठ, युनिव्हर्सिटी ऑफ रेजायना यांच्यात सामंजस्य करार

लोकसत्ता प्रतिनिधी

पुणे : भारती विद्यापीठ अभिमत विश्वविद्यालय आणि कॅनडातील युनिव्हर्सिटी ऑफ रेजायना यांच्यात सामंजस्य करार करण्यात आला आहे. या करारांतर्गत संयुक्त शैक्षणिक आणि संशोधन उपक्रम, संशोधनासाठी प्राध्यापकांची देवाणघेवाण, शिक्षण आणि संशोधनासाठी विद्यार्थ्यांची देवाणघेवाण करण्यात येणार आहे.

सामंजस्य करारावेळी युनिव्हर्सिटी ऑफ रेजायनाचे अध्यक्ष आणि कुलगुरू डॉ. जेफ केशेन, आंतरराष्ट्रीय संबंधित आणि सहकार्य व्यवस्थापक मायकेल लियू, भारती विद्यापीठ अभिमत विश्वविद्यालयाचे कुलगुरू डॉ. विवेक सावजी, कॉलेज ऑफ इंजिनीअरिंगचे प्राचार्य डॉ. राजेश प्रसाद, डॉ. सुनीता जाधव, उपप्राचार्य डॉ. सचिन चव्हाण उपस्थित होते. या निमित्ताने भारती विद्यापीठ इंग्रजी माध्यम उच्च माध्यमिक शाळेतील विद्यार्थ्यांसाठी झालेल्या विशेष सत्रात युनिव्हर्सिटी ऑफ रेजायना येथील उच्च शिक्षण, आंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संधींबाबतची माहिती देण्यात आली.

सायबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, शाश्वत ऊर्जा, पर्यावरण विज्ञान अशा आगामी संशोधन क्षेत्रांमध्ये दोन्ही विद्यापीठांनी सक्रिय सहभाग घ्यावा, असे डॉ. जेफ यांनी सांगितले. आंतरशाखीय संशोधन आणि शैक्षणिक समृद्धीसाठी सक्रिय सहभाग घेण्याची इच्छा डॉ. सावजी यांनी व्यक्त केली.

तरुणाला मारहाण करणारे गजाआड

पुणे : डेक्कन चौपाटी परिसरात किरकोळ कारणावरून तरुणाला मारहाण करणाऱ्या तिघांना पोलिसांनी अटक केली. गणेश सतीश रणखांब (३५), गणेश राजेंद्र कोंढाळकर (२७), चिन्मय प्रवीण पुरुळेकर (२७) तिघे रा. शास्त्रीनगर, कोथरूड अशी त्यांची नावे आहेत. डेक्कन पोलीस ठाण्यात फिर्याद दिली आहे. तक्रारदार तरुण महात्मा फुले पेठेत राहायला आहे. रविवारी मध्यरात्री दोनच्या सुमारास तक्रारदार तरुण मित्रांसोबत चौपाटी परिसरातील खाद्यपदार्थाच्या स्टॉलवर आला होता. तक्रारदार तरुणाकडून अनवधानाने धक्का लागल्याने आरोपी रणखांब, कोंढाळखर, पुरुळेकर चिडले. तरुणाला शिवीगाळ करून लाथाबुक्क्यांनी मारहाण केली. उपनिरीक्षक पाटील तपास करत आहेत.

फुकट्या प्रवाशांवर कारवाईसाठी भरारी पथके

लोकसत्ता प्रतिनिधी

पुणे : मध्य रेल्वेच्या पुणे विभागाकडून मागील सहा महिन्यांत दोन लाख २७ हजार ८९५ फुकट्या प्रवाशांवर कारवाई करून १२.७६ कोटी रुपयांचा दंड वसूल करण्यात आला आहे. यामध्ये सर्वाधिक २.३५ कोटींचा दंड सप्टेंबर महिन्यात वसूल झाला आहे. दिवाळीत प्रवाशांची गर्दी वाढत असल्याने फुकट्या प्रवाशांवर कारवाईसाठी तपासणी मोहीम राबविण्यात येणार असून, भरारी पथके स्थापन करण्यात आली आहेत.

दिवाळीनिमित्त अतिरिक्त गाड्या सोडण्यात आल्याने प्रवाशांची गर्दी वाढणार आहे. या काळात फुकट्या प्रवाशांवर कारवाई करण्यात येणार आहे. पुणे विभागाने पुणे विभागीय रेल्वे व्यवस्थापक राजेशकुमार वर्मा आणि अतिरिक्त विभागीय व्यवस्थापक पद्मसिंह जाधव यांच्या मार्गदर्शनाखाली तपासणी मोहीम राबविण्यात येणार आहे. कारवाईसाठी भरारी पथके स्थापन करण्यात आल्याचे रेल्वे प्रशासनाकडून सांगण्यात आले.

लो

मध्य रेल्वेच्या पुणे विभागाने मागील सहा महिन्यांत १२.७६ कोटी रुपयांचा दंड वसूल केला आहे. यासाठी भरारी पथके स्थापन करण्यात आली आहेत.

सप्टेंबर महिन्यातील कारवाई

प्रकार	प्रवासी	दंड
तिकीट नसलेले प्रवासी	२९,७३९	१,८६,७९,७२५
आरक्षित डब्यातून प्रवास	८,४२५	४८,०८,८०५
अनधिकृत सामानासह प्रवास	४७२	७४,७८५
एकूण कारवाई	३८,६३६	२,३५,६३,३१५

दिवाळीमुळे जादा गाड्या सोडण्यात आल्या आहेत. प्रवाशांच्या सेवेसाठी फलाट तिकीट ही सेवा बंद केली आहे. विनातिकीट प्रवास करणाऱ्यांवर लक्ष ठेवण्यासाठी भरारी पथके स्थापन करण्यात आली आहेत. त्यांच्याकडून कारवाई होणार आहे.
-हेमंतकुमार बेहरा, जनसंपर्क अधिकारी, मध्य रेल्वे, पुणे विभाग.

पटाखों को मंजूरी

होगी आतिशबाजी

इस दिवाली शोरगुल और चकाचौंध से भरी रहने की संभावना है, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट पांच दिनों के लिए हरित पटाखों के इस्तेमाल को मंजूरी दे सकता है। इस फैसले का त्योहार प्रेमियों और पटाखा उद्योग द्वारा स्वागत किया जाएगा, जिसने देश के सबसे बड़े पटाखों के उपभोक्ताओं में से एक, दिल्ली में इस प्रतिबंध का खामियाजा भुगता है।

लेकिन यह दिल्ली के पर्यावरण के लिए अच्छी खबर नहीं हो सकती है, क्योंकि पटाखों के फोड़ने से दिल्ली का अदकआसमान छू सकता है। दरअसल, पर्यावरण एक बार फिर गौण हो जाता है। मुख्य न्यायाधीश भूषण आर. गवई की अध्यक्षता वाली पीठ द्वारा लिया जाने वाला यह फैसला, न्यायमूर्ति अभय एस. ओका की अध्यक्षता वाली एक अन्य पीठ द्वारा कुछ महीने पहले ही लगाए गए प्रतिबंध को पलट देगा। अदालत अब सीमित छूट - परीक्षण के आधार पर उत्सव, को विनियमित समय-सीमा और केवल नीरी-अनुमोदित हरित पटाखों के उपयोग की अनुमति दे सकती है। सिद्धांत रूप में, यह सांस्कृतिक भावना और पर्यावरणीय आवश्यकता के बीच एक संतुलित समझौता प्रतीत होता है। लेकिन अनुभव के आधार पर देखें तो यह दिल्लीवासियों के लिए एक बुरा सपना हो सकता है। दिल्ली का अनुभव बताता है कि नियमन और उत्साह के बीच की रेखा का खुलेआम उल्लंघन होता है।

जिन वर्षों में पटाखों पर प्रतिबंध लगा था, उन वर्षों में भी, दिल्ली का रात का आसमान रोशनी और धुएँ से चमकता रहता था। प्रवर्तन न्यूनतम था; दंड दुर्लभ। अब, जब प्रतिबंध हटने और कानूनी मंजूरी मिलने की संभावना है, तो रोशनी का यह त्योहार धुंध के त्योहार में बदल सकता है। ग्रीन पटाखों का वादा बहुत कम

आश्वासन देता है। विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि ये कथित रूप से पर्यावरण-अनुकूल संस्करण भी उत्सर्जन में केवल लगभग 30 प्रतिशत की कमी करते हैं। ऐसे शहर में जहाँ सर्दियों के अधिकांश समय वायु गुणवत्ता पहले से ही ₹गंभीर₹ के कगार पर रहती है, यह कमी शायद ही सार्थक हो। पटाखे फोड़ने की क्षणिक खुशी के बाद, अनिवार्य रूप से, घुटन भरी हवा, नम आँखों और बच्चों और बुजुर्गों की साँस फूलने वाली सुबहें होंगी।

हालाँकि सर्वोच्च न्यायालय का यह फैसला पटाखा उद्योग के कामगारों को राहत दे सकता है, जिनमें से कई हाशिए के समुदायों से हैं और जिनकी आजीविका इस व्यापार पर निर्भर करती है, यह स्वागत योग्य है, लेकिन यह लाखों लोगों के स्वास्थ्य की कीमत पर आता है। दीर्घकालिक समाधान यही होगा कि उन्हें कोई वैकल्पिक पेशा मुहैया कराया जाए और उनका पुनर्वास किया जाए। पटाखा उद्योग को भी विकसित होना होगा; उसे कम प्रदूषणकारी विकल्पों पर काम करना होगा जो पर्यावरण और लोगों के स्वास्थ्य को खतरे में न डालें। आजीविका के अधिकार को स्वच्छ हवा के अधिकार के साथ सह-अस्तित्व में रहना चाहिए, न कि उस पर हावी होना चाहिए।

पर्यावरणविदों को डर है कि यह फैसला जन जागरूकता और नीति प्रवर्तन में वर्षों की कड़ी मेहनत से की गई प्रगति को पीछे धकेल सकता है। दिल्ली की हवा, जो पहले से ही पराली जलाने, वाहनों से निकलने वाले उत्सर्जन और औद्योगिक प्रदूषण से बोझिल है, को राहत की जरूरत है, न कि और बिगड़ने के लिए और कारणों की। अगर ₹परीक्षण के आधार पर₹ जश्न व्यापक उल्लंघनों में बदल जाते हैं, जैसा कि अनुभव बताता है, तो शहर एक बार फिर हांफने को मजबूर हो सकता है।

पूर्णता का मिथक

महाभारत, जो भारतीय जीवन का विशाल दर्पण है, हमें याद दिलाता है कि बुद्धिमत्ता निरपेक्षता की असंभव खोज में नहीं, बल्कि अनुमान लगाने की कला में निपुणता प्राप्त करने में निहित है, यह जानने में कि क्या, कब और क्यों काम करता है।

विनयशील गौतम
लेखक, प्रबंध परामर्शदाता हैं।

पूर्णता की खोज के बारे में बहुत कुछ कहा गया है, और सभी को पूर्णता प्राप्त होने तक प्रयास करते रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। वास्तविक जीवन की कहानी इसके अलावा भी कई संदेश देती है। आमतौर पर, शुद्ध सोने का मूल्य 24 कैरेट माना जाता है। यह भी उतना ही सत्य है कि शुद्ध सोना, जब वह 24 कैरेट का हो, तो टिक नहीं पाता, और उसे उपयोगी उत्पाद बनाने के लिए, उसमें मिश्रधातु का मिश्रण होना आवश्यक है, और उत्पाद में 22 कैरेट से अधिक सोना नहीं हो सकता।

इसका अर्थ यह है कि जब कोई शुद्ध सोने के आभूषण की बात करता है, तो यह मान लिया जाता है कि उत्पाद में सोने की मात्रा 100 प्रतिशत से कम होगी। वास्तव में, जैसा कि ऊपर बताया गया है, आभूषण बनाने के लिए शुद्ध सोने की मात्रा समान रूप से कम मानी जाती है। निरपेक्ष शब्द लागू नहीं होते।

इसी प्रकार, वास्तविक जीवन में भी, पूर्णता निरपेक्ष रूप से स्वीकार्य नहीं है क्योंकि व्यावहारिक रूप से, यह काम नहीं करती। सर्वोत्तम प्रयासों के लिए भी कुछ वास्तविकता को ध्यान में रखना आवश्यक है, क्योंकि वास्तविकता हर गतिविधि और वास्तव में हर परिस्थिति में भिन्न हो सकती है। उदाहरण के लिए, जब लोग सच बोलने की बात करते हैं, तो शत-प्रतिशत सच बोलने की क्षमता खतरनाक होती है, और सुनने वाले अक्सर सच को उसकी संपूर्णता में स्वीकार नहीं करते। सवाल यह है कि अगर शत-प्रतिशत सच स्वीकार्य नहीं है, तो सच का कितना हिस्सा स्वीकार्य है? इन्हें अक्सर तयशुदा सवालों के तौर पर खारिज कर दिया जाता है, लेकिन मानवीय कर्म के कई चरणों में ये सबके सामने सवाल खड़े करते हैं। ये नुस्खे असुविधाजनक होते हैं और पूर्णता की माँग करते हैं। परिचालन स्थिति ऐसे समझौतों की माँग करती है जिनके बारे में कोई भी निश्चित नहीं हो सकता।

यहां तक कि धार्मिक उपदेशक और नैतिक संरक्षक होने का दावा करने वाले भी कोई निश्चित दिशानिर्देश देने के लिए नहीं जाने जाते। नतीजा एक ऐसी स्थिति बनती है जहां प्रथाएं, जो कभी-कभी अनिवार्य रूप से स्थानीय प्रकृति की होती हैं, प्रचलित हो जाती हैं। हालांकि, समस्या यह है कि जब अनुमान लागू होते हैं, तो अनुमान का कोई मानकीकरण नहीं होता। इससे असहिष्णुता और कभी-कभी प्रतिवर्ती विचलन पैदा हो सकते हैं और होते भी हैं।

ये कभी-कभी मामूली बदलावों से भी परे हो सकते हैं और होते भी हैं। यह प्रबंधन का एक अनिवार्य सार है, और यहीं पर प्रथाएँ केवल 'सही रुख' बनाए रखने से ज्यादा प्रभावी हो जाती हैं। यह जीवन को अनिवार्य रूप से एक कला बनाता है। वास्तव में, सफलता से बढ़कर कुछ भी नहीं।

वर्तमान समय में, महाभारत की कथा एक जीवंत उदाहरण है, यहाँ तक कि जहाँ अपवाद भी हैं। इसका संदर्भ एक उच्चतर उद्देश्य और नैतिक न्याय के बार-बार उल्लेखों की ओर है। उद्देश्य की खोज, धार्मिकता की एक साधारण खोज में खो नहीं जाती। यह नैतिकता को खिड़की से बाहर नहीं फेंकता, बल्कि उसे एक उच्चतर दृष्टिकोण से देखता है। कथाकार

यहां तक कि धार्मिक उपदेशक और नैतिक संरक्षक होने का दावा करने वाले भी कोई निश्चित दिशानिर्देश देने के लिए नहीं जाने जाते। नतीजा एक ऐसी स्थिति बनती है जहां प्रथाएं, जो कभी-कभी अनिवार्य रूप से स्थानीय प्रकृति की होती हैं, प्रचलित हो जाती हैं। हालांकि, समस्या यह है कि जब अनुमान लागू होते हैं, तो अनुमान का कोई मानकीकरण नहीं होता।

अक्सर निहित अस्वीकृति व्यक्त कर सकता है और करता भी है, लेकिन फिर इसे पाठक के निर्णय पर छोड़ देता है। जीवन के ऐसे ही तथ्य होने के कारण, किसी समूह की इस बात पर सहमति कि वह क्या सहनीय और स्वीकार्य मानता है, सही और गलत की पहचान बन जाती है। यही समूह गतिशीलता की शक्ति है।

महाभारत की कथा इस बात का एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि कैसे ₹अनुमान₹ अक्सर जीत हासिल कर लेता है और कई दावेदारों के बीच तकनीकी सटीकता खो जाती है। वास्तव में, हर जगह की तरह, विजेता सब कुछ जीत लेता है, और पराजित केवल एक और दिन देखने के लिए जीवित रहने की कामना कर सकता है।

इतना कहने के बाद, यह लक्ष्य के विचार को नहीं बदलता। धनुर्विद्या में, कोई भी तीरंदाज के निशाने पर निशाना लगाने के प्रयासों का अंदाजा नहीं लगा सकता, और कोई यह नहीं कहेगा कि अगर वह 20% भी लगा दे, तो भी आप स्वीकार्य सीमा के भीतर हैं। निशाने पर निशाना निशाने पर ही रहता है। पूर्णता का अपना स्थान है। इसकी विषयवस्तु अक्सर संदर्भ से निर्धारित होती है।

तो फिर, वह संदेश क्या है जिस पर पूरी बहस, चर्चा और विश्लेषण आधारित है? निर्णय की अवधारणा वास्तव में क्या है? क्या सही या स्वीकार्य है, यह परिस्थिति-दर-स्थिति, संदर्भ-दर-संदर्भ, और कभी-कभी व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमता पर भी निर्भर करता है। यह हमें एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर ले जाता है: अर्थात, यह बोध कि मानवीय निर्णय अन्य सभी विश्लेषणों से श्रेष्ठ है, चाहे वह रोजमर्रा की ज़िंदगी का हो या धनुर्विद्या का। व्यावहारिक जीवन में केवल अनुभव ही दिशानिर्देश के रूप में काम करते हैं, और 'क्या काम करता है' से बड़ी कोई कसौटी नहीं है।

यहीं पर महाभारत का पाठ जीवन की एक ऐसी कहानी है जो स्वयं बताती है। इस आशय की एक बंगाली कहावत है: ₹जयने भारतीय सेनाये भारत₹ (जो महाभारत में नहीं है वह भारत में नहीं है)। महाकाव्य केवल भारत तक सीमित नहीं हैं, बल्कि भारत के महाकाव्य दुनिया के विभिन्न हिस्सों के कई महाकाव्यों से परे और सर्वोत्कृष्ट हैं। वास्तव में भारतीय होना वैश्विक ज्ञान का एक संग्रह है। मूल बात यह है कि पारंपरिक शिक्षा या अन्य माध्यमों से भी इसे प्राप्त किया जा सकता है।

अब समय आ गया है कि भारत की पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों की ओर ध्यान आकर्षित किया जाए और उन्हें आधुनिक भारतीयों के उपयोग के लिए रूपांतरित किया जाए। इससे कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति दृष्टिकोण निश्चित रूप से समृद्ध और उन्नत होगा। यह एक अलग कहानी हो सकती है।

केटलबेल खेल में महिलाओं का उदय

केटलबेल स्पोर्ट, या गिरेवॉय स्पोर्ट, जिसका जन्म रूस के मध्य में हुआ। रूसी भाषा में गिर्या शब्द का मतलब ही केटलबेल होता है। किसानों के लिए अनाज तौलने के एक साधारण उपकरण के रूप में शुरू हुआ यह खेल दुनिया के सबसे कठिन शक्ति-धीरज खेलों में से एक बन गया।

ईशानी सिरोही
लेखिका, केटलबेल विश्व चैम्पियन हैं।

केटलबेल का नाम लेते ही ज्यादातर लोगों के दिमाग में जिम का एक धूल भरा कोना, वो गोल लोहे की घंटियाँ, जो सेट के बीच में तेजी से घुमाने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं, कल्पना में आ जाती हैं। लेकिन उस साधारण आकार के अंदर एक पूरा खेल छिपा है: केटलबेल स्पोर्ट, या गिरेवॉय स्पोर्ट, जिसका जन्म रूस के मध्य में हुआ। रूसी भाषा में गिर्या शब्द का मतलब ही केटलबेल होता है। किसानों के लिए अनाज तौलने के एक साधारण उपकरण के रूप में शुरू हुआ यह खेल दुनिया के सबसे कठिन शक्ति-धीरज खेलों में से एक बन गया।

इसके इवेंट भ्रामक रूप से सरल लगते हैं, जर्क, लॉन्ग साइकिल और स्नैच - लेकिन ये एक एथलीट की सटीकता, सांस पर नियंत्रण और मानसिक लचीलेपन की पूरी परीक्षा लेते हैं। पेशेवर वर्ग महिलाओं के लिए 24 किलो की दो और पुरुषों के लिए 32 किलो की दो घंटियाँ उठाते हैं। शौकिया खिलाड़ी महिलाओं के लिए 16 किलो और पुरुषों के लिए 24 किलो वजन उठाते हैं।

केटलबेल स्पोर्ट को सोवियत काल में शक्ति और सहनशक्ति की परीक्षा के रूप में औपचारिक रूप दिया गया था। दशकों में, इसने अपनी तकनीकें, समय और निर्णय प्रणाली विकसित की, जो अंततः यूरोप, अमेरिका, एशिया और अब भारत में फैल गई है।

आज, यह खेल इंटरनेशनल यूनियन ऑफ केटलबेल लिफ्टिंग जैसे संघों और केटलबेल स्पोर्ट इंडिया एसोसिएशन जैसी राष्ट्रीय संस्थाओं के अंतर्गत आता है। इसके प्रारूप पारंपरिक 10 मिनट के सेट से आगे विकसित हो गए हैं।

अब हाफ-मैराथन, फुल मैराथन और यहाँ तक कि कई बार हाथ बदलने वाले आयोजन भी हैं, जिनमें से प्रत्येक न केवल ताकत, बल्कि सहनशक्ति और एकाग्रता का भी परीक्षण करता है। फिर भी, इस विकास के बावजूद, केटलबेल खेल सबसे कम मान्यता प्राप्त खेलों में से एक बना हुआ है। इसमें धन, सुविधाओं और प्रचार का अभाव है। क्रिकेट के प्रति जुनूनी देश में, लोगों को इस खेल के बारे में बताना भी एक कठिन काम है, इसे समर्थन देना तो दूर की बात है।

अगर यह खेल अपने आप में एक विशिष्ट खेल है, तो केटलबेल खेल में महिलाएँ लगभग गुमनामी में ही रहती हैं। कोई आकर्षक प्रायोजन या टेलीविजन चैंपियनशिप नहीं हैं। महिलाएँ अस्थायी ढाँचों में, कभी-कभी असमान फर्श पर, ट्यूबलाइट के नीचे, बिना उचित घंटियों के, प्रशिक्षण लेती हैं। वे काम, परिवार और प्रशिक्षण के बीच संतुलन बनाती हैं, अक्सर बिना किसी कोच के और उससे भी कम पहचान के। फिर भी, वे आगे आती हैं। केटलबेल खेल की महिलाएं प्रसिद्धि के पीछे नहीं हैं, वे महारत हासिल करने के पीछे हैं। हर दोहराव अदृश्यता के खिलाफ एक चुनौती है। हर लिफ्ट कहती है, ₹हम भी यहाँ हैं।₹ किसी से केटलबेल खेल के बारे में पूछें, और आपको शायद एक हैरान चेहरा मिलेगा। ₹आपका मतलब क्रॉसफिट है?₹ वे पूछेंगे। बिल्कुल नहीं।

केटलबेल खेल यादृच्छिक दोहराव या छोटे विस्फोटों के बारे में नहीं है। यह दक्षता का एक सिम्फनी है, हर पकड़, लॉकआउट और सांस को ऊर्जा के संरक्षण और आउटपुट को अधिकतम करने के लिए मापा जाता है। जिम केटलबेल को केवल उपकरण के रूप में प्रदर्शित करते हैं, इस बात से अनजान कि दुनिया के अन्य हिस्सों में, एथलीट उन्हीं उपकरणों के साथ रिकॉर्ड बना रहे हैं। यह एक स्ट्राडिवेरियस वायलिन का मालिक होने और इसे पेपरवेट के रूप में उपयोग करने जैसा है। भारत में, केटलबेल खेल अभी भी अपनी जगह बना रहा है इस साल, चार भारतीय एथलीटों को रूस के सेंट पीटर्सबर्ग में होने वाले विश्व कप में प्रतिस्पर्धा करने के लिए आंशिक प्रायोजन प्राप्त हुए।

हो सकता है कि यह राष्ट्रीय समाचार न बने, लेकिन इस खेल से जुड़े हम जैसे लोगों के लिए, यह एक बड़ी उपलब्धि है। यह इस बात का प्रमाण है कि मुख्यधारा के खेलों के आकर्षण के बिना भी, प्रतिस्पर्धा की भावना और तिरंगे का प्रतिनिधित्व करने की ललक प्रबल है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर कदम रखने वाला हर भारतीय भारोत्तोलक सिर्फ. केटलबेल ही नहीं उठाता। वे हर उस एथलीट का भार उठाते हैं जो बिना देखे, बिना सुने, बिना किसी वित्तीय सहायता के प्रशिक्षण ले रहा है, और फिर भी वे भार उठाते हैं।

क्या केटलबेल खेल कभी ओलंपिक तक पहुँच पाएगा? शायद जल्द ही नहीं। लेकिन हर महान खेल आंदोलन इसी तरह शुरू होता है - कुछ मुट्ठी भर विश्वासियों के साथ जो हार नहीं मानते। केटलबेल खेल अनोखा है क्योंकि यह शक्ति और शांति का मिश्रण है। मंच पर दस मिनट आक्रामकता का प्रदर्शन नहीं है; यह गति के माध्यम से ध्यान है।

आपको दर्द में शांत और दबाव में संयमित रहना होता है। और यहीं पर महिलाएँ, खासकर, चमकती हैं। उनकी शालीनता, अनुशासन और सहनशीलता, ताकत के मायने को नए सिरे से परिभाषित करते हैं। वे सिर्फ. रिकॉर्ड नहीं तोड़ रहे, बल्कि उम्मीदों को नया आयाम दे रहे हैं। सपना सिर्फ. पदक या रैंकिंग का नहीं है। यह प्रदर्शन का है।

अगर केटलबेल प्रशिक्षण स्कूलों में भी शामिल हो जाए, तो यह फिटनेस के प्रति हमारे नजरिए को पूरी तरह से बदल सकता है। यह आपकी पृष्ठभूमि, शरीर के प्रकार या लिंग की परवाह नहीं करता। घंटी अनुशासन को पुरस्कृत करती है। यह अहंकार को कम करती है। और यही कारण है कि इसे मुख्यधारा में जगह मिलनी चाहिए।

केटलबेल खेल शायद कभी ग्लैमरस न हो। ऐसा होना जरूरी भी नहीं है। यह लगातार अभ्यास करने वालों के लिए एक खेल है, उन लोगों के लिए जो तालियों के लिए नहीं, बल्कि एक उद्देश्य के लिए इसे उठाते हैं। एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसने विश्व मंच पर खड़े होकर, अपनी हथेलियों में लोहे के चुभन और हर दोहराव के बीच के सन्नाटे को महसूस किया है, मैं यह कह सकता हूँ: यह खेल जितना लेता है उससे कहीं ज्यादा देता है। यह आपको शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से गढ़ता है।

तो अगली बार जब आप अपने जिम के कोने में केटलबेल देखें, तो उसके पास से गुजरें नहीं। उसे उठाएँ। उसके वजन, इतिहास और चुनौती को महसूस करें। क्योंकि उस पल में, आप किसी बड़ी चीज का हिस्सा होते हैं, जो अभी भी अपनी कहानी लिख रही है, एक-एक दोहराव के साथ। केटलबेल तालियों की मांग नहीं करता। यह सम्मान की माँग करता है। और हर महिला जो इसे उठाती है, उसे यह सम्मान मिलता है!

आप की बात

मुफ्तखोरी को बढ़ावा

बिहार चुनाव से पहले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव द्वारा मुफ्त सुविधाओं की घोषणाओं की होड़ ने एक गंभीर आर्थिक और सामाजिक बहस को जन्म दे दिया है। मुफ्त बिजली, रोजगार भत्ता, स्कूटी, लैपटॉप और तरह-तरह की आर्थिक सहायता जैसी घोषणाएं जनता को तो तात्कालिक रूप से आकर्षित करती हैं, लेकिन देश के अर्थशास्त्रियों को यह प्रवृत्ति गहरी चिंता में डाल रही है। क्योंकि यदि यह सिलसिला ऐसे ही चलता रहा, तो वह दिन दूर नहीं जब विकास योजनाओं पर होने वाला खर्च घटकर केवल मुफ्तखोरी योजनाओं में सिमट जाएगा। आज अंतरराष्ट्रीय आर्थिक परिस्थितियाँ बेहद चुनौतीपूर्ण हैं। महंगाई, बेरोजगारी और उत्पादन लागत में वृद्धि के चलते सरकारों के लिए जरूरी वस्तुएं भी उचित मूल्य पर उपलब्ध कराना कठिन होता जा रहा है। ऐसे समय में राजस्व का बड़ा हिस्सा जब केवल ह्लवोट बैंकह्व बनाने के लिए खर्च किया जाता है, तो न केवल अर्थव्यवस्था पर बोझ बढ़ता है बल्कि आत्मनिर्भरता की भावना भी कमजोर होती है। विडंबना यह है कि चुनाव आयोग और सुप्रीम कोर्ट जैसे संस्थान अब तक इस प्रवृत्ति पर ठोस नियंत्रण नहीं लगा पाए हैं, जबकि यह एक प्रकार की ह्लचुनावी रिश्वतह्व ही है, जो लोकतंत्र की जड़ों को खोखला करती है।

– **विभुक्ति बुपक्या,** विधि छात्रा, दिल्ली विश्वविद्यालय

नोबल नहीं तो लाल कारपेट ही सही

अमरीकी राष्ट्रपति डोनॉल्ड ट्रम्प ने बहुत हाथ-पैर मारे और खूब मेहनत की। उसके बावजूद भी वे नोबल पाने में एक कदम पीछे ही रह गए और उनकी इच्छा पूरी नहीं होने से वे तब से मायूस भी बने रहे। किन्तु हमास-इजराइल युद्ध विराम करवाकर कम से वे इजराइल में लाल कार्पेट पर अपना शानदार स्वागत नेतन्याहू दंपत्ति से करवाकर काफी खुश तो हो ही गए. चेहरा खिल गया. खुशी का इजहार दिखाई देने लगा. मन प्रफुल्लित हो गया. यह सब देखकर लगा कि नेतन्याहू ने अपने यहाँ यादगार स्वागत करके डोनॉल्ड ट्रम्प को नोबल के गम से बाहर निकाल दिया हो। फिलिस्तीनी और इजराइली बंधकों की रिहाई ने भी हमास और इजराइल के बंधकों के परिवारों में भी खुशी प्रवाहित कर दी। अब डोनॉल्ड ट्रम्प को और अधिक खुशमिजाजी प्रसन्नता व प्रसिद्वी चाहिए तो उन्हें लम्बे समय से चल रहे रूस-यूक्रेन युद्व को भी खत्म करवाकर वहां के नागरिकों को एक नई दुनिया बसाने की ओर मोड़ देना चाहिए ताकि वहां भी शान्ति और सुकून दोनों देशों के रहनुमाओं को प्राप्त हो सके। अगर वे ऐसा करने में सफल हो गए तो दुनिया को तब अवश्य लगने लगेगा कि उन्होंने राष्ट्रपति बनने पर विश्वशांति की शपथ ली थी वह पूरी हो सकेगी। अगर वो ट्रेड नीति को भी बदलकर ट्रेड वार को भी खत्म कर दुनिया में खुले व्यापार हेतु भी दुनिया के देशों के हित में निर्णय ले लें तो अवश्य दुनिया के देशों के लोगों को मानसिक शान्ति भी मिल सकती है।

– **शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

पश्चिम बंगाल में दम तोड़ती महिला सुरक्षा

कोलकाता के आर जी कर मेडिकल कॉलेज मे 26 वर्षीय छात्रा से गेंगरेप की स्याही सुखी ही नहीं, और 14 महीने बाद पश्चिम बंगाल मे एक और एम बी बी एस छात्रा दुष्कर्म की शिकार हो गई ! शर्मनाक घटना के वासना के भूखे भेड़ियों को बिल्कुल भी कानून व्यवस्था का डर नहीं! ताजा घटना के अनुसार कोलकाता से 170 कि. मी. दूर दुगार्पुर के एक निजी मेडिकल कॉलेज मेघटना हुई ! समझ से परे लगता है कि महिलाओ कि सुरक्षा वंहा खतरे मे है जिस राज्य कि मुख्य मंत्री स्वयं महिला हैं ! मानवीय सवेदना को झकोजोर कर देने वाली घटना मे सुरक्षा व्यवस्था दम तोड़ती नजर आ रही हैं! दरिंदो के हौसले देखिये कि छात्रा के बाल पकड़ कर केंपस गेट के सामने जंगल मे घसीटकर ले गए और शर्मनाक घटना को अंजाम दे दिया ! ममता बनर्जी के नियत्रण से दूर कानून व्यवस्था मुक दर्शक बनकर निहार रही !और ममता कि ममता महिलाओ के प्रति लुप्त प्राय नजर आ रही हैं !महिला अपराध के आकड़ो पर गौर करें तो पश्चिम बंगाल उन 5 राज्यों मे टॉप हैं जंहा महिला अपराध सबसे ज्यादा हैं !एन सी आर बी रिपोर्ट के अनुसार 2023 मे ऐसे 34691 मामले दर्ज हुए जो 2022 से 2% ज्यादा हैं ! एसीड अटैक कि सबसे ज्यादा 57 घटना बंगाल मे हुई जो कि देशभर मे हुए ऐसे अपराधों का 27.5% हैं! घटना क्रम पर ममता जी का बयान ने सियासी विवाद खड़ा कर दिया।

– **योगेश जोशी,** बड़वाह, मप्र

कैसे दूर होगा अज्ञान का अंधियारा

यह बड़ी विडंबना ही है कि देशभर में अनिवार्य बनी शिक्षा आज मुलभूत आवश्यकताओं के लिए ही तरह रही है। देश में एक लाख से अधिक ऐसे स्कूल है जहां केवल एक शिक्षक हैं। शिक्षा मंत्रालय के अनुसार, शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में 1,04,125 स्कूलों में एक ही शिक्षक था, जिनमें 33.76 लाख छात्र अध्ययनरत थे। यह संख्या 2022-23 की तुलना में घटकर आई है, जो सुधार का संकेत तो देती है, पर स्थिति अब भी चिंताजनक है। आंध्र प्रदेश में सर्वाधिक एक-शिक्षक स्कूल हैं, जबकि उत्तर प्रदेश, झारखंड, महाराष्ट्र और कर्नाटक भी पीछे नहीं हैं। वहीं पुडुचेरी, लद्दाख, दादरा नगर हवेली, दमन-दीव और चंडीगढ़ में ऐसे स्कूल नहीं हैं। छात्रों की संख्या के लिहाज से उत्तर प्रदेश शीर्ष पर है, जबकि औसत नामांकन के मामले में चंडीगढ़ और दिल्ली आगे हैं। यह परिदृश्य बताता है कि शिक्षा का भार अब भी सीमित संसाधनों पर टिका है। ऐसे में ज्ञान का प्रकाश फैलाने को आतुर सरकार के लिए यह आंकड़े एक उलाहना हैं कि केवल योजनाएं नहीं बल्कि जमीनी स्तर पर शिक्षकों की पर्याप्त नियुक्ति और संसाधनों की समान उपलब्धता ही शिक्षा को सशक्त बना सकती है।

– **अमृतलाल मारू, रवि,** इन्दौर

पाठकगण अपने विचार **responsemail.hindipioneer@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

पायनियर
नई दिल्ली, मंगलवार, 14 अक्टूबर 2025

एक नजर

भाकियू रक्षक ने गन्ना मूल्य बढ़ाने को सौंपा ज्ञापन

नागल। खंड विकास कार्यालय प्रांगण में भाकियू रक्षक के कार्यकर्ताओं की मासिक बैठक संपन्न हुई। बैठक में सरकार से गन्ने का मूल्य 500 रुपए प्रति कुंतल मांग रखते हुए अन्य समस्या संबंधी ज्ञापन सहायक विकास अधिकारी को सौंपा। संगठन के जिला अध्यक्ष रविंद्र सैनी ने कहा कि एक ओर तो सरकार शुगर मिलों पर किसानों के गन्ने का भुगतान कराने में असमर्थ है तो वही गन्ने का मूल्य बढ़ाने में भी असमर्थ है। उन्होंने क्षेत्र के किसानों से संबंधित समस्याओं का ज्ञापन सहायक विकास अधिकारी बलेश कुमार को सौंपते हुए समाधान करने की मांग की। बैठक में सुनील शास्त्री, सुबे सिंह मलिक, राहुल फौजी, बिल्लू त्यागी, अमरीश मलिक, गजेंद्र नौसरान, उदित नौसरान, अजीत सैनी, बिरमपाल सिंह,नौशाद अली आदि मौजूद रहे।

दो पक्षों में मारपीट हुई हिंसक, एक व्यक्ति घायल

सहारनपुर। थाना सदर क्षेत्र के प्रधानमंत्री स्वनिधि बाजार रोड पर उस समय अफरा-तफरी मच गई जब दो ठेलेदारों के बीच मामूली कहासुनी ने हिंसक रूप ले लिया। मिली जानकारी के मुताबिक ठेला लगाने वाले दीपक कुमार का विवाद पास में ही ठेला लगाने वाले सागर नामक युवक से किसी बात को लेकर हो गया। देखते-देखते विवाद इतना बढ़ा कि सागर ने गुस्से में आकर दीपक पर लाठी से ताबड़तोड़ हमला कर दिया जिससे दीपक गंभीर रूप से घायल हो गया। बताया गया कि दीपक के सिर पर गंभीर चोटें आईं और वह लहूलुहान होकर गिर पड़ा। स्थानीय लोगों ने किसी तरह बीच-बचाव कर घायल को बचाया और तुरंत पुलिस को सूचना दी । घायल को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहीं घटना के बाद आरोपी मौके से फरार हो गये। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर मामला दर्ज कर लिया है और फरार आरोपी की तलाश में जुट गई है।

13 से 19 अक्टूबर तक होगा स्पर्धा का आयोजन

सहारनपर। प्रभारी जिला युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल अधिकारी विकास कुमार ने जानकारी ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र में नशे की लत से बाहर निकालकर अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए जिलाधिकारी द्वारा एक नई पहल की गयी है ।उन्होंने बताया कि जनपद के प्रत्येक ग्राम पंचायत में 13 अक्टूबर से 19 अक्टूबर तक ग्रामीण खेल स्पर्धा का आयोजन किया जायेगा जिसके तहत कबडडी, वॉलीबाल, बैडमिंटन, कुश्ती एवं एथलेटिक्स आदि विधाओं में प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएगी ।उन्होंने युवाओं से आहवान किया कि वे प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए युवा साथी पोर्टल पर ऑनलाईन आवेदन कर अपना पंजीकरण करायें।

17 अक्टूबर को रोजगार मेले का आयोजन

सहारनपुर। क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय द्वारा 17 अक्टूबर को एक रोजगार मेले का आयोजन क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय परिसर में किया जाएगा। रोजगार मेले में निजी क्षेत्र की लगभग पांच कम्पनियां प्रतिभाग करेंगी। सहायक निदेशक सेवायोजन अनिल कुमार गौतम ने जानकारी देते हुए बताया अभ्यर्थी जो 10वीं, 12वीं, आईटीआई, स्नातक इत्यादि पास हो वह रोजगार मेले में भाग ले सकते है।

स्वच्छ प्रतियोगिता का आयोजन

सहारनपुर। भारतीय रेलवे द्वारा 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया जायेगा। इसी क्रम में आज 13 अक्टूबर सहारनपुर रेलवे स्टेशन पर स्वच्छ प्रतियोगिता कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।कार्यक्रम के अंतर्गत स्टेशन पर कार्यरत सफाई मित्रों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गये। प्रशस्ति पत्र का वितरण स्टेशन अधीक्षक अनिल कुमार त्यागी द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक प्रदीप कुमार शर्मा, सुमित कुमार, राम सहाय यादव, डिप्टी एसएस हरीश गुजराल एवं सीटीआई लाइन जी. एस. विद्यार्थी विशेष रूप से उपस्थित रहे ।इस अवसर पर स्टेशन अधीक्षक अनिल त्यागी ने स्वच्छता के प्रति सभी कर्मचारियों को जागरूक रहने एवं यात्रियों में भी स्वच्छताके प्रति जिम्मेदारी का भाव जगाने का आान किया। उन्होंने कहा कि स्वच्छ रेलवे स्टेशन न केवल यात्रियों को बेहतर सुविधा प्रदान करता है, बल्कि एक स्वच्छ भारत के निर्माण में भी अहम भूमिका निभाता है।

दुबई भेजने के नाम पर ठगे सवा छह लाख

मुजफ्फरनगर। परदेश में नौकरी का सपना देखने वाले छह बेरोजगार युवकों के अरमान उस समय चकनाचूर हो गए, जब उन्हें एयरपोर्ट पर पता चला कि उनके टिकट और वीजा फर्जी हैं। शाहपुर क्षेत्र के सांझक निवासी एक ठग ने उन्हें दुबई भेजने का झांसा देकर सवा छह लाख रुपये की ठगी कर डाली। सोमवार को सभी पीड़ित युवकों ने एसपी देहात आदित्य बंसल से मिलकर पूरे प्रकरण की शिकायत की। हरिद्वार जिले के लंढौरा निवासी मुकर्रम और अकरम, तथा घिस्सूपुरा के नवाब और परवेज ने बताया कि कुछ माह पूर्व सांझक निवासी एक व्यक्ति ने उन्हें दुबई में नौकरी दिलाने का लालच दिया था। उसने प्रति व्यक्ति 1.25 लाख रुपये की मांग की। भरोसा जताते हुए युवकों ने 6 लाख 25 हजार रुपये नकद और ऑनलाइन भुगतान कर दिए। सितंबर में रवानगी की तारीख तय की गई थी। आरोपी ने युवकों को दिल्ली एयरपोर्ट तक पहुंचाया और उन्हें टिकट व वीजा भी थमाया, लेकिन जब चेकिंग के दौरान दस्तावेज जांचे गए, तो वे पूरी तरह जाली निकले। इसी बीच आरोपी मोबाइल बंद कर फरार हो गया ।पीड़ितों ने बताया कि अब आरोपी न तो फोन उठा रहा है और न ही सामने आ रहा है। उन्होंने ठग के खिलाफ सख्त कार्रवाई और रकम वापस दिलाने की मांग की है।

नई योजनाओं से मुजफ्फरनगर के विकास को मिलेगी नई दिशा

- पालिका बोर्ड ने 80 करोड़ की योजनाओं पर लगाई मुहर

पायनियर समाचार सेवा। मुजफ्फरनगर

शहर के सर्वांगीण विकास को नई गति देने के लिए नगर पालिका परिषद मुजफ्फरनगर ने सोमवार को एक ऐतिहासिक कदम उठाया। पालिका अध्यक्ष मीनाक्षी स्वरूप की अध्यक्षता में टाउन हॉल सभागार में हुई बोर्ड बैठक में लगभग 80 करोड़ रुपये की योजनाओं को सर्वसम्मति से मंजूरी दी गई। बैठक में 128 प्रस्तावों वाला विकास एजेंडा पारित किया गया, जिसमें शहर की 250 नई सड़कों का निर्माण, 3000 स्ट्रीट लाइट्स की स्थापना, पेयजल सुधार, नालियों का निर्माण, और सौंदर्यीकरण के कार्य शामिल हैं। पालिका अध्यक्ष मीनाक्षी स्वरूप ने बताया कि लगभग 50 करोड़ रुपये की राशि से शहर के 55 वार्डों में सड़क और नाली निर्माण, तथा अन्य बुनियादी ढांचे के विकास के कार्य किए जाएंगे, जबकि 30 करोड़ रुपये की राशि पेयजल, प्रकाश व्यवस्था और कर्मचारी कल्याण योजनाओं पर व्यय होगी। पालिका की योजना के तहत शहर की प्रमुख सड़कों पर हाईमास्ट, सेमी हाईमास्ट और फैंसी लाइटें लगाई जाएंगी। पेयजल आपूर्ति को बेहतर बनाने के लिए नए नलकूप और पाइपलाइन डाली जाएंगी। साथ ही, भोपा रोड से विश्वकर्मा चौक तक नाला निर्माण और कलक्ट्रेट पार्किंग स्थल पर इंटरलॉकिंग टाइल्स का कार्य भी कराया जाएगा। पालिका बोर्ड ने सीमा विस्तार के बाद प्रशासनिक पुनर्गठन को भी मंजूरी दी है। अब 8 हल्कों के स्थान पर 12 हल्के बनाए जाएंगे ताकि कर्मचारियों का कार्यभार कम हो और नागरिकों को सेवाएं अधिक सुगमता से मिल सकें। इसके अलावा, अचल संपत्ति नामांतरण की 650 लंबित पत्रावलियों का शीघ्र निस्तारण कराने का निर्णय भी लिया गया। पालिका की इस बैठक में लाइट खरीद का प्रस्ताव सबसे अहम रहा, जिसके पारित होते ही शहर की गलियां और सड़कें जल्द ही जगमग रोशनी से नहाएंगी।

> बोर्ड ने सर्वसम्मति से शहर के चहुंमुखी विकास के लिए 80 करोड़ रुपये का एजेंडा पारित किया है। यह योजना न केवल वर्तमान जरूरतों को पूरा करेगी, बल्कि भविष्य की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखकर बनाई गई है। पालिका प्रशासन ने धरातल पर कार्य शुरू कर दिया है।
> **मीनाक्षी स्वरूप, पालिकाध्यक्ष नगर पालिका परिषद, मुजफ्फरनगर।**

पीएम मोदी से वार्ता के बाद शहद उद्यमी दंपति का कस्बे में स्वागत

पायनियर समाचार सेवा। नागल

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शहद उद्यमी दंपति मनोज उपाध्याय उसकी पत्नी उषा उपाध्याय संवाद करने पर कस्बा नागल में पहुंचने पर उनका स्वागत किया गया। नेशनल बी बोर्ड के आजीवन सदस्य मनोज उपाध्याय ने बताया कि आईएआरआई कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से सीधे संवाद करना मेरे व जनपद के लिए गौरव की बात है। उन्होंने बताया कि पीएम मोदी को अपने जीवन के शहद क्षेत्र में लगभग 25 वर्षो को अनुभव साझा किया। साथ ही उनकी पत्नी ऊषा उपाध्याय ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपनी कंपनी से बना शहद और उससे संबंधित कुछ वस्तुएं भेट की। इस दौरान केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, कृषि राज्यमंत्री भागीरथ चौधरी भी साथ रहे। स्वागत में रजनी राणा, राकेश सहल, नांगल मंडल अध्यक्ष हरीश त्यागी, अरुण त्यागी, देवांग चौधरी आदि के साथ-साथ क्षेत्रीय विधायक विधायक देवेंद्र निम, जिला पंचायत अध्यक्ष चौधरी मांगेराम वर्मा, ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि रविंद्र चौधरी, पूर्वक ब्लॉक प्रमुख मास्टर विजेंद्र सिंह सहित तमाम ने बधाई दी।

विकास सुनिश्चित करने वाले बनाएं प्रोजेक्ट : चेयरमैन

पायनियर समाचार सेवा। नकुड़

के.एल.जी.एम इंटर कॉलेज में विकसित भारत बिल्डथोन कार्यक्रम के अंतर्गत छात्र छात्राओं ने विभिन्न प्रोजेक्ट पर विचार विमर्श किया तथा छात्र छात्राओं को मॉडल आदि के निर्माण के लिए विस्तृत दिशा निर्देश दिए गये। कार्यक्रम का उद्घाटन पालिका अध्यक्ष शिवकुमार गुप्ता ने और समापन जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ अरविंद कुमार पाठक ने किया। इस अवसर पर जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ. अरविंद कुमार पाठक ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि विद्यालय के बच्चे जिस प्रकार से सभी कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर प्रतिभाग करते हैं उसी प्रकार विकसित भारत बिल्डथोन में भी प्रतिभाग करें। छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए पालिका अध्यक्ष शिवकुमार गुप्ता ने आान किया कि वे देश के विकास को सुनिश्चित करने वाले प्रोजेक्ट बनाएं। प्रधानाचार्य कैप्टन गौरव मिश्रा ने सभी शिक्षकों का आभार जताया, कार्यक्रम में प्रबंध समिति सदस्य विजेंद्र शर्मा, भारत धीमान,स्वराज वत्स, अनुज कुमार, अरुण कुमार, सलीम मोहम्मद आदि उपस्थित रहे।

खनन ठेकेदारों पर अवैध खनन का आरोप

शामली। विकास खंड ऊन के ग्राम मंसूरा की ग्राम प्रधान शहनाज ने जिलाधिकारी शामली अरविन्द सिंह चौहान को पत्र भेजकर खनन ठेकेदारों पर अवैध खनन और प्रशासनिक मिलीभगत के गंभीर आरोप लगाए हैं। प्रधान शहनाज के अनुसार,खनन ठेकेदारों के रेत से भरे डम्परों का रास्ता डायवर्ट कर बांध से होते हुए ग्राम बिडौली की ओर भेजने के आदेश पारित किए गए थे, लेकिन उक्त आदेश का दुरुपयोग करते हुए ठेकेदारों द्वारा यमुना नदी की धारा को प्रभावित कर अवैध खनन किया जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि खनन माफिया पोकलेन मशीनों से यमुना नदी का सीना चीरकर दिन-रात रेत निकाल रहे हैं,जिससे नदी का प्राकृतिक प्रवाह बाधित हो रहा है और डूबने जैसी घटनाएं बढ़ रही हैं। वहीं, ओवरलोड डम्पर आबादी वाले क्षेत्रों से होकर धड़ल्ले से गुजर रहे हैं, जिससे लोगों में भय व्याप्त है। प्रधान ने बताया कि पूर्व में भी ग्राम मंसूरा के प्रधान पति के भाई की मौत डम्पर की चपेट में आने से हो चुकी है।

शामली व कैराना पुलिस ने बड़ी संख्या में बरामद किए पटाखे

- कोतवाली पुलिस ने दो आरोपितों को किया गिरफ्तार, तमंचे, कारतूस व गाडी बरामद

पायनियर समाचार सेवा। शामली

दीपावली नजदीक आने के साथ ही अवैध पटाखों का कारोबार करने वाले भी सक्रिय हो गए हैं। जनपद पुलिस अवैध पटाखों का भंडारण व कारोबार करने वालों पर अंकुश लगाने के लिए अभियान चला रही है। सोमवार को शामली व कैराना पुलिस ने अलग-अलग स्थानों से बडी संख्या में अवैध पटाखे बरामद करते हुए तीन आरोपितों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपितों के कब्जे से तमंचे, कारतूस, छुरा व गाडी भी बरामद की है। जानकारी के अनुसार दीपावली का त्यौहार नजदीक आते ही जिला व पुलिस प्रशासन भी अवैध पटाखों के भंडारण व कारोबार करने वालों के खिलाफ सख्त हो गया है।एसपी के निर्देश पर पुलिस अवैध पटाखों की धर पकड़ के लिए अभियान भी चला रही है। शहर कोतवाली पुलिस ने चेकिंग के दौरान एक ईको गाडी से 3 कार्टून, 4 बैग व 2 बोरियों में भरी बडी संख्या में पटाखे बरामद करते हुए कार सवार दो लोगों को भी गिरफ्तार किया है। कोतवाली प्रभारी सचिन शर्मा ने बताया कि पुलिस ने पकड़े गए आरोपितों के पास से तमंचा, कारतूस, छुरा भी बरामद किया है। पूछताछ में आरोपितों ने अपने नाम अशोक पुत्र रामचंद्र व देवेन्द्र सिंह पुत्र गुरजीत सिंह निवासी विजय विहार कालोनी रोहिणी दिल्ली बताए है। पुलिस ने आरोपितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। वहीं कैराना पुलिस ने एक सूचना के बाद गांव रामडा में बंद पडी एक फैक्टरी में अवैध रूप से पटाखों का भंडारण की सूचना पर छापेमारी कर वहां मौजूद एक आरोपित शाहरुख पुत्र जेहरूदीन निवासी कप्तानगर जनपद पानीपत हरियाणा को दबोच लिया।

रतनपुरी थाने के सामने भीषण सड़क हादसा

खतौली। रविवार दोपहर रतनपुरी थाना क्षेत्र में हुए दर्दनाक हादसे ने क्षेत्र में सनसनी फैला दी। थाने के ठीक सामने तेज रफ्तार ट्रक ने एक बाइक को जोरदार टक्कर मार दी।हादसे में बाइक सवार एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरा युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। जानकारी के अनुसार, थाना कसेरवा क्षेत्र के गांव शाहपुर निवासी दाऊद पुत्र नसीम अपने साथी अनवर के साथ बाइक से फुलत जा रहा था। जैसे ही दोनों रतनपुरी थाने के सामने पहुंचे, पीछे से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों युवक सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना मिलते ही रतनपुरी पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल भिजवाया, जहां चिकित्सकों ने दाऊद को मृत घोषित कर दिया। हादसे की खबर मिलते ही मृतक के घर पर मातम पसर गया।मृतक के पिता नसीम पुत्र सुबेदिन निवासी शाहपुर, थाना कसेरवा ने ट्रक चालक के खिलाफ तहरीर दी है और सख्त कार्रवाई की मांग की है।पुलिस ने मामला दर्ज कर फरार ट्रक चालक की तलाश शुरू कर दी है।

फर्जी दस्तावेजों से सरकारी यूरिया की कालाबाजारी का भंडाफोड़

पायनियर समाचार सेवा। मुजफ्फरनगर

पुलिस और कृषि विभाग की संयुक्त कार्रवाई में सरकारी यूरिया की कालाबाजारी करने वाले गिरोह का पदार्फाश हुआ है। सिखेड़ा पुलिस ने चेकिंग के दौरान एक पिकअप वाहन से 80 बैग यूरिया बरामद कर तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से मिले दस्तावेज फर्जी पाए गए हैं। पकड़े गए आरोपियों के नाम रमन पांडेय निवासी नया गांव, उमंग वशिष्ठ निवासी लक्ष्मण विहार, और इंतजार निवासी किदवईनगर थाना खालापार बताए गए हैं।पुलिस ने तीनों के खिलाफ जालसाजी और आवश्यक वस्तु अधिनियम की धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संजय कुमार वर्मा ने बताया कि पुलिस-प्रशासन को सूचना मिली थी कि कुछ लोग फर्जी कागजात के आधार पर सरकारी यूरिया की अवैध बिक्री कर रहे हैं। इस पर कृषि विभाग और सिखेड़ा पुलिस की संयुक्त टीम गठित की गई, जिसने सीओ मंडी राजू साव के नेतृत्व में कई घंटे की खोजबीन के बाद वाहन को पकड़ा। जांच में सामने आया कि आरोपी फर्जी दस्तावेजों से यूरिया को श्रीराम बायोटेक इंडस्ट्रीज ले जाते थे और बाद में उसे ऊंचे दामों पर खुले बाजार में बेचते थे, जिससे किसानों को भारी नुकसान होता था। कार्रवाई के दौरान एसपी देहात आदित्य बंसल और सीओ मंडी राजू साव भी मौजूद रहे।

दहेज के लिए विवाहिता को बेरहमी से पीटा

कैराना। क्षेत्र की एक विवाहिता ने अपने पति और ससुरालियों पर दहेज के लिए उत्पीड़न और हत्या के प्रयास का गंभीर आरोप लगाया है। पीड़िता की हालत नाजुक बताई जा रही है। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।जानकारी के अनुसार, नगर के मोहल्ला आलकला निवासी सोनिया पत्नी अश्वनी कुमार ने कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसकी शादी 16 जून 2020 को अश्वनी कुमार पुत्र दाताराम निवासी चौहानपुरी लल्लापुरा थाना टीपी नगर जनपद मेरठ के साथ धूमधाम से हुई थी। शादी में उसकी विधवा माता ने अपनी हैसियत से अधिक दहेज दिया था,जिसमें दो लाख रुपये नकद, 1.14 लाख रुपये की मोटरसाइकिल, एक घड़ी और करीब एक लाख रुपये के सोने-चांदी के जेवरात शामिल थे। पीड़िता ने आरोप लगाया कि शादी के कुछ समय बाद ही ससुराल वाले अतिरिक्त दहेज की मांग को लेकर उसे प्रताड़ित करने लगे। बीते दिनों ससुराल वालों ने उसे बंधक बनाकर भूखा-प्यासा रखा और लगातार मारपीट की।

शुकतीर्थ के निर्माण कार्यों में लापरवाही बर्दाश्त नहीं : मिश्रा

पायनियर समाचार सेवा। मुजफ्फरनगर

- जिलाधिकारी ने जल निगम अधिकारियों को लगाई फटकार

जनपद के शुकतीर्थ को एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने और दूर-दराज से आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा सुनिश्चित करने की योजना शासन स्तर पर पूरी तरह तैयार की जा चुकी है। ऐसे में अगर निर्माण कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही सामने आती है, तो अफसरों का भड़क जाना स्वाभाविक है।सोमवार को इस बात का उदाहरण तब देखने को मिला जब जल निगम के सी एंड डीएस विभाग के अधिकारी जिलाधिकारी उमेश मिश्रा से मिलने पहुंचे। इस दौरान जिलाधिकारी ने अधिकारियों को न केवल फटकार लगाई बल्कि घाट पर टूटे हुए पत्थरों का हवाला देते हुए जमकर लताड़ भी पिलाई। बताया गया है कि जल निगम द्वारा ही नक्षत्र वाटिका के पास एक नए घाट का निर्माण कराया जा रहा है। इस संबंध में अधिकारियों ने जिलाधिकारी से चर्चा करने का प्रयास किया, लेकिन जिलाधिकारी उमेश मिश्रा ने साफ तौर पर कहा कि शुकतीर्थ में चल रहे विकास कार्यों में किसी भी तरह की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जिलाधिकारी ने चेताया कि यदि निर्माण कार्य में किसी भी प्रकार की हीला-हवाली या कमी पाई गई, तो संबंधित अधिकारी का भुगतान रोक दिया जाएगा और उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि शुकतीर्थ का विकास उच्च गुणवत्ता और समयबद्ध तरीके से होना चाहिए, ताकि यह पर्यटन स्थल के रूप में पूरी तरह सफल हो सके।

मिशन शक्ति अभियानः सीओ सिटी ने पुलिस बल के साथ शहर में किया पैदल मार्च

महिलाओं, बालिकाओं व व्यापारियों को दी योजनाओं व हेल्पलाइनों की जानकारी

- थानाभवन सीओ ने भी कस्बे में किया पैदल मार्च, लोगों को किया जागरूक

पायनियर समाचार सेवा। शामली

मिशन शक्ति अभियान को लेकर जनपद पुलिस अपने-अपने क्षेत्रों में पैदल गश्त कर महिलाओं, युवतियों, व्यापारियों को जहां सुरक्षा का अहसास करा रही है वहीं सरकार की हेल्पलाइनों के संबंध में जागरूक कर रही है। रविवार की देर रात सीओ सिटी व सीओ थानाभवन ने अपने-अपने क्षेत्रों में पुलिस के साथ पैदल मार्च कर लोगों को जागरूक किया। जानकारी के अनुसार शासन के निर्देश पर शामली जनपद में भी मिशन शक्ति अभियान को लेकर महिलाओं व युवतियों को जागरूक किया जा रहा है वहीं कानून व्यवस्था को चुस्त दुरूस्त रखने के लिए पैदल मार्च भी किया जा रहा है। रविवार की देर रात सीओ सिटी अमरदीप मौर्य ने कोतवाली पुलिस के साथ शहर के विभिन्न स्थानों, बाजारों, धार्मिक स्थलों व सार्वजनिक स्थानों पर पैदल मार्च किया तथा महिलाओं, बालिकाओं को मिशन शक्ति अभियान के तहत सरकार की योजनाओं व हेल्पलाइनों के संबंध में जानकारी दी। सीओ सिटी ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य जनपद में अपराधों की रोकथाम, महिला सुरक्षा और आमजन में जागरूकता बढ़ाना है। पैदल गश्त के दौरान पुलिसकर्मियों ने नागरिकों, दुकानदारों और छात्र-छात्राओं को मिशन शक्ति अभियान के उद्देश्यों और सुरक्षा उपायों के बारे में जानकारी दी। वहीं सीओ थानाभवन ने भी देर रात कस्बे में पुलिस बल के साथ पैदल मार्च करते हुए महिलाओं, बलिकाओं व व्यापारियों से वार्ता कर उन्हें सुरक्षा का अहसास कराया, साथ ही महिला सुरक्षा ऐप्स, हेल्पलाइन नंबर और स्थानीय पुलिस सहायता के बारे में जानकारी दी गई,ताकि कोई भी नागरिक आपात स्थिति में तुरंत सहायता प्राप्त कर सके।

छात्रा संस्कृति बनी एक दिन की चिकित्साधीक्षक

देवबंद। राजकीय कन्या इंटर कालेज की कक्षा 11 की छात्रा संस्कृति को मिशन शक्ति के तहत एक दिन का चिकित्साधीक्षक बनाया गया। छात्रा ने पद संभालने के बाद अस्पताल की व्यवस्थाओं का जायजा लिया और उपस्थिति पंजिका एवं भ्रमण पंजिका को देखा साथ ही कर्मचारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। सी.एच.सी अधीक्षक डा. रियंका चौधरी ने कन्या इंटर कालेज की छात्रा संस्कृति को औपचारिक रूप से एक दिन का सीएचसी का कार्यभार सौंपा। जिसके बाद छात्रा ने अस्पताल की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इससे बेटियों को समाज और प्रशासन की कार्यप्रणाली को समझने के साथ ही अपने विचार रखने का मंच मिल रहा है। ब्लाक कार्यक्रम प्रबंधक देवेंद्र कुमार, डा. आशुतोष, डा. राहुल कुमार, डा. कृतिका, मोतीलाल, भूप सिंह, पूनम त्यागी आदि मौजूद रहे।

ग्राउंड जीरो पर विवादों को हल करने के तौर तरीके सीख रही आईएएस अपराजिता

- असिस्टेंट मजिस्ट्रेट ने डोल बंदी विवाद का किया स्थलीय निरीक्षण
- भ्रमण के दौरान पैमाइश और डोल बंदी की प्रक्रिया को समझा

पायनियर समाचार सेवा। मुजफ्फरनगर

किसी भी मेधावी छात्र-छात्रा के लिए सिविल सेवा में आईएएस बनना एक बड़ा सपना होता है, और इसके लिए मेहनत और समर्पण दोनों की आवश्यकता होती है। आईएएस बनने के बाद और नियुक्ति मिलने से पहले प्रशिक्षण के दौरान जमीनी अनुभव हासिल करना बेहद महत्वपूर्ण होता है। इस कड़ी में जिले में असिस्टेंट मजिस्ट्रेट के पद पर तैनात ट्रेनी आईएएस अपराजिता आर्यन क्षेत्र भ्रमण कर प्रशासनिक कार्यों का अनुभव ले रही हैं।

सोमवार को अपराजिता आर्यन गांव शेरनगर क्षेत्र में चल रहे डोल बंदी के विवाद का जमीनी सच जानने के लिए तहसील सदर के कर्मचारियों के साथ मौके पर पहुंचीं। इस दौरान उन्होंने खेतों में जाकर पैमाइश की प्रक्रिया को देखा और समझा कि डोल बंदी किस तरह से अंजाम दी जाती है। उन्होंने यह भी जाना कि इस तरह के विवाद प्रशासनिक स्तर पर किस तरह हल किए जाते हैं और इसमें अधिकारी किस प्रकार की भूमिका निभाते हैं। बताते चलें कि अपराजिता आर्यन इससे पहले भी विभिन्न क्षेत्रों में जाकर अपने प्रशासनिक अनुभव को बढ़ा चुकी हैं।